अध्याय 14

यीशु को अपनी मृत्यु का पहले से पता होना

दो षड्यन्त्र और यीशु का अभिषेक किया जाना (14:1-11)

यीशु की हत्या का षड्यन्त्र (14:1, 2)[1]

[1]दो दिन के बाद फसह और अखमीरी रोटी का पर्व होनेवाला था। प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़ कर मार डालें; [2]परन्तु कहते थे, ''पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मचे।''

आयतें 1, 2. मरकुस के अनुसार फसह से **दो दिन** पहले **प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि** [यीशु को] **कैसे छल से पकड़ कर मार डालें।** यह यीशु की सेवकाई के अंतिम सप्ताह का या तो मंगलवार था या बुधवार था।

फसह (πάσχα, *pascha*) शुक्रवार को होगा, जो कि यहूदी गणना के अनुसार गुरुवार सायं छह बजे से आरम्भ हुआ होगा। फसह यहूदियों का सबसे बड़ा पर्व था। यह सात दिन तक चलने वाले **अखमीरी रोटी** के पर्व के साथ जुड़ा था (देखें लूका 22:1)। पस्का के भोज और उसके बाद आने वाले अखमीरी रोटी के सात दिनों को कई बार ''फसह'' कहा जाता था।[2]

फसह का मेमना धार्मिक कैलेंडर के पहले महीने निसान की चौदह तारीख़ को बलिदान किया जाता था। यहूदी कैलेंडर पर सप्ताह के दिन में अंतर होगा, इसलिए तीसरी सदी के लगभग रविवार के दिन यीशु के जी उठने के महत्व के कारण फसह के लिए तिथि प्रतिवर्ष गुरुवार के दिन को ठहरा दी गई। पवित्र शास्त्र से तर्कसंगत ढंग से यह साबित किया जा सकता है कि यीशु शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया।[3]

यरूशलेम में बड़ी संख्या में यहूदी फसह को मनाते थे। जोसेफ़स ने लिखा है कि 65 ई. के लगभग फलस्तीन के हाकिम सेस्टियुस को नीरो को फसह के महत्व को समझाने में कुछ कठिनाई आई। अपनी बात को समझाने के लिए, उसने फसह के दिन काटे जाने वाले मेमनों की गिनती की और यह गणना करने के लिए कि फसह में भाग लेने वाली ''असंख्य भीड़'' में कितने लोग थे, प्रति मेमना दस लोगों का अनुमान लगाया और वह 27,00,200 की संख्या पर पहुंचा।[4] यदि उस समय यरूशलेम में इतने अधिक यहूदी थे, तो वास्तव में थोड़े ही समय में सब यहूदियों को यीशु के क्रूसारोहण का पता चल गया होगा क्योंकि दूर दूर से यरूशलेम में आने वाले लोग अब अपने-अपने घरो को लौट गए थे। यीशु के जी उठने का समाचार लोगों ने बड़ी जल्दी से फैला दिया होगा, बाद में उन्होंने चाहे स्वयं यीशु पर विश्वास किया या नहीं।

फसह इस्राएलियों के मिस्र की दासता से छूटने और यहोवा के उन घरों के ऊपर से गुज़रने

को याद दिलाता था जिनकी चौखटों पर मिस्र के पहलौठे मारे जाने के समय मेमने का लहू लगा हुआ था (निर्गमन 12:13, 23, 27)। इस पूरे पर्व के लिए हर, विश्वासी और स्वस्थ यहूदी पुरुष से उसमें उपस्थित होने की उम्मीद की जाती थी (व्यव. 16:16)। रब्बियों ने इस शर्त को कम कर दिया था कि केवल यरूशलेम के पन्द्रह मील के दायरे में रहने वालों को ही भाग लेना आवश्यक है।[5] परन्तु जैसे साल बीतते गए यरूशलेम में पर्वों भाग लेने वालों की संख्या बढ़ती गई।

परन्तु कहते थे, ''पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मचे।'' इन पर्वों पर भीड़ के नियन्त्रण करना, विशेषकर गलील के यहूदियों की भीड़ को, धार्मिक और सरकारी अधिकारियों के लिए चिंता की बात ही रहती थी। इसलिए ''प्रधान याजकों और शास्त्रियों'' और यरूशलेम के प्राचीनों (14:1; देखें मत्ती 26:3) ने समारोहों के बीत जाने तक यीशु को खत्म करने को टालने का निर्णय लिया, क्योंकि तब लोग कम होने थे जिन्हें नियन्त्रित किया जा सकता था। ''प्रधान याजकों'' में महायाजक, मन्दिर का सरदार और याजकों की प्रतिदिन और साप्ताहिक ड्यूटियां लगाने वाले प्रबन्धक शामिल थे। फरीसी मसीह को खत्म करने के षड्यन्त्र पर काफ़ी समय से काम कर रहे थे (3:6; मत्ती 12:14)। योजना बनाने वालों में लगभग सारा पुरोहित तन्त्र या यहूदी जाति का उच्च याजक वर्ग था। उनकी दुष्ट योजना प्रधान याजक कायफ़ा के आंगन में अंजाम दी गई (मत्ती 26:3)।

उनके यीशु का विरोध का कारण उसकी अत्यधिक प्रसिद्धि और उनके प्रश्नों के पूरे उत्तर थे जिनसे उनके अधिकार और प्रतिष्ठा संकट में पड़ गए थे। जब उसने उनके हर प्रश्न का उत्तर दे दिया और वे उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाए, तो वे परेशान होकर क्रोधित हो गए। अब लोग इन अधिकारियों को परमेश्वर की व्यवस्था के विशेषज्ञों के रूप में नहीं देखते थे, जिस कारण वे दिन प्रतिदिन यीशु से ईर्ष्या करने लगे थे (मत्ती 27:18; मरकुस 15:10)।

यीशु को मार डालने की इच्छा के उनके इरादों में और बातें भी जोड़ी जा सकती हैं। बेशक लाज़र को जिलाने की बात भी थी; क्योंकि उसके जी उठने के कारण फरीसी एक-दूसरे से कहने लगे थे, ''देखो, इससे बात नहीं बन रही; देखो सारा संसार उसके पीछे हो लिया है!'' (यूहन्ना 12:19; NIV)। इसके अलावा यीशु के विजयी प्रवेश ने भी अगुओं में अत्यधिक नाराज़गी और ईर्ष्या बढ़ा दी। इसके अलावा उसके कहे गए दृष्टांत साफ़ तौर पर उनके मसीहा को नकारने और यरूशलेम के आने वाले विनाश को दिखाते थे। दो दृष्टांत जिन पर हिंसक प्रतिक्रियाएं हुईं, वे राजा के भोज के निमन्त्रण को ठुकराने (मत्ती 22:2-14) और दाख की बारी के स्वामी के उसके पुत्र को मार डालने वालों पर क्रोध के बारे में थे (मरकुस 12:1-12)। निश्चय ही मत्ती 23:1-33 में उनके कपट के लिए यीशु की डांट और उसके मन्दिर को शुद्ध करने से परमेश्वर के पवित्र स्थान की शुद्धता के लिए उनसे बढ़कर जोश को दिखाया गया था (मरकुस 11:15-18, 27, 28)। इसके अलावा वे परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसके आत्म-विश्वास और अधिकार पर घबरा गए।

आश्चर्य की बात है कि इन धार्मिक हाकिमों की योजनाओं से अनजाने में परमेश्वर की योजना पूरी हुई। प्रेरितों 2:23 कहता है कि मसीह को ''परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया।'' उनकी रुकी हुई योजनाएं यहूदा के उनके पास प्रस्ताव लेकर आते ही अंजाम दे दी गईं। उनकी स्कीमों के बावजूद, परमेश्वर खारिज कर रहा था ताकि उसका

मेमना संसार के पापों के लिए वास्तविक फसह के मेमने के रूप में काटा जाए (यूहन्ना 1:29)।

बैतनिय्याह में यीशु का अभिषेक किया जाना (14:3-9)[6]

[3]जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। [4]परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, ''इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया? [5]क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था।'' और वे उसको झिड़कने लगे। [6]यीशु ने कहा, ''उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। [7]कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा। [8]जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मलाकी है। [9]मैं तुम से सच कहता हूँ कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।''

आयत 3. यीशु **बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था।** बैतनिय्याह में भोजन का सही सही दिन बता पाना कठिन है। यूहन्ना 12:1 इसे फसह के छह दिन पहले या शनिवार रात को बताता है।

इस विवरण को लूका 7:36-50 वाली ऐसी ही घटना से न उलझाया जाए। हाल ही में जिलाए गए लाज़र की बहन मरियम वही स्त्री थी जिसने मरकुस 14 में यीशु का अभिषेक किया था (देखें यूहन्ना 12:3)। लूका 7 वाली घटना में फरीसी के घर में वह स्त्री उस समय ''एक पापी'' थी (लूका 7:37)। मत्ती 26:13 और मरकुस 14:9 की तरह लूका में ऐसी कोई बात नहीं है कि इस तोहफे की कहानी संसार में हर जगह जहां सुसमाचार सुनाया जाना था, बताई जानी थी।

मत्ती 26:6 और मरकुस 14:3 दोनों यह बताते हैं कि दावत ''शमौन कोढ़ी'' के घर में थी। क्या यह शमौन वास्तव में कोढ़ी था। अवश्य ही यह कोढ़ से चंगा हो गया आदमी था। यदि वह चंगा न हुआ होता तो क्या यीशु ने उसके घर में जाना था। (देखें लैव्य. 13:45, 46.) ऐसा लगता है कि शमौन इस घटना से पहले किसी समय कोढ़ से शुद्ध हो चुका था; शायद रोग के कारण उसने अपने नाम के साथ ''कोढ़ी'' लगाना नहीं छोड़ा था। इस समय इस घर को शुद्ध माना गया होगा। चंगाई पाए हुए कोढ़ी के रूप में शमौन के घर में अतिथि आए होंगे और ऐसी दावतें चल रही होंगी।

सम्भवतया वह विवाहित नहीं था; शायद उसने इस बड़ी इकट्ठ के लिए प्रबन्ध करने के लिए लाज़र, मरियम और मारथा जैसे अपने निकट मित्रों को बुलाया हुआ था (देखें यूहन्ना 12:1-3)। अतिथियों में अन्य चेलों तथा प्रिय मित्रों के साथ-साथ यीशु और बारह प्रेरित भी थे। नगर के लोगों को जब पता चला कि यीशु वहां है तो वे उसे देखने आ गए। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे लाज़र को देखना चाहते थे, जिसे यीशु ने मुर्दों में से जिलाया था (यूहन्ना 12:9)।

भोजन का उद्देश्य शमौन को चंगा करने और लाज़र को जिलाने के लिए उसका आभार व्यक्त करना हो सकता है। लाज़र मरे हुओं में से हाल ही में जिलाया गया था, इस कारण उसे भी सम्मानित अतिथि माना गया (यूहन्ना 12:2)। लाज़र एक प्रसिद्ध आश्चयकर्म का प्रमाण था इसलिए यहूदी अगुओं द्वारा उसे भी मृत्यु के लिए चिह्नित किया गया था। वह यीशु की सामर्थ की जीवित गवाही था (यूहन्ना 12:9-11), और धार्मिक अगुओं को पता था कि जब तक वे इसका कुछ करते नहीं, तब तक यीशु के अनुयायियों की संख्या बढ़ती रहनी थी। जो कुछ यीशु ने शमौन और लाज़र के लिए किया था, वह उसके परमेश्वर होने की पुष्टि के लिए आवश्यक प्रमाण था।

एक स्त्री जिसका नाम यूहन्ना ने मरियम बताया है (यूहन्ना 12:3), कमरे में **संगमरमर के पात्र** की एक महंगी शीशी ले आई जो जिस **में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र** था।[7] सुसमाचार के विवरणों में तीन बार मरियम का नाम दिया गया है, और हर बार वह यीशु के कदमों में होती है। **उसने पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला।** शीशी का मुंह छोटा होने के कारण इत्र को जल्दी-जल्दी उण्डेलना कठिन हो रहा होगा और वह चाहती होगी कि वह ध्यान भंग करने वाला अपना काम जल्दी-जल्दी खत्म कर ले। साफ़ तौर पर यह योजनाबद्ध कार्यवाही को करने के लिए कुछ साहस आवश्यक थी। उसे यह चिंता भी होगी कि पता यीशु इस तोहफे को स्वीकार करेगा या नहीं।

जब उसने शीशी को तोड़कर इत्र यीशु के सिर पर डाला, तो ''इत्र की सुगन्ध से घर सुगन्धित हो गया'' (यूहन्ना 12:3)। यह इत्र ''जटामांसी'' (νάρδος, *nardos*) का था जो तेल मिले भारत के पौधों से बनता था। यह कम से कम बारह औंस था।[8] यह बहुत महंगा इत्र था।[9]

कुछ उत्सुक लोग चकित होते हैं कि प्रेम का यह कार्य रूमानी लगाव से प्रेरित था,[10] क्योंकि ऐसे इत्रों का इस्तेमाल आम तौर पर विवाहों के लिए किया जाता था। उदारता के इस स्त्री के कार्य को केवल प्रेम करने वाले मन ही समझ सकते हैं जो यीशु को अपने प्रभु के रूप में देखते हैं।

इस पर्व पर मरियम ही अकेली लगती है जिसे यह समझ थी कि यीशु शीघ्र मर जाने वाला है। यह केवल किसी ''स्त्री के अंतर ज्ञान'' से बढ़कर था। उसने यीशु के ''चले जाने'' के प्रकाशनों को इतने ध्यान से सुना था कि उसे वह समझ में आ गया जो दूसरों की समझ में नहीं आया (लूका 10:39)। प्रेरितों ने यीशु को कइ बार अपनी मृत्यु की बात करते हुए सुना था। उनके पूर्वाग्रही मनों में यह नहीं आया कि ऐसा हो सकता है। पतरस ने तो उसे ऐसी बात सोचने पर भी डांट दिया था (मरकुस 8:31-33)।

आयत 4. मरियम की दयालुता का दूसरे लोगों ने मज़ाक उड़ाया; **कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, ''इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया?''** यूहन्ना 12:4-6 हमें सूचित करता है कि इस महिला के काम की आलोचना सबसे पहले यहूदा ने की। उसकी नापसंदगी का कारण उसका लालची मन था जो और चंदा चाहता था ताकि वह चुरा सके। दूसरे लोग भी जल्दी से उसके साथ हो लिए क्योंकि सोचने के उनके ढंग के अनुसार यह अव्यावहारिक था। उदारता के इस कार्य को करने का विचार रखने के लिए इस स्त्री वाली सोच होनी आवश्यक थी।

हो सकता है कि यहूदा में धन का प्रबन्ध करने की अच्छे गुण हों, परन्तु इस महिला द्वारा

की जाने वाली अच्छाई की आलोचना करने के लिए उसमें कौन सी योग्यता थी? हो सकता है कि उसे लगा हो कि चंदा उसके हाथ में रहता है इसलिए यह निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी उसी की है कि सारा पैसा कहां खर्च किया जाए।[11] परन्तु हम जानते हैं कि जो कुछ थैली में होता था उस पर उसकी नज़र रहती थी और वह उसमें से कुछ निकाल लेता था (यूहन्ना 12:4-6)।

इस आयत वाले शब्द ''सत्यानाश'' (ἀπώλεια, *apōleia*) का अनुवाद यूहन्ना 17:12 में ''विनाश'' हुआ है। वहां पर यहूदा को ''विनाश का पुत्र'' कहा गया है जिसका अर्थ मूलतया ''बर्बादी का पुत्र'' है। इस शब्द से ध्यान में ''पूर्ण विनाश,'' ''तबाही,'' और ''अनन्त जीवन की हानि, अनन्त कष्ट'' आते हैं।[12] यहूदा ने अपने जीवन का ''सत्यानाश'' कर दिया और अपने आपको विनाश में बेच दिया। उसने '''पैसे बर्बाद' के लिए मरियम की आलोचना की, परन्तु उसने अपने पूरे जीवन को बर्बाद कर दिया!''[13]

आयत 5. यहूदा ने इस इत्र की कीमत **तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य** आंकी और विरोध जताते हुए कहा कि **इत्र ... बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था**। ''इत्र की उस शीशी को खरीदने के लिए एक साधारण मनुष्य के लगभग एक वर्ष के वेतन के बराबर होगा।''[14] प्रभु को पूरी तरह से समर्पित आदमी वह यह हिसाब नहीं लगाएगा कि उसके समर्पण की कीमत कितनी होगी।

यूहन्ना 12:3 के अनुसार मरियम ने भी उसके पांवों पर तेल मलने के बाद उन्हें अपने बालों से पोंछकर उसके प्रति अपने प्रेम के समर्पण को दिखाया। इस सुन्दर कार्य के बिल्कुल विपरीत धूर्त, बेईमान और धन का लोभी यहूदा था। उसका जवाब इसे भलाई और बुराई, सुन्दरता और कुरुपता, निस्वार्थ ढंग से देने और लोभ भरी कंजूसी की कहानी बनाते हुए उसका हिसाब बराबर कर देता है।

आयत 6. यीशु मरियम के आलोचकों के साथ हमारी कल्पना से अधिक कठोर था, शायद इसलिए क्योंकि उसे मालूम था कि यह सबक हर युग के लिए आवश्यक होना था। जिस स्पष्ट ढंग से उसने उस स्त्री के प्रेमभाव के लिए उसकी सराहना की, कभी भी भुलाया नहीं जाएगा। यीशु ने साफ़-साफ़ कहा, ''**उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो?**'' आलोचकों का मुंह बंद किया जाना आवश्यक है, नहीं तो वे बहुत से अच्छे कामों में हस्तक्षेप कर सकते हैं। आर. ए. कोल का कहना है, ''यह हमारे लिए कलीसिया के मामलों में अति निकट, सांसारिक सोच के हिसाब रखने से सावधान होने की चेतावनी है।''[15]

परमेश्वर के विशुद्ध पुत्र यीशु ने इस स्त्री को सबसे बड़ी शाबाशी देते हुए उसकी प्रशंसा की: ''**उस ने तो मेरे साथ भलाई की है।**'' यह अभिषेक वास्तव में ''भलाई'' का काम था। यूनानी भाषा के नये नियम में ''भलाई'' के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। एक तो ἀγαθός (*agathos*) है, जिसका अर्थ केवल ''भला'' है, परन्तु कई बार यह कठिन या कठोर शब्द हो सकता है। दूसरा शब्द καλός (*kalos*) है, जिसका अर्थ ''भला[ई]'' है, जो सुन्दर, मनोहर, और सुखद है। मरियम के काम के सम्बन्ध में यीशु ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया। निर्धनों की सहायता करना ''अच्छा'' है परन्तु उस काम में हमेशा वह सुन्दरता नहीं होती जो इस काम में थी। अपने धन का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा के लिए करते हुए, हमें पूछना चाहिए, ''सबसे अधिक भला कैसे हो सकता है?''

आयत 7. यीशु ने आगे कहा, ''**कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।**'' ज़रूरतमंदों की सहायता करने के अवसर बहुत से और बार-बार आते हैं, परन्तु यीशु को उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले आदर देने का अवसर थोड़ी देर के लिए केवल यही होना था। कंगालों की सहायता करने को टाला जा सकता था क्योंकि वे तो हर समय रहने थे और उनकी सहायता बाद में की जा सकती थी। यह सोचने में यीशु अति-यथार्थवादी था कि कुशलतापूर्वक खर्च करके आदर्श लोक स्थापित किया जा सकता है और गरीबी खत्म की जा सकती है।

आयत 8. यीशु ने कहा, ''**जो कुछ वह कर सकी, उसने किया।**'' इत्र की उस शीशी का इस्तेमाल करते हुए यह स्त्री न तो प्रचार कर सकी, न ही प्रार्थना भवन बनवाने में सहायता कर सकी और न अस्पताल में दान दे सकी; परन्तु वह यीशु के मरने से पहले उसे आदर अवश्य दे सकी।

यीशु ने साधारण लोगों की प्रशंसा करना चुना जिन्हें आम तौर पर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। मरियम की इतनी अधिक प्रशंसा क्यों की गई? उसका निस्वार्थ काम उपयुक्त समय पर किया गया था और इससे सेवा करने का एक नया तरीका दिखाया गया जो दूसरे लोगों को के मन में नहीं आया।

यीशु के अनुसार वह **गाड़े जाने की तैयारी में पहले से** उसकी देह पर तेल मल रही थी। यूहन्ना 12:7 में उसने कहा, ''उसे रहने दो। उसे यह *मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये* रखने दो।'' यहूदा ने इस विचार पर नाक चढ़ाया, परन्तु मरियम ने भलमनसी से यीशु के सामने बलिदान किया। प्रभु की ''देह'' के लिए जो कुछ भी हम इसे बनाने या इसके सदस्यों की उन्नति के लिए कर सकते हैं, हमें भी वह करना चाहिए (देखें इफि. 4:12)। पौलुस ने लिखा, ''इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (गला. 6:10)।

आयत 9. यीशु ने मरियम की कार्यवाही के अपने विचार बताए जब उसने कहा, ''**मैं तुम से सच कहता हूँ कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।**'' मरियम को सदा तक याद रखा जाएगा। पत्थर की बनी यादगारें थोड़ी देर तक रहेंगी; परन्तु प्रेमपूर्ण, निवीत भाव से दिया गया बलिदान सदा तक रहेगा। उसकी कहानी को बताए बिना हम संसार को पूर्ण सुसमाचार नहीं सुना सकते। सुसमाचार सुनाने में[16] मसीही बनने की बुनियादी बातें बताने से बढ़कर बहुत कुछ है। यीशु की दृष्टि में, यह उसके लिए किसी भी व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला सबसे बढ़िया काम है।

यीशु को पकड़वाने का षड्यन्त्र (14:10, 11)[17]

[10]तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे। [11]वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको रुपये देना स्वीकार किया; और वह अवसर ढूँढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।

आयत 10. 14:3-9 में दिखाए गए सुन्दर दृश्य के बाद तुरन्त हम यहूदा के काले कारनामे

को पढ़ते हैं जिसमें उसने अपने प्रभु को पकड़वाने की योजना बनाई। उसका नाम **यहूदा इस्करियोती** केवल यहां पर और 3:19 वाली प्रेरितों की सूची में दिया गया है। यहूदा **प्रधान याजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे**।

यहूदा का एक विचार जो अजीब ढंग से प्रसिद्ध हो गया, वह यह है कि यहूदा वास्तव में यीशु को काम करने के लिए विवश करके उसकी सहायता करने की कोशिश कर रहा था। कइयों ने यह आरोप लगाया है कि यीशु को गिरफ्तार करवाकर यहूदा उसे संसार को अपने अलौकिक होने और अपनी सामर्थ को दिखाने के लिए विवश कर रहा था। बाइबल में हमें इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। निश्चय ही पतरस, याकूब, यूहन्ना और बाकी के प्रेरित हैरान थे ''कि यहूदा को यह विनाशकारी निर्णय लेने के लिए किस बात ने उकसाया होगा?'' उसे जानने के कारण प्रेरितों को लगा होगा कि उसके लिए विश्वासघात का यह काम करना सम्भव है। उन्होंने पता लगाया होगा कि यहूदा के दिमाग में ऐसा काम करने की बात आई थी, परन्तु उनकी खामोशी से पता चलता है कि उनके मन में नहीं आई थी। इन दृश्यों के पीछे की कहानी यूहन्ना ने बताई है कि ''शैतान उसमें समा गया'' (यूहन्ना 13:27)। इस तथ्य के बावजूद, अपने गलत निर्णयों और अपने दुष्ट कामों के लिए पूरी तरह से ज़िम्मेदार यहूदा ही था। उसके अपने लालच ने शैतान को उसके मन में आने दिया होगा। इस आदमी के लिए कोई ठोस बहाना नहीं बताया जा सकता। प्रेरितों 1:20 में पतरस ने पुराने नियम के एक हवाले में से दोहराया जो बिल्कुल यहूदा पर लागू होता है:

> ''भजन संहिता में लिखा है, 'उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे,' और 'उसका पद कोई दूसरा ले ले''' (देखें भजन 69:25; 109:8)।[18]

आयत 11. प्रधान याजकों ने **उसको रुपये देना स्वीकार किया**। धन को पाने की तीव्र इच्छा रखने वाले कमज़ोर व्यक्ति के मन में शैतान असानी से आ सकता है। बाइबल में व्यभिचार और हत्या जैसे पापों के कारण लोभ और लालच को उसके साथ रखा गया है।[19] मत्ती 26:15 संकेत देता है कि यहूदा ने प्रधान याजकों के पास जाकर प्रस्ताव रखा और उनसे पैसे मांगे। प्रधान याजकों ने किसी न किसी प्रकार यह जता दिया होगा कि वे उसे पकड़वाने की कीमत देने को तैयार हैं।

यीशु को उसके शत्रुओं के हाथ बेचने के लिए चांदी के तीस सिक्कों की राशि बहुत छोटी लगती है। जे. डब्ल्य. मैक्गार्वे का विचार था कि यह तय की गई राशि पेशगी की होगी।[20] यह पता चलने पर कि यीशु को उसका ही एक चेला इतना सस्ता बेचने के लिए तैयार है, उन्हें बड़ा सुकून मिला होगा (मत्ती 27:3)। हो सकता है कि यदि यहूदा उनके साथ मोल-भाव करता तो वे सोना भी देने के लिए तैयार हो जाते!

यहूदा का लालच मसीह के प्रति उसकी वफ़ादारी से बढ़कर था। व्यवस्था के अधीन किसी दास की कीमत चांदी के तीस सिक्के बताई गई थी (निर्गमन 21:32)। यह किसी दास की मृत्यु हो जाने पर उसके लहू का मोल भी था। यूसुफ़ को उसके भाइयों ने चांदी के केवल बीस सिक्कों में बेच दिया था (उत्पत्ति 37:28)। यह कितना उपयुक्त है कि जो सेवा करने के लिए आया था उसे इतनी छोटी राशि में बेच दिया गया जितनी से किसी दास को खरीदा जा सकता था।

पैसे की कीमत घटते बढ़ते रहने के कारण आज चांदी के इन तीन सिक्कों की वास्तविक कीमत बता पाना कठिन है। अनुमान अलग-अलग लगाए गए हैं। इसे किसी सिपाही की चार से छह महीनों के वेतन के रूप में बताया जा सकता है। सही सही राशि चाहे जो भी हो, परन्तु यह राशि कितनी छोटी है जिसने यहूदा को अपने प्रिय प्रभु को पकड़वाने के लिए प्रेरित किया, जिसे उसने इतने दया और करुणा के काम करते हुए देखा था।

जब यहूदा इन दुष्ट प्राचीनों के पास गया तो उन्हें यीशु को मसीहा मानने के अपने इनकार का कुछ तो समर्थन मिला लगा होगा। अब तक वे यह मान रहे थे कि यीशु सब कुछ जानता है और उनके किसी भी तर्क का उत्तर दे सकता है। परन्तु यह देखकर कि यहूदा कितना लालची है और कितनी जल्दी उसने उन्हें उसे सौंपने के लिए इतनी छोटी सी राशि स्वीकार कर ली, उन्हें हैरानी तो हुई होगी कि यीशु को इस सब का जो हो रहा था पता था भी या नहीं।

रात को यीशु को गिरफ़्तार करने के इस अवसर को पाकर **वे आनन्दित हुए**, और उन्होंने यहूदा को अग्रिम राशि (या कम से कम पेशगी) दे दी। पैसे मिल जाने पर यहूदा की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह सौदे में कोई बदलाव कर सके। यहूदा चाहे जितना भी लालची था परन्तु हमें हैरानी होती है कि शैतान इतनी आसानी से यीशु के किसी प्रेरित को अपनी ओर ले जा सकता है। यहूदा **अवसर ढूंढ़ने लगा कि** [यीशु को] **किसी प्रकार पकड़वा दे**।

अंतिम भोज (14:12-21)

फसह की तैयारियां (14:12-16)[21]

[12]अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उससे पूछा, ''तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?'' [13]उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, ''नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना; [14]और वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?' [15]वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो।'' [16]चेले निकलकर नगर में आये, और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया; और फसह तैयार किया।

आयत 12. अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन का अर्थ वास्तव में क्या है? यह वह दिन था **जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे**। फसह का मेमना यरूशलेम में मन्दिर में काटा जाना होता था (निर्गमन 12:6 में बताई गई शर्त) और फिर उसे पवित्र नगर की सीमाओं में खाया जाना होता था।

सात दिनों तक चलने वाले इस समारोह का अंत ''अबीब'' नामक महीने के जिसे बाद में ''निसान'' कहा जाने लगा, चौदवें दिन गोधूली के समय पसका के मेमने के काटे जाने से आरम्भ होता था।[22] भोजन महीने के चौदहवें दिन सूरज ढलने पर (आधिकारिक तौर पर दिन के आरम्भ होने का समय) किया जाता था। मेमने का काटा जाना और अखमीरी रोटी का पर्व और फसह

को एक बड़े पर्व में मिला देना आम बात थी। यही कारण है कि फसह और अखमीरी रोटी के पर्व को एक ही नाम से जाना जाता था।[23]

सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में फसह और प्रभु भोज का आरम्भ उसी शाम बताया गया है (मरकुस 14:12, 17; देखें मत्ती 26:17, 20; लूका 22:7, 14)। यूहन्ना 18:28 में यहूदी अगुओं को शुक्रवार के दिन फसह खाते दिखाया गया है। यह इस बात का सुझाव देता है कि फसह का दिन शुक्रवार रात को आने पर फरीसी गुरुवार वाले दिन भोजन कर लेते थे और सदूकी शुक्रवार के दिन। लगता है कि यीशु फरीसियों की परम्परा को मानता था।[24] चेलों ने उससे पूछा, **''तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?''**

आयतें 13-15. यीशु ने फसह तैयार करने के लिए केवल **अपने चेलों में से दो को** भेजा (14:13; देखें लूका 22:8)। ये निर्देश इतने छुपाकर क्यों दिए गए थे? यीशु के पास एक महत्वपूर्ण कारण था। यहूदा यीशु को पकड़वाने के लिए निकल गया था और वह अवसर की खोज में था। मिलने के इस स्थान को गुप्त रखकर यीशु ने यह सुनिश्चित किया कि यहूदा हाकिमों को न बता पाए कि इस कठिन समय में वह और उसके प्रेरित कहां होंगे।

यीशु ने इन दो चेलों को स्पष्ट निर्देश दिए। उसने कहा,

> **''नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना; और वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?'''** (14:13, 14)।

इस बात का पूर्वज्ञान होना कि एक आदमी ने जगह तैयार कर रखी होगी और यह कि चेलों की मुलाकात एक आदमी से संयोग से होगी जिसने उन्हें इस जगह पर ले जाना था, यीशु के परमेश्वर होने के अतिरिक्त चिह्न हैं। यीशु को और कैसे पता हो सकता था कि कोई ऐसा आदमी था और उसने उसकी सेवा करने को तैयार होना था?

कइयों का विचार है कि जल के घड़ा उठाए एक आदमी का यह संकेत (14:13) यीशु और उस आदमी द्वारा पहले से तैयार किया हुआ था। वह आदमी जल ले जा रहा था जबकि आम तौर पर यह काम महिलाएं करती थीं। यह चिह्न मसीहा को आदर देने की उस आदमी की इच्छा के साथ मेल खाते हुए परमेश्वर के ईश्वरीय प्रबन्ध में यूं ही आ गया होगा।

उस समय यरूशलेम में यह नियम था कि पवित्र पर्व मनाने के लिए परदेशियों को उस स्थान का इस्तेमाल करने के लिए कोई भी उपलब्ध जगह दे दी जाती थी। यहूदी लोग संसार भर से आने वाले यात्रियों के लिए अपने घरों के दरवाजे खोल देने के लिए प्रसिद्ध थे। यह आदमी अवश्य ही यीशु का कोई चेला होगा। यरूशलेम में भी वह अपने घर में प्रभु को आने देने का जोखिम लेने को तैयार था।

दोनों चेलों ने पूछना था कि यरूशलेम में वे पर्व के लिए किस कमरे का इस्तेमाल करें (14:14)। निश्चय ही पर्व मनाने वालों के लिए कई घर पहले से ही दे दिए गए थे। यह घर खुला रखा गया था ताकि अपने पधारने से मसीहा इस घर की शोभा बढ़ाए। जो भी कारण या बातें रही हों, यीशु को पता था कि इसी घर का मालिक उन्हें अपने घर में आने देगा और अपने

अतिथियों के रूप में इस टोली को पाकर आनन्दित होगा। उसने दो चेलों से कहा, ''**वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो**'' (14:15)।

आयत 16. सब कुछ वैसे ही हुआ जैसे यीशु ने कहा कि होगा। चेले जब नगर में आए तो उन्होंने **जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया**, और वे पानी का घड़ा लिए आदमी के पीछे-पीछे अतिथि ग्रह में चले गए, **और फसह तैयार किया**। अटारी वाला यह प्रसिद्ध कमरा केवल वह जगह ही नहीं थी जहां यीशु ने प्रभु भोज का आरम्भ किया था बल्कि यह वह जगह थी जहां उसने यूहन्ना 14-16 वाले उपदेश दिए।

सही समय आने पर यहूदा शेष प्रेरितों के साथ मिल गया और यीशु उन्हें फसह मनाने के लिए अटारी वाले कमरे में ले गया। बेशक वह चाहता था कि अपने प्रेरितों के साथ उसके इस अंतिम भोज में कोई रुकावट न पड़े। यह क्षण बेशकीमती होने थे, विशेषकर इसलिए क्योंकि उसने अपने यादगारी भोज की स्थापना करनी थी। बाद में यीशु ने अटारी वाले कमरे से प्रधान याजकों के पास जाना था; परन्तु उसे पकड़ने वाली टोली के इकट्ठा होने और उन्हें निर्देश दिए जाने तक यीशु और उसके प्रेरितों ने पहले ही वहां से निकलकर गतसमनी में चले जाना था।

लूका 22:15 कहता है कि यीशु की ''बड़ी लालसा थी'' कि यह फसह वह उनके साथ मनाए। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है, ''अंतिम विश्लेषण में यीशु के मनुष्य होने और उसके ईश्वरीय स्वभाव के परस्पर क्रिया के बीच में हमारे लिए समझने के लिए एक रहस्य है, जो बहुत गहरा है।''[25]

फसह का मनाया जाना इतना आवश्यक क्यों था?

काटा गया मेमना यहूदियों को यह स्मरण दिलाता था कि परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएलियों के पहलौठों को छोड़ दिया था।

अखमीरी रोटी यह स्मरण दिलाने के लिए थी कि परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को दासता से निकाले जाने के समय वे मिस्र से कितनी जल्दी-जल्दी निकले थे।

खारे पाने का एक कटोरा मिस्र में बहाए गए आंसुओं और लाल समुद्र को दर्शाता था, जिसे उन्होंने पार किया था।

कड़वा साग पात दासता के कड़वेपन का स्मरण दिलाती थी।

इस भोजन में *हरोसेत* शामिल होता था जो कि सेब, खजूर, अनार, और अखरोट की चटनी होती थी। यह मिश्रण उन्हें मिस्र में बनाई जाने वाली मिट्टी की ईंटों का स्मरण करवाता था। इसमें उस घासफूस को दर्शाने के लिए जिससे ईंटें बनती थीं, दालचीनी की डंडियां भी पड़ती थीं।

इस पर्व के दौरान दाखरस के चार कटोरे (जिसमें तीन भाग दाखरस और दो भाग पानी होता था) इस्तेमाल किए जाते थे। भाग लेने वालों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का स्मरण दिलाने के लिए भोजन के अलग चरणों में हर बार पिया जाता था:

> '''... तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूँगा, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा, और

मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा; ...''' (निर्गमन 6:6, 7)।

अनुष्ठानिक भोज परमेश्वर के बने रहने अनुग्रह और छुटकारे को याद दिलाते रहने का काम करता था।[26] यीशु इसे एक नया अर्थ देने वाला था।

एक अर्थ में, प्रभु भोज ने फसह के भोज की जगह ले ली। इस अर्थ में फसह पाप से हमारे छुटकारे के स्मरण के रूप में प्रभु के पवित्र यादगारी भोज को आरम्भ करने के लिए बिल्कुल सहीह समय था। मसीही लोगों लिए फसह को मनाना अनुचित है क्यों मसीह ने इसे पूरा करके हटा दिया है। ऐसा करना गलत बात है।

यीशु ने सब लोगों के पाप के लिए परमेश्वर के बेदाग मेमने के रूप में मरकर फसह के सांकेतिक उद्देश्य को पूरा कर दिया। 1 कुरिन्थियों 5:7 में पौलुस ने कहा कि मसीह हमारा ''फसह'' है। ''नये नियम के कैनन के अंत के तुरन्त बाद किसी दिन मसीही लोगों ने यह मान लिया होगा कि प्रभु-भोज पूरी तरह से फसह की जगह दिया गया है और यह कि इसे दिए जाने का कारण है।''[27]

फसह का भोजन और विश्वासघात की भविष्यद्वाणी (14:17-21)[28]

[17]जब साँझ हुई, तो वह बारहों के साथ आया। [18]जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।'' [19]उन पर उदासी छा गई और वे एक एक करके उससे कहने लगे, ''क्या वह मैं हूँ?'' [20]उसने उनसे कहा, ''वह बारहों में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है। [21]क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता।''

आयतें 17, 18. सम्भवतया मरकुस 14:17 और 14:18 की घटनाओं के बीच चेलों के पांव धोकर विनम्रता पर सबक दिया गया (यूहन्ना 13:1-20)।[29] यीशु ने सम्भवतया इस भोज में किसी प्रकार की बाधा पड़ने से बचने के लिए नगर में जाने को **सांझ** तक जाना टाला। वह और उसके प्रेरित इस भोज के लिए **बैठे** (14:18;), या और उचित ढंग से कहें तो ''झुके हुए थे'' (NASB; NIV)। निर्गमन 12:11 वाले मूल फसह में इस्राएली लोग यहोवा की आज्ञा को मानते हुए ऐसे खड़े हुए होंगे कि वे एकदम से मिस्र में से निकल जाएं।

यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा'' (14:18)। इकट्ठे खाने को गहरी संगति या पक्की दोस्ती का काम माना जाता था। किसी के साथ विश्वासघात करने को, जिसकी थाली में खाया हो, विशेषकर गद्दारी करना माना जाता था। इस अवसर पर यीशु मेज़बान था; वह अपने प्रेरितों के साथ भोजन कर रहा था। प्राचीनकाल के लोग मेज़बान के साथ, जिसने खाना खिलाया हो, विश्वासघात करने वाले को इससे भी बढ़कर बुरा समझते थे। बाद में यहूदा का पछताना और आत्म हत्या कर लेना, यह संकेत देता हो सकता है कि उसका मन पूरी तरह से बुरा नहीं था बल्कि थोड़ी देर के

लिए लालच से भर गया था।

यीशु को पता था कि यहूदा भजन 41:9 की भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा था, जिसे उसने यूहन्ना 13:18 में उद्धृत किया: ''मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता; जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ; परन्तु यह इसलिये है कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, 'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।''' यीशु को यह बिल्कुल पता था कि उसकी मृत्यु शीघ्र हो वाली है। परन्तु उसकी इस घोषणा ने कि प्रेरितों में से एक उसे पकड़वाएगा, उन सब को चौंका दिया।

आयतें 19, 20. इस घोषणा से प्रेरितों **पर उदासी छा गई** और एक-एक करके उससे पूछने लगे, ''**क्या वह मैं हूँ?**'' यूनानी भाषा में प्रश्न का रूप (''मैं तो नहीं हूं न?'') जैसा संकेत देता है कि उन्हें न में उत्तर मिलने की उम्मीद थी। लूका 22:23 सुझाव देता है कि वे आपस में भी एक-दूसरे से पूछने लगे कि कौन दोषी हो सकता है। यहूदा का प्रश्न केवल थोड़ा सा अलग है: ''हे रब्बी, क्या वह मैं हूं'' (मत्ती 26:25)। इससे उसके अपने खतरनाक कपट को छिपाने के प्रयास का पता चलता है। यीशु ने उत्तर दिया, ''**वह बारहों में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है।**'' यहूदा से उसने कहा, ''तू कह चुका'' (मत्ती 26:25), या ''तूने कह दिया है'' (KJV), जो उसकी बात से पूरी तरह सहमत होने को दिखाता है। यीशु ने उसके कान में से कहा होगा ताकि दूसरों को सुनाई न दे। वहां पर प्रेरितों में से किसी को भी नहीं लगा कि यहूदा दोषी है। उनके पैसे का लेन देन रखने वाला होने के कारण उसे उन सब से अच्छा माना जाता होगा। जब पतरस को सच्चाई पता चली (देखें यूहन्ना 13:24-26), तो उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और उसने यहूदा के विरुद्ध कार्यवाही की, जैसा कि उसके उतावले स्वभाव से मेल खाते होने के कारण उससे उम्मीद की जा सकती थी।

आयत 21. यीशु को तो क्रूस पर जाना था परन्तु उसने उस आदमी के लिए जिसके द्वारा उसे क्रूस पर दिया जाना था, हाय कही: ''**उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है!**'' यीशु ने संकेत दिया कि यहूदा ने पकड़वाने वाला नहीं होना था, और केवल अंत में सब को पता चलने दिया कि दोषी कौन है। बेशक, ''वह यहूदा को पाप से मुड़ने का हर अवसर देना चाहता था।''[30] वह पाप में बना रहा और उसने मन नहीं फिराया, इस कारण **यदि [यहूदा] का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता।**

जैसा उसके विषय में लिखा है उन बहुत सी भविष्यद्वाणियों की ओर संकेत है जो यीशु के दु:ख सहने की बात करती हैं जो पकड़वाने वाले की ओर से उसे मिलना था। (उदाहरण के लिए देखें भजन 22 और यशायाह 53.) निश्चय ही कुछ रब्बी यशायाह 53 को मसीहा के लिए या परमेश्वर के लिए चुने हुए किसी और सेवक के लिए मानते थे, परन्तु बहुतों का मानना था कि दु:ख उठाना मसीह का स्वभाव वे मेल नहीं खाता। औसकर कलमैन ने टर्गुम का एक उदाहरण दिया जिसकी बाद वाले विचार के समर्थन के लिए पुन: व्याख्या की गई थी। तीसरी सदी ईसवी में यशायाह 53:3 का अर्थ एकवचन पुरुषवाचक ''वह'' के साथ किया जाता था, जो कि स्पष्टतया मसीहा की बात थी। इस वचन को रब्बियों की सोच के साथ मिलाने के लिए कि मसीहा इस प्रकार से दु:ख नहीं उठा सकता, अनुवादकों ने कुछ शब्दावली का अर्थ बदलकर ''वह तुच्छ जाना जाता'' से ''हम तुच्छ जाने जाते'' और ''परमेश्वर ने हमसे अपना मुंह फेर लिया है'' कर दिया।[31] यह अर्थ यह कहने के बजाय कि मसीहा ने ''ऐसा व्यक्ति जिससे लोग

अपना मुंह फेर लेते'' होना था, हमें अपमानित करने वाले यानी वे लोग बना देता है जिनसे परमेश्वर अपना मुंह छिपा लेता है।

इस भविष्यद्वाणी और परमेश्वर के आदेश को कि विश्वासघात के कारण यीशु ने मरना था, यहूदा के लिए बहाने के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। परमेश्वर का पूर्वज्ञान मनुष्य के दोषी होने को कम नहीं कर देता है। ''परमेश्वर अपराधों को जो *उनमें अपने आप में* है दण्ड देगा।''[32] मसीह को परमेश्वर की योजना के अनुसार मृत्यु को सौंपा गया परन्तु वह मारा ''अधर्मियों के हाथ से'' गया (प्रेरितों 2:23)।

प्रभु भोज (14:22-25)[33]

फसह का भोजन खत्म होने के निकट (14:22)

[22]जब वे खा ही रहे थे, उसने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, ''लो, यह मेरी देह है।''

आयत 22. उसी शाम भोज, में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं को नया अर्थ देते हुए, यीशु ने अपना यादगारी भोज आरम्भ किया। फसह के भोज की हर बात और हर चीज़ का कुछ सांकेतिक अर्थ था। इसलिए अपना इकलौता, सांकेतिक पर्व आरम्भ करने के लिए यीशु के लिए फसह सबसे अनुकूल समय था।

यहूदियों के लिए फसह रस्म से कहीं बढ़कर था। यह परमेश्वर की सामर्थ और करुणा को याद दिलाता था। वैसे ही, मसीही लोगों के लिए मसीह के साथ हमारी सहभागिता कभी भी केवल रस्म नहीं होनी चाहिए। यह हमारे लिए परमेश्वर के बड़े प्रेम का प्रतीक है। इसका बहुत गहरा अर्थ है और हमें इसे अपने मनों में मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में लाते हुए, बड़ी गम्भीरता के साथ लेना चाहिए।

प्रभु भोज की स्थापना (14:22-25)

[22]जब वे खा ही रहे थे, उसने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, ''लो, यह मेरी देह है।'' [23]फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उसमें से पीया। [24]और उसने उनसे कहा, ''यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। [25]मैं तुम से सच कहता हूँ कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ।''

आयतें 22-25. यीशु ने इस सहभागिता के भोज का आरम्भ कब किया? लूका 22 में भोज के आरम्भ की समय-सारिणी के साथ कुछ समस्याएं हैं, परन्तु लूका ने आम तौर पर घटनाओं के समय का क्रम दिए बिना इन विषयों को जोड़ दिया। लूका 1:3 कहता है कि लेखक अपना विवरण ''सिलसिलेवार ढंग से'' दे रहा था (यानी यह ''सिलसिलेवार विवरण'' था; NIV; ESV; NRSV)। ''क्रमानुसार'' (καθεξῆς, *kathexēs*; ASV) शब्द का अर्थ यह हो

सकता है कि सुसमाचार का विवरण समय के क्रम में या विषयों की पंक्तियों के क्रम में दिया जा रहा था।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, हम कह सकते हैं कि यीशु ने अपने भोज का आरम्भ वहां पड़ी कुछ अखमीरी रोटी लेकर किया (मरकुस 14:22), और ऐसा वह हाथों के अंतिम बार शुद्ध करने के तुरन्त बाद कर पाया होगा। इसके बाद उसने कटोरे के लिए धन्यवाद दिया होगा और फिर ''उन सब ने उसमें से पिया'' (14:23)।

किसी भी यहूदी के लिए फसह के भोज को मनाना एक बड़ा सांकेतिक क्षण होता होगा; परन्तु यीशु के चेलों के लिए, जो भोज उसने बनाया था, वह न भूलने वाला अनुभव बन जाना था। उसके लिए ''यह मेरी देह है'' और ''यह मेरा लहू है'' कहने ने इसे और भी सार्थक बना दिया (14:22, 24)।

क्या रोटी सचमुच में उसकी ''देह'' थी, और क्या दाख का रस सचमुच में उसका ''लहू'' था? इन दोनों चीज़ों के वही मानने की किसी भी स्पष्ट मान्यता के साथ केवल एक ही तर्क यीशु की कही बात पर आधारित है। परन्तु 14:25 में यीशु ने साफ़ कहा कि उसने उनके साथ दोबारा **दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न** पीना था जब तक वह उसे **परमेश्वर के राज्य में नया न** पीता। यह पक्का है कि इन लोगों को खाने और पीने के लिए वास्तविक मांस और लहू नहीं दिया गया था। ऐसा आदेश उन्हें उत्पत्ति 9:4 में दी गई आज्ञा को तोड़ने के लिए कह रहा होना था, जिसमें ईश्वरीय नियम दिया गया है कि ''मांस को प्राण समेत अर्थात लहू समेत तुम न खाना।'' मनुष्य का मांस खाना स्पष्ट तौर पर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन होना था। यीशु चाहे फरीसियों के ठहराए हुए नियमों को हमेशा नहीं मानता था परन्तु उसने कभी परमेश्वर की आज्ञा को खारिज नहीं किया।

उसने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, ''लो, यह मेरी देह है'' (14:22)। 1 कुरिन्थियों 11:26 इस बात पर ज़ोर देता है कि मसीही लोग ''रोटी'' खाते हैं न कि सचमुच में मसीह का मांस। न ही यीशु के कहने का यह अर्थ हो सकता था कि वे सचमुच में उसका मांस खाएं या उसके लहू को पीएं, क्योंकि भोज आरम्भ करने के समय अभी उसकी देह सकुशल थी और चढ़ाई नहीं गई थी। उसकी देह उनके सामने थी इसलिए वहां उपस्थित किसी को यह नहीं लगा होगा कि वह अपने मांस के सचमुच में खाए जाने की बात कर रहा हो।

यीशु के पास केवल अखमीरी रोटी की भेंट थी (परमेश्वर की योजना को पूरा करते हुए)। इसलिए प्रभु भोज के मनाए जाने में हमें चौकसी से ऐसी रोटी का इस्तेमाल करना चाहिए। अखमीरी रोटी शुद्धता का बिल्कुल सही प्रतीक है। पाप रहित मसीह की देह को सही ढंग से केवल यही दिखाती थी।

फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उसमें से पीया। और उसने उनसे कहा, ''यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है'' (14:23, 24)। उसने कहा, ''इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, 'यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है''' (लूका 22:20), इस कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि वह ''कटोरे'' का इस्तेमाल रूपक के रूप में कर

रहा था। कटोरे के अंदर की चीज़ें उसकी नई वाचा को दर्शाती थी जो कि पापों की पूर्ण क्षमा की भेंट होनी थीं (देखें मत्ती 26:28)। यदि ''कटोरा'' रूपक था तो यह स्पष्ट है कि ''देह'' (σῶμα, *sōma*) का इस्तेमाल भी इसी अर्थ में किया गया। यीशु आम तौर पर प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल करता था। उसने कहा, ''द्वार मैं हूं'' (यूहन्ना 10:7, 9); ''अच्छा चरवाहा मैं हूं'' (यूहन्ना 10:14); ''मार्ग मैं हूं'' (यूहन्ना 14:6); ''सच्ची दाखलता मैं हूं'' (यूहन्ना 15:1)। ये सभी अलंकार हैं न कि शाब्दिक अर्थ वाले वाक्य।

नये नियम में कहीं पर भी इस अवसर पर इस्तेमाल किए गए कटोरे के अंदर की चीज़ों को ''दाखरस'' नहीं कहा गया। शाब्दिक रूप में इस्तेमाल किया गया वाक्यांश ''दाख का रस'' है (मरकुस 14:25; देखें मत्ती 26:29; लूका 22:18)। फसह को मनाने वाले लोग आम तौर पर पानी मिला दाखरस पीते थे।[34]

यहूदी लोग पियक्कड़ों को नापसंद करते थे और व्यवस्था को मानते हुए निष्ठापूर्वक इससे बचते थे (देखें नीति. 20:1; 23:29-35)। इसी प्रकार से नबी अत्यधिक मतवाला होने का विरोध करते थे (देखें यशा. 28:7)। निश्चय ही आज प्रभु भोज बनाने के लिए दाख के रस का इस्तेमाल करने वाले लोग पवित्र शास्त्र की बात को मानते हुए हुए, ऐसा करते हैं। आराधना में मद्य का इस्तेमाल करने का अर्थ परिवर्तित हुए शराबी के सामने अनावश्यक ठोकर का पत्थर रखना होगा। हम कुछ ऐसा न करें जो किसी भाई के लिए ठोकर का कारण हो (रोमियों 14:21; 1 कुरि. 8:13)। अल्कोहल युक्त दाखरस का इस्तेमाल करने के कारण कुछ मसीही लोग सहभागिता में भाग लेने से बचना चाह सकते हैं।

मरकुस के अनुसार यीशु ने रोटी के लिए ''आशीष'' दी (14:22) और कटोरे के लिए ''धन्यवाद'' किया (14:23)। लूका 22:17, 19 कहता है कि यीशु ने दोनों के लिए ''धन्यवाद किया।'' यह तथ्य इस बात को दिखाता है कि ''धन्यवाद देना'' परमेश्वर से उसके लिए जो खाया जाने वाला है, ''आशीष'' मांगना है।

मत्ती 26:27 यीशु को यह कहते हुए दोहराता है, ''तुम सब इसमें से पियो।'' मरकुस 14:23 कहता है, ''उन सब ने उसमें से पिया।'' मत्ती ने आज्ञा को लिखा और मरकुस ने उस आज्ञा के माना जाने को दिखाया।

यीशु का लहू बहाए जाने से नई वाचा पर मोहर होनी थी और पापों पर क्षमा मिलनी थी (मरकुस 14:24; देखें मत्ती 26:28; लूका 22:20)। ''वाचा'' (διαθήκη, *diathēkē*) ''वसीयत'' यानी ''करार'' होता है।[35] इब्रानियों 9:16, 17 में ''वाचा'' (KJV) का अर्थ ''अंतिम वसीयत या वाचा'' के सम्बन्ध में होता है।

पुराने नियम में लोगों के मूसा की वाचा को तोड़ने (या उसका उल्लंघन करने) का अर्थ परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध टूट जाना था। यह सम्बन्ध ''पूरी तरह से व्यवस्था और व्यवस्था की आज्ञा मानने पर निर्भर'' था।[36] नई वाचा व्यवस्था पर आधारित नहीं है। यह अपने लहू की भेंट के द्वारा जो यीशु ने दी, नये सम्बन्ध पर टिकी है; उसने इसे अपने प्रेम के साथ जोड़ा है। यीशु कह रहा था, ''जो कुछ मैं करने वाला हूं उसमें मैं तुम्हें दिखा रहा हूं कि परमेश्वर तुम से कितना प्रेम करता है।''[37]

यीशु का लहू संसार को पाप के कारण इसे दण्ड से वापस खरीदने के लिए चुकाया गया

छुटकारे का मूल्य था। ऐसा करते हुए यीशु ने प्रभावी ढंग से कलीसिया को ''अपने ही लहू से खरीदा'' (प्रेरितों 20:28)।

मत्ती 26:28 में ''पापों की क्षमा के निमित्त'' अभिव्यक्ति लगभग वैसी ही है जैसी प्रेरितों प्रेरितों 2:38 में मिलती है। प्रेरितों 2:38 में ''के लिए'' का मूल शब्द *eis* (εἰς) है जो कि एक उपसर्ग है जो हमेशा आगे को देखता है न कि पीछे को। इसका अनुवाद कई बार ''में'' किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि यीशु का लहू उसी कारण बहाया गया था जिस कारण हमें बपतिस्मा दिया जाता है यानी हमारे पापों की क्षमा को पाने के लिए। इसलिए इन दोनों बातों यानी यीशु के लहू और बपतिस्मे में उसकी आज्ञा मानने के बिना पापों की क्षमा नहीं हो सकती। इसे नकारने का अर्थ नई वाचा के द्वारा क्षमा दिलाने के मसीह के माध्यम को नकारना है। उसके लहू ने वह पा लिया जो पुरानी वाचा के अधीन बहाए गए इतने लहू से नहीं हो पाया और यह पाप के दोष को हटाना था। उसके भोज में हमारा भाग लेना इस सच्चाई में भरोसा जताते हुए कि यीशु हमारे लिए मर गया परन्तु अब फिर से जीवित है, विश्वास का एक कार्य है।

मत्ती 26:29 में यीशु ने ''दाख के रस'' के ''नया'' लेने की बात की, जो उसने राज्य में अपने चेलों के साथ लेना था। ''नया'' का अर्थ केवल ''नया ढंग, नया स्थान और नया समय'' है। लूका 22:15, 16 में यह यीशु ने कहा, ''मुझे बड़ी लालसा थी कि दु:ख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा।'' हमारा प्रभु प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त वाले दिन स्वर्ग के राज्य के आ जाने के बाद, अपने चेलों के साथ अपने होने की बात कर रहा था।

उनके साथ भोज में भाग लेने समय यीशु इन लोगों के साथ, शारीरिक रूप में था, परन्तु उनके उसके स्मरण में इसे लेने पर बाद में उसने ''आत्मा में'' उनके साथ होना था। दूसरे अर्थों में, यादगार स्थापित करने के समय यीशु ने प्रेरितों के साथ शारीरिक रूप में भोज खाया, परन्तु हमारे सही विचार और मन से सहभागिता करने पर अब वह ''आत्मा'' में हमारे साथ होता है (देखें 1 कुरि. 10:16, 17)। यह हमें बड़े महत्वपूर्ण ढंग से उसे *स्मरण* रखने देता है!

हमारे पास यह सुझाव देने का कोई प्रमाण नहीं है कि अपने जी उठने के बाद के दिनों में यीशु अपने चेलों के साथ भोज में भाग लेता था। उस समय वह व्यक्तिगत रूप में भी उनके साथ था; कलीसिया और प्रभु भोज का मनाया जाना अभी आरम्भ नहीं हुआ था।

प्रभु भोज राज्य में लिया जाना था। पहली सदी में मसीह के राज्य के सब लोग पृथ्वी पर जीवित रहते समय प्रभु भोज में भाग लेते थे। वे राज्य के पवित्र लोग थे (देखें कुलु. 1:13)। मरकुस 14:25 कहता है कि यीशु ने अपने ''पिता के राज्य'' में ''दाख का यह रस नये सिरे से'' पीना था, और प्रेरितों के काम में हम ऐसा होते हुए देखते हैं जब प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज लिया जाता था (प्रेरितों 20:7; देखें 1 कुरि. 11:23-27)। ''राज्य'' उन सब लोगों को कहा गया है जो मसीह को राजा मानते हैं उसकी प्रजा हैं और पृथ्वी पर उसकी आंत्मिक देह के रूप में रह रहे हैं।

इस तथ्य का अर्थ यह नहीं है कि ''कलीसिया'' और ''राज्य'' शब्द एक ही हैं बल्कि इसका अर्थ यह अवश्य है कि जो लोग कलीसिया में हैं वे ही राज्य में भी हैं। हमें संसार में से कलीसिया में और शैतान के राज्य में से ''मसीह और परमेश्वर के राज्य में'' बुलाया गया है

(इफि. 5:5)। ''कलीसिया'' के लिए शब्द (ἐκκλησία, *ekklēsia*) का अनुवाद ''सभा'' के रूप में किया जाता है (प्रेरितों 19:41); इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया (यानी चर्च) लोगों की मण्डली या सभा है। कुलुस्सियों 1:13 हमें बताता है कि मसीही लोगों के रूप में हमें ''राज्य में प्रवेश करवाया'' गया है। हम मसीह की देह के अंग हैं, जो कि कलीसिया है (कुलु. 1:18)। ''कलीसिया'' (यानी चर्च) का अर्थ केवल किसी स्थान की ''सभा'' या अनन्त राज्य की मण्डली है। मसीह के राज्य की मण्डली या सभा के रूप में एक दिन हमें ''अनन्त राज्य में प्रवेश'' मिलेगा (2 पतरस 1:11)। कलीसिया अनन्त राज्य का सांसारिक पहलू है।

इस अवसर पर यीशु के शब्दों में दोनों सच्चाइयां हैं। पहली, उसे मरना था; दूसरी, उसका राज्य आना था। उसका परमेश्वर की प्रतिज्ञा में पूर्ण विश्वास था, वैसे ही जैसे हमें भी रखना आवश्यक है! कितने दु:ख की बात है कि उसके निकटतम साथी यानी उसके प्रेरित उन सच्चाइयों को समझ नहीं पाए जो वह उन्हें बताने की कोशिश कर रहा था। पिन्तेकुस्त वाले दिन पवित्र आत्मा के उन पर उतरने के बाद, उनके मन में उसका अर्थ बहुत स्पष्ट हो गया।

यरूशलेम से जैतून पहाड़ की ओर जाना (14:26-31)[38]

''फिर भजन गाकर'' (14:26)

[26]फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए।

आयत 26. ऊपरी कमरे में अपनी सभा के दौरान या उसके थोड़ी देर बाद यीशु और प्रेरितों ने **भजन** गाया (मरकुस 14:26)। यह अंतिम भजन हलेल (भजन 115-118) या बड़े हालेल (भजन 136) का दूसरा भाग हो सकता है। इस समय पर हमारे प्रभु को तसल्ली किस बात से मिली? हो सकता है कि क्रूस की ओर बढ़ने वाली उनकी घड़ियों में जो वह सामने थीं यह भजन उसके लिए बड़ा ही उत्साहवर्धक रहा होगा!

मरकुस 14:26 कहता है कि वह **बाहर जैतून के पहाड़ पर गए**। इससे एक खण्ड का आरम्भ होता है जिसमें यीशु के यरूशलेम से गतसमनी की ओर जाते हुए अपने प्रेरितों के साथ उसकी अंतिम बातचीत शामिल है (14:27-31) और फिर बाग में उसकी प्रार्थना मिलती है (14:32-42)। बहुत जल्द उसके साथ विश्वासघात होना था और उसने पकड़वाए जाना था।

''तुम सब ठोकर खाओगे'' (14:27-31)

[27]तब यीशु ने उनसे कहा, ''तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: 'मैं रखवाले को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।' [28]परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।'' [29]पतरस ने उससे कहा, ''यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।'' [30]यीशु ने उससे कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही इसी रात को मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।'' [31]पर उसने और भी जोर देकर कहा, ''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तेरा इन्कार कभी न करूँगा।'' इसी प्रकार और सब ने भी कहा।

आयतें 27, 28. यीशु और प्रेरितों के बीच यह बातचीत यरूशलेम से गतसमनी बाग की ओर जाते-जाते हुई होगी। 14:27 में यीशु की बात के अनुसार उसने उन्हें ठोकर खिलाने की: **''तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: 'मैं रखवाले को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।'''** यहां पर क्रिया शब्द σκανδαλίζω (*skandalizō*) है, जिसका अर्थ है ''ठोकर खिलाना, ठेस पहुंचाना'' (देखें KJV)। इस शब्द को किसी जानवर को फंसाने के लिए चारा डालने के साथ जोड़ा जाता है। ऐसा कैसे हो सकता था कि यीशु किसी को फंदे में डाले?

यीशु ने अपने अनुयायियों को बताया कि उन्होंने बिखर जाना था, जैसा कि जर्कयाह 13:7 की भविष्यद्वाणी में बताया गया है:

> ''हे तलवार, मेरे ठहराए हुए चरवाहे के विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा स्वजाति है, उसके विरुद्ध चल। तू उस चरवाहे को काट, तब भेड़-बकरियां तितर-बितर हो जाएंगी; और बच्चों पर मैं अपने हाथ बढ़ाऊंगा।''

स्वेच्छा से गिरफ्तार होकर हमारे प्रभु ने प्रेरितों को भाग जाने का अवसर दिया। (मरकुस 14:50)। उनकी उलझन और निराशा उनकी उसके राज्य की नासमझी के कारण बड़ी थी।

यीशु अपने प्रेरितों के लिए चरवाहे के जैसा था। उसके बिना, उन्होंने तितर-बितर हुए झुण्ड के जैसा बन जाना था। परन्तु उसने उन्हें विश्वास दिया, **''परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा''** (14:28)। ''अच्छा चरवाहा'' (देखें यूहन्ना 10:11, 14), की तरह उसने शीघ्र ही गलील में अपनी भेड़ों को फिर से इकट्ठा कर लेना था। यीशु को वह सब जो होने वाला था यानी उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और गलील में होने वाली मुलाकात का पता था। उस मुलाकात के होने पर, उसने अपने प्रत्येक प्रेरित के लिए प्रोत्साहन और आशीष बन जाना था। पतरस ने उन्हें प्रभु की करुणा और यह कि वह मसीह की ओर वापस कैसे आया, बारे में बता सकता था। जब हम ठोकर खाते हैं तो हम पतरस को देखकर यीशु की करुणा की आशा कर सकते हैं।

आयतें 29, 30. आयत 29 में ध्यान **पतरस** पर चला जाता है जिसने यीशु को बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा, **''यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।''** परन्तु यीशु ने उससे कहा, **''मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही इसी रात को मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।''** यह विवरण केवल मरकुस के विवरण में दिया गया है।[39] मुर्ग़ का दो बार बांग देना हुआ, एक लगभग 3:00 बजे सुबह और दूसरा लगभग 6:00 प्रात।[40] पतरस के तीन बार मुकरने के बाद, मुर्ग के बांग देने पर उसके विवेक ने उसे इतना झंझोड़ा कि वह अपनी गलती मानकर ज़ोर-ज़ोर से रोया (14:72)।

आयत 31. पतरस ने यीशु से आगे कहा, **''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तेरा इन्कार कभी न करूँगा!''** यहां आकर, लूका 22:31-34 इस बातचीत का शेष भाग को दिखाता है:

> ''शमौन, हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं के समान फटके,

परन्तु मैं ने तेरे लिये विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।'' उसने उससे कहा, ''हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन् मरने को भी तैयार हूं।'' उसने कहा, ''हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूं कि आज मुर्ग बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा कि तू मुझे नहीं जानता।''

भविष्य का पता न होने के कारण पतरस ने **ज़ोर देकर** या ''ज़ोरदार ढंग से'' (KJV) इससे इनकार किया कि वह गिर सकता है। निश्चय ही यह कि वह यीशु के साथ ''बंदीगृह जाने वरन मरने को भी तैयार'' होने की बात उसने दिल से कही थी। परन्तु शैतान चाहता था कि वह उसे ''गेहूं के समान फटके'' (लूका 22:31)। फटकने के इस रूपक का अर्थ किसी को पीटना, थका देना और बेकार कर देना है। पतरस को ''फटकने'' की शैतान की इच्छा के बारे में केवल लूका बताता है। प्रभु के उसे जानकारी देने से पहले पतरस को स्वयं शैतान की योजना का पता नहीं था। यीशु ने पतरस को यह भी बताया, ''परन्तु मैं ने तेरे लिये विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे'' (लूका 22:32)। ''यीशु ने यह प्रार्थना नहीं की कि [उसके अनुयायी] परीक्षा से बच जाएं, बल्कि यह प्रार्थना की कि परीक्षा और [उनके गिरने के दौरान] वे पूरी तरह से नाकाम न हों।''[41] यीशु अब भी हमारे लिए विनती कर रहा होगा, चाहे हमें इसका पता हो या न। हम इस बात पर आनन्दित हो सकते हैं कि स्वर्ग में हमारा प्रभु अब भी पिता से हमारी बात कर रहा है क्योंकि जीवन में कभी न कभी हर मसीही के सामने शैतान की बात को मानने की चुनौती आएगी।

पतरस को अपने ऊपर न केवल अति विश्वास था बल्कि उसने दूसरों की कमज़ोरियों का मज़ाक भी उड़ाया (देखें मरकुस 14:29)। अपने अहंकार में, उसने अपनी नाकामी को बड़ा दिया। यीशु के लिए उसके मन में सच्चा प्रेम था, परन्तु वह अपने ऊपर अधिक ही भरोसा करता था। वह अपने भीतरी संघर्षों को जो उसके सामने आने वाले थे, नहीं जानता था। यदि वह उनका सामना अपने तरीके से, यानी हाथ में तलवार लेकर करता, तो वह अंतिम सांस तक लड़ सकता था; परन्तु यीशु की मंशा यह नहीं थी।

पतरस अपने आत्मविश्वास और नासमझी के कारण फंदे में फंस गया। आम तौर पर हमारी अज्ञानता या पूर्वधारणा हमें फंसा देती है। पतरस के मसीह के नम्र स्वभाव या उसके राज्य को मानने की अनिच्छा ने उसे फंसा देना था। वह यीशु से प्रेम करता था; और मानवीय निर्बलता के बाजवूद उसने पश्चात्ताप करके उसके पास लौट आना था। यदि यहूदा सचमुच में पश्चात्ताप कर लेता, तो उसे भी क्षमा किया जा सकता था।

दु:ख की बात है कि बहुत बार हमें लगता है कि हम नहीं गिरेंगे और हम नहीं गिर सकते हैं। उस रात ऐसा दावा करने वाला पतरस अकेला नहीं था। दूसरे सभी प्रेरितों ने **इसी प्रकार और सब ने भी कहा**; परन्तु 14:27 में यीशु ने उन्हें बताया था, ''तुम सब ठोकर खाओगे!''

जब हम अपने प्रभु की भविष्यद्वाणियों पर विश्वास करने से मना करते हैं तो हम उसे दु:खी करते हैं। वह हमारे साथ और हमारे लिए दु:खी होता है, परन्तु वह उनका जो दु:खी होते और पाप करते हैं, बड़ा उद्धारकर्त्ता है। पतरस को अपने अतिविश्वास के लिए दु:ख उठाना पड़ा क योंकि वह भूल गया था कि बढ़िया से बढ़िया लोगों में भी कमज़ोरियां होती हैं। कई बार हमें

यह मानना आवश्यक होता है कि हम अपने आपको वैसे नहीं जानते जैसा हमें लगता है कि हम जानते हैं।

वापस आकर पतरस ने फिर से बदल जाना था (देखें लूका 22:32; यूहन्ना 21:15-17)। परमेश्वर का बालक कई बार इतनी दूर चला जा सकता है कि उसे नये सिरे से मन फिराने आवश्यकता होती है (याकूब 5:19, 20)। पतरस का उदाहरण हमें यह उम्मीद देता है कि यीशु हर किसी को, जो मन फिराकर उसके पास लौट आता है, ग्रहण कर लेगा।

इस कहानी के द्वारा, हमें यह पता चलता है कि प्रभु की कोमलता और धीरज हमेशा हमारे साथ रहेंगे। ये हमें उसके प्रेम में ले जा सकता है (देखें 2 थिस्स. 3:5)। जिसने कभी कोई वायदा न तोड़ा हो और कभी बेईमानी न की हो, चाहे मन में ही हो, केवल वही पतरस पर दोष लगा सकता है। हम में कौन है जो यह करने का साहस रखता हो?

गतसमनी में यीशु की पीड़ा (14:32-42)

''मेरा मन बहुत उदास है'' (14:32-36)[42]

[32]फिर वे गतसमनी नामक एक जगह में आए, और उसने अपने चेलों से कहा, ''यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।'' [33]और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा, [34]और उनसे कहा, ''मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ: तुम यहाँ ठहरो, और जागते रहो।'' [35]फिर वह थोड़ा आगे बढ़ा और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए, [36]और कहा, ''हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।''

आयत 32. फसह के भोजन के बाद, यीशु और उसके प्रेरित अटारी वाले कमरे से जैतून पहाड़ पर **गतसमनी नामक एक जगह में** गए। गतसमनी की सम्भावित जगह यरूशलेम की दीवार से लगभग आधा मील दूर पहाड़ की पश्चिमी ढलान पर पहचानी गई है। पहाड़ के उस ओर से, मन्दिर के पहाड़ का पूरा दृश्य मिल जाता है, जिसे अब डूम ऑफ़ द रॉक नाम दिया गया है।[43]

''गतसमनी'' का अर्थ है ''कोहलुओं का स्थान।'' पुरातत्वविदों को बाग से सटी एक गुफ़ा में कोहलुओं का प्रमाण मिला है।[44] जैतून के कुछ पुराने पेड़ जो शायद सातवीं सदी तक के हैं, अभी हैं। इन वृक्षों की टहनियां इन सदियों के दौरान मुड़कर-मुड़कर गांठें बन गई हैं।

जैतून का पेड़ अपनी प्रकृति और विशेषताओं में विशेष पहचान रखता है। आम तौर पर जैतून का फल तोड़ने में सुविधा के लिए वृक्षों को छांटकर छोटे रखा जाता था; परन्तु छंटाई न होने पर वे साठ फुट से ऊंचे जा सकते थे।

यह हो सकता है कि 70 ई. में रोमी सेनापति टाइटस ने बहुत से उपलब्ध पेड़ों को क्रूस बनाने के लिए काट दिया हो। परन्तु जैतून की लकड़ी से अच्छे क्रूस नहीं बने होंगे।[45] जोसेफ़स ने भी लिखा है कि नाके बनाने के लिए जिनकी आड़ में रोमी लोग लड़ सकते हों, उस इलाके

में सभी पेड़ों को काट दिया गया था।[46]

यीशु ने अपने चेलों को समझाया, ''**यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।**'' गतसमनी बाग वह जगह थी जहां पर यीशु यरूशलेम में होने पर प्रार्थना के लिए जाया करता था। यह भूमि किसी धनवान की होगी जो यीशु को जानता था और उसे बाग का इस्तेमाल करने देता था।[47] लूका 22:39 में ''अपनी रीति के अनुसार'' वाक्यांश का इस्तेमाल उसके वहां पर प्रार्थना करने के सम्बन्ध में किया गया है। प्रार्थना करने के लिए बाग में जाने के लिए यीशु शाम के समय जाता होगा और रात का अधिकतर समय प्रार्थना में बिताता होगा।

आयतें 33-35. और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा। अपने आठ चेलों को छोड़कर यीशु अपने करीबी इन तीन जनों को अपने पास रखने और उसे प्रार्थना करते हुए देखने के लिए, साथ ले गया। इन तीन चुने हुओं पर उसने उस यादगारी रात में अपने भीतरी विचारों और अपने मन की निराशा को अधिक दिखाया।

ऐसे समय में यीशु अपने सबसे निकटतम मित्रों को अपने पास रखना चाहता था। दु:ख की हमारी सबसे बड़ी घड़ियों में हमारे पास मित्रों का होना बहुत सहायक हो सकता है, चाहे वे कुछ कहें या न। उनके होने या उनकी संगति से ऐसी सामर्थ मिल सकती है जो शायद किसी और बात से नहीं मिल सकती। ये तीनों याइर के घर (5:37) और यीशु के रूपांतर के समय (9:2), उसके साथ थे, और अब बाग में भी वे उसके साथ ही थे।

यीशु की भावनाओं के सम्बन्ध में, मत्ती 26:36, 37 कहता है कि वह ''उदास'' था, जबकि मरकुस उसे यह कहते हुए उद्धृत करता है, ''**मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ।**'' मरकुस में इस वाक्य से पहले यह टिप्पणी है कि यीशु ''बहुत ही अधीर और व्याकुल'' (14:33)। मरकुस में कई शब्द हैं जो यीशु की मनोदशा का वर्णन करते हैं। 14:33ख में दो शब्द ἐκθαμβέω (*ekthambeō*, ''अधीर'') और ἀδημονέω (*adēmoneō*, ''व्याकुल'') हैं।[48] 14:34 के अनुसार यीशु के मुंह से निकला शब्द περίλυπος (*perilupos*, ''उदास'') था।[49] क्रिया शब्द *adēmoneō* सुसमाचार के दोनों विवरणों में मिलता है, ''घर की याद सताना'' होना हो सकता है। इसी कारण आर. सी. ने फोस्टर ने सुझाव दिया है कि यीशु को अपनी सबसे बड़ी आवश्यकता के इस समय में, स्वर्ग की ओर अपने पिता की अत्यधिक याद सता रही होगी।[50] इस शब्द का अर्थ निश्चित तौर पर यह है कि यीशु पीड़ा से भरा हुआ था।

मरकुस उस बोझ की विशालता को दिखाता है जो उस रात यीशु के मन पर था। यीशु के दु:ख सहने के इस वचन को पढ़ना उसकी भावनाओं को समझने की कोशिश करना है। हम किसी दूसरे के मन को पूरी तरह से नहीं जान सकते, यीशु के मन को तो बिल्कुल नहीं। यह विवरण हमें बाग में यीशु की भावना की गहराई को समझने की कोशिश करने में बुरी तरह से अयोग्य होने का अहसास करवाता है।

लूका ने उस अनोखे पसीना आने की बात लिखी जो यीशु की पीड़ा के साथ निकला था: ''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बून्दों के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका 22:44)। ''पीड़ा'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''agony'' को यूनानी शब्द ἀγωνία (*agōnia*) से

लिप्यंत्रित किया गया है।[51] जोज़फ हैनरी थेयर ने इसकी परिभाषा ''कड़े मानसिक संघर्ष और भावनाएं, *कष्ट, व्यथा*'' के रूप में दी है।[52] इन विवरणात्मक शब्दों से उस भावनात्मक रात पर यीशु की सारी पीड़ा का पता चल जाता है।

कालांतर में डॉक्टरों द्वारा लगभग रोग विज्ञान की स्थिति वाले लोगों में लहू से भरा पसीना होने की बात बताई गई है। विलियम स्ट्राउड ने फ्रांस के चार्ल्स नौवें की बात बताई थी: ''उसके जीवन के अंतिम दो सप्ताहों में (मई 1754) उसके शरीर में से हर जगह में से लहू निकल रहा था, यहां तक कि उसकी त्वचा के छिद्रों में से भी ... इतना कि एक बार तो वह लहू से भरे पसीने से नहाया हुआ मिला।''[53] ऐसे ही विवरण उन लोगों के दिए गए हैं जिनका अत्यधिक खिंचाव के बाद लहू से भरा पसीना निकला। एक रिपोर्ट डेनमरकुस के एक नाविक की बताई, जिसका एक भयंकर तूफ़ान के दौरान पसीना लहू बनने लगा।[54] इस अवस्था को ''हिमाटीड्रोसिस'' या ''हिमोहाइड्रोसिस'' कहा जाता है।[55]

परन्तु लहू के इस पसीने के लिए कई और रोग भी हो सकते हैं। एंथनी ली. ऐश ने लिखा है, इस पर ''टीकाकारों के विचार चाहे अलग-अलग हैं कि यह वास्तव में क्या था, परन्तु आम तौर पर यह माना जाता है कि अत्यधिक दबाव में वास्तव में किसी को लहू का पसीना आ सकता है। यदि यह वास्तव में लहू न होता, तो इसे किसी और चीज़ के बजाय 'पसीने' से क्यों मिलाया जाता है।''[56] जे. एस. लामार ने यह निष्कर्ष निकाला: ''[लूका 22:44 में; KJV] 'मानो' गिरने के ढंग की नहीं बल्कि पसीने की बात करता है। यदि मानने की बात होती तो लहू का उल्लेख ही न किया जाता।''[57]

लोगों ने पूछा है, ''परमेश्वर के पुत्र, यीशु ने और बड़ी सामर्थ क्यों नहीं दिखाई?'' मैक्गार्वे ने यह कहते हुए इस प्रश्न पर बात की, ''हमें याद रखना होगा कि यीशु के लिए मरना ठहराया हुआ था और इस ठहराए होने या इसके ढंगों के साथ उसके अंदर के ईश्वर ने, हस्तक्षेप नहीं करना था।''[58] उसके बाग में प्रवेश करने के समय से लेकर अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा सामर्थ मिलने तक, उसमें मानवीय निर्बलता थी। यहां हम, कहीं भी और जगह से बढ़कर, यीशु को पूर्णतया मनुष्य के रूप में देखते हैं, जिसमें हमारे जैसी कमज़ोरियां हैं, परन्तु फिर भी वह पूरी तरह से परमेश्वर है।

यीशु ने अपने सबसे करीबी तीन मित्रों और चेलों से कहा कि उसके साथ **ठहरो और जागते रहो**। फिर **वह थोड़ा आगे बढ़ा** और **भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा**।

समय आ चुका था यानी वह क्षण जिसकी योजना परमेश्वर ने यीशु के लिए अपने आपको अपने शत्रुओं के सुपुर्द कर देने के लिए। उसके सिर पर था। उसने शीघ्र ही मर जाना था। ''घड़ी आ पहुंची'' (14:41) के अपने शब्दों के साथ उसे इसका पता होने का संकेत दिया। इस घड़ी का पता बहुत पहले से, बल्कि अनादिकाल से था, जब परमेश्वर ने छुटकारे की अपनी योजना को पहले से ठहराया या रखा था। फिर भी, प्रार्थना करते हुए यीशु ने कहा **कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए।**

एक स्वर्गदूत यीशु को उसकी पीड़ा में सामर्थ देता था (लूका 22:43), नहीं तो उसने इस पीड़ा को नहीं सह पाना था। इस अवसर के सम्बन्ध में, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि परमेश्वर का भय रखने के कारण यीशु की प्रार्थनाएं और विनतियां सुनी गईं (इब्रा. 5:7-9)।

परमेश्वर ने क्रूस पर अपने पुत्र से मुंह फेर लिया हो सकता है, जब उसने संसार के पाप उठाए हुए थे; परन्तु बाग में इस समय यीशु की शारीरिक पीड़ा में उसका दूत यानी स्वर्गदूत उसकी सहायता कर रहा था। हमारे प्रभु की चीखें सारी मनुष्यजाति को आत्मिक मृत्यु के साथ होने वाले भयों से छुड़ाने के लिए थीं।

आयत 36. अपनी प्रार्थना में यीशु ने मूल अरामी भाषा में **हे अब्बा** शब्द इस्तेमाल किया। इस शब्द में स्नेहपूर्ण लगाव है। परन्तु जो लोग इसे केवल बचपन में इस्तेमाल किए जाने वाला शब्द बनाने की कोशिश करते हैं, उनसे पूछा जाना चाहिए, ''यीशु ने 'पिता' के लिए और कौन सा अरामी शब्द इस्तेमाल किया होगा?''[59] यदि हम गहरे लगाव के रूप में इसकी समझ रखते हैं, और यदि हम इस अर्थ में परमेश्वर को ''हे अब्बा'' कह सकते हैं, तो जीवन के भारी बोझों को उठाते हुए हमारे लिए यह सामर्थ का बड़ा स्रोत होगा।[60]

स्पष्टतया इस शब्द का इस्तेमाल पूरी आरम्भिक कलीसिया में होता था (रोमियों 8:15; गला. 4:6)। यूनानी लोगों ने परमेश्वर की आदरणीय अभिव्यक्ति के रूप में आरामी भाषा के इस शब्द को सीख लिया था।[61] इसका वही अर्थ होगा, जो यूनानी πατήρ (*patēr*) का है, यानी **हे पिता** जो मरकुस 14:36 में इसके साथ मिलता है।[62] बच्चों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द *अब्बा* नहीं बल्कि *अबी* था जो कि और भी स्नेह भरा था।[63]

यीशु की प्रार्थना पिता की इच्छा के भीतर थी: **''तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।''** उसे पिता की अपार शक्ति का पता था; इस कारण इस प्रार्थना का अर्थ यह होगा, ''केवल तभी यदि यह तेरी नेक इच्छा के साथ मेल खाता है, तो कृपया यह कटोरा हटा ले।'' इन शब्दों में हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन की व्याख्या और सार है। पौलुस ने मसीही लोगों से यीशु द्वारा सिखाए इसी ''व्यवहार'' को अपनाने को कहा (फिलि. 2:5-8)। परमेश्वर की इच्छा को मानने का वह सिद्ध उदाहरण है।

यह आज्ञाकारिता का पता यीशु के सांसारिक माता-पिता को चल गया, जब वह बारह वर्ष का था (लूका 2:51, 52)। मन्दिर में उसने अपने स्वर्गीय पिता के आगे पूर्ण समर्पण को बिल्कुल वैसे ही दिखाया जैसे वह यूसुफ़ और मरियम का पूरी तरह से आज्ञाकार था। हम यूहन्ना के साथ यह कह सकते हैं कि अपनी खुद की स्वार्थी इच्छाओं से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा को मानने की उत्सुकता विश्वास से भरी प्रार्थना का सार है: ''जब हम जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है'' (1 यूहन्ना 5:14)।

जो ''कटोरा'' यीशु पीने को था वह उस मानसिक और शारीरिक पीड़ा का जिसे वह अपने ऊपर ले रहा था, रूपक था। उस ज़माने में, ज़हर के प्याले का इस्तेमाल आम तौर पर किसी अपराधी को मृत्यु देने के लिए दिया जाता था। यीशु के साथ इस सब का महत्व ''हमारी समझ से बहुत बाहर है।''[64]

''क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका?'' (14:37-42)[65]

[37]फिर वह आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा, ''हे शमौन, तू सो रहा है? क्या

तू एक घड़ी भी न जाग सका? [38]जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।'' [39]और वह फिर चला गया और उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। [40]फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। [41]फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा, ''अब सोते रहो और विश्राम करो, बस, घड़ी आ पहुँची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। [42]उठो, चलें! देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है!''

तसल्ली की किसी बात या समझ की उम्मीद से, यीशु कई बार उन चुने हुए तीन चेलों के पास वापस आया। हर बार उसका स्वागत उनकी अधखुली ऊंघती हुई आंखों ने ही किया। हम मान सकते हैं कि यदि मरियम वहां होती तो उसने ध्यान रखना था और उसे समझ आ जाना था (देखें 14:3-9)। पतरस ने अपनी वफ़ादारी की शेखी मारी थी, परन्तु वह यीशु के साथ जाग नहीं पाया। यदि उसे इस बात की समझ होती कि प्रभु को अपने साथियों की चौकस सहानुभूति, सावधानी, और आत्मिक सामर्थ की कितनी आवश्यकता थी, तो पतरस निश्चय ही ख़बरदार रहने की अपनी पूरी कोशिश करता।

आयत 37. यीशु ने आकर **उन्हें सोते पाकर** पतरस को आवाज़ देते हुए उसे ''हे शमौन'' कहकर बुलाया। इस अवसर पर यीशु के लिए पतरस के लिए ''शमौन'' नाम का इस्तेमाल सही था, न कि ''कैफा'' जिसका अर्थ ''चट्टान'' है, क्योंकि प्रेरित की स्वाभाविक कमज़ोरी अभी दिखाई दे रही थी। **''हे शमौन, तू सो रहा है?''** उसने पूछा **''क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका?''** पतरस को उसकी आने वाली परीक्षा की चेतावनी दे दी गई थी, परन्तु उसने सामर्थ पाने के लिए प्रार्थना नहीं की थी। उसे प्रार्थना की कितनी अधिक आवश्यकता थी, क्योंकि उस शाम उसे ''अपने जीवन की बड़ी परीक्षाओं में से एक का सामना करना पड़ना था।''[66]

आयत 38. यह स्वीकार करते हुए कि **आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है** यीशु ने प्रेरितों की निर्बलता के लिए अपनी डांट को हल्का कर दिया। यह जानते हुए कि शत्रु उनके चारों ओर घात लगाए हुए हैं, इन लोगों ने पिछली कुछ रातें भय में बिताई होंगी। चेलों ने यरूशलेम में कई रातें बिना सोये बिताई होंगी; उन्हें यीशु की हत्या के षड्यन्त्र का पता था, और उन्हें डर होगा कि कहीं उन्हें भी न मार डाल जाए (यूहन्ना 11:16)। बेशक बाग में वे भावनात्मक और शारीरिक रूप में थके हुए पहुंचे थे।

अपने चेलों से **जागते और प्रार्थना करते** रहने का यीशु का आग्रह कि वे **परीक्षा में न** पड़ें, शायद उतना उसके अपने लाभ के लिए नहीं था, जितना चेलों के लाभ के लिए था। ''चौकसी'' हमारे लिए हर समय नारा होना चाहिए। (ऐसी ही शिक्षा के लिए देखें इफि. 6:18.)

आयतें 39, 40. वह फिर चला गया और ... प्रार्थना की। फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं। दूसरी बार प्रार्थना करने के बाद यीशु जब अपने पहरेदारों के पास लौटा तो उन्हें फिर से सोते हुए पाया। तीनों सो रहे प्रेरित डांट के हक्कदार थे और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे **नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।** कई बार कुछ न कहना सबसे अच्छा होता है। कम से कम उन्होंने कोई बहाना नहीं बनाया। यदि वे प्रार्थना करते रहते तो उन्हें नींद नहीं आनी थी; परन्तु ''उनके मन प्रार्थना से भरे हुए नहीं थे।''[67]

आयतें 41, 42. यीशु ने प्रार्थना की थी। उसे बल मिला था और जो कुछ होने वाला था उसने उसे पूरी तरह से स्वीकार किया था। जब उसने प्रेरितों को अपने आपको सम्भालने की कोशिश करते हुए देखा तो उसने धीरे से उन्हें कहा, ''**अब सोते रहो और विश्राम करो**'' (14:41; देखें KJV)। NASB में है ''क्या तुम अभी तक सो रहे और विश्राम कर रहे हो? बस हो गया।'' उसने एक अजीब शब्द ἀπέχω (*apechō*, ''हो गया'') का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ ''बिल [या पैसे] चुका दिया गया'' हो सकता है। उन्होंने जो कुछ उनसे वे कर सकते थे, करने की कोशिश की। शरीर की उनकी निर्बलता ने चाहे उन्हें चौकस रहने से रोक दिया, परन्तु उसकी सेवा में रहते हुए उन्होंने ''स्वामी को अपना बिल चुका दिया था।''[68]

यीशु के शब्दों ''**बस, घड़ी आ पहुंची**'' का अर्थ हो सकता है कि अब वह क्रूस के लिए पूरी तरह से तैयार था। उसने जी जान से प्रार्थना की थी और मरने वाला हो गया था; परन्तु स्वर्गदूत ने उसे दिलेरी दी थी, और अब वह मरने की प्रक्रिया का सामना करने को तैयार था। उसके मन में पूर्ण शांति थी। एक बार फिर से उसके पास वह शांति थी ''जो सारी समझ से परे है'' (फिलि. 4:7; NKJV; NRSV)। क्रूस से उसकी अंतिम पुकार से पहले हमें उसकी पीड़ा की कोई और चीख सुनाई नहीं देती (देखें 15:37)।

हमें वैसे ही प्रार्थना करना सीखने की कोशिश करनी चाहिए, जैसे यीशु ने की। उसका उदाहरण हमें पीड़ा और संताप से बचने के लिए तरसने देता है, परन्तु यह हमें परमेश्वर पिता की इच्छा को स्वीकार करने और मानने के लिए मजबूर भी करता है।

''जागते रहो'' (मरकुस 14:38) और ''सोते रहो'' (14:41; KJV) टिप्पणियों के बीच यीशु ने उन मशालों को देखा होगा, जो उसे गिरफ्तार करने के लिए नगर से आने वालों के हाथों में थीं (देखें यूहन्ना 18:3)। जब उसने कहा, ''**उठो चलें**'' (मरकुस 14:42), तो वह चाहता होगा कि चेले सुरक्षित जगह में चले जाएं और वह भीड़ का सामना खुलकर अकेले करे।

इन शत्रुओं को शीघ्र ही यह पता चल जाना था कि यीशु उनसे डरकर छिप नहीं रहा था। वह उनसे मिलने के लिए दलेरी से आग बढ़ा। ऐसा करते हुए उसने यहूदा के विश्वासघाती चुम्बन को अनावश्यक बना दिया।

चेले अब पूरी तरह से चौकस हो गए थे और उन्हें समझ में आ गया होगा कि **मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है** (14:41)।[69] अब उन्हें उस त्रासदी का सामना करना पड़ना था जिस पर प्रभु के ''जागते रहो और प्रार्थना करते रहो'' कहने पर ध्यान देना आवश्यक नहीं होना था।

यीशु का जीवन इस ''घड़ी'' के लिए ही था जो आ चुकी थी।[70] उसने घोषणा की, ''**मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है!**'' (14:42)। यहूदा के आ जाने पर चेलों को पता चल जाना था कि यीशु फसह के भोज पर किसकी बातें कर रहा था (14:18–21)।

यीशु का विश्वासघात और पकड़वाया जाना (14:43–52)[71]

[43]वह यह कह ही रहा था कि यहूदा जो बारहों में से एक था, अपने साथ प्रधान याजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़ लेकर तुरन्त आ पहुँचा, जो तलवारें और लाठियाँ लिये थी। [44]उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूँ

वही है, उसे पकड़कर यत्न से ले जाना। [45]वह आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा, ''हे रब्बी!'' और उसको बहुत चूमा। [46]तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया। [47]उन में से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींच कर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया। [48]यीशु ने उनसे कहा, ''क्या तुम डाकू जानकर मुझे पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियाँ लेकर निकले हो? [49]मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा: परन्तु यह इसलिये हुआ है कि पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों।'' [50]इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

आयत 43. वह यह कह ही रहा था कि यहूदा जो बारहों में से एक था, अपने साथ ... एक बड़ी भीड़ लेकर ... पहुँचा। वह जब अपने प्रेरितों को प्रोत्साहित कर रहा था तभी पकड़वाने वाला भीड़ लेकर आ गया। यहूदा को पता था कि यीशु रात को कहां मिलेगा; उसने बाग में प्रार्थना कर रहे होना था। गिरे हुए प्रेरित के पीछे यहां तक एक बड़ी भीड़ आ गई। उनके हाथों में बहुत सी मशालें (''दीपकों और मशालों''; यूहन्ना 18:3), और **तलवारें और लाठियां** थीं (''डंडे''; मत्ती 26:47; KJV)। दीपकों मुख्यता उनके मन में यीशु और उसकी सामर्थ के अपने भय के कारण ली होंगी। फसह का समय था इसलिए यह पूर्णिमा होगी; परन्तु यह बादलों के पीछे या पहाड़ की परछाई में छिप गई होगी।[72] यह तथ्य कि कुछ लोगों के पास तलवारें थीं, यह साबित नहीं करता कि रोमी सिपाहियों ने यीशु को पहले से दोषी ठहराया हुआ अपराधी मान लिया था। वे गिरफ्तारी करवाने के लिए केवल मन्दिर की पुलिस की सहायता करने के लिए आए थे। इन अधिकारियों को मन्दिर और इसकी सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए कई बार बुला लिया जाता था। ''लाठियां'' (ξύλον, *xulon*) केवल लकड़ी के तख्ते नहीं थे; वे वास्तव ''शहतीर'' हो सकते हैं।[73] यीशु के विरोध में इकट्ठा हुए वे लोग बल का इस्तेमाल करने को तैयार थे।

वे **प्रधान याजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से** आए थे। यूहन्ना 18:3, 12 में इस टोली को ''सैनिकों का दल'' (σπεῖρα, *speira*) कहा गया है जिसका अर्थ छह सौ के लगभग सिपाहियों की रोमी सेना का दसवां भाग था। इस शब्द का सही-सही अनुवाद ''भीड़'' हो सकता है। इस ''दल'' (KJV) में लेवीय याजक और यहूदी अधिकारी शामिल होंगे; परन्तु NASB के अनुवादकों ने इसे हाकिम की ओर से अधिकृत टोली बताया है।[74] यह अजीब लगेगा कि पिलातुस यीशु को गिरफ्तार करने में सहायता के लिए अपने सिपाहियों को अनुमति देकर, पहले ही से यहूदी अगुओं के साथ सहयोग कर रहा था।

यूहन्ना 18:6 हमें बताता है कि यीशु के ''मैं हूं'' कहने पर झुण्ड पीछे गिर गया। ऐसा लगता है कि जैसे सामने वाले लोग पीछे वाले लोगों के ऊपर गिर पड़े, जिससे वे भी पीछे की ओर गिर गए! सशस्त्र सिपाही अपना संतुलन बनाने की कोशिश करते हुए जल्दी से खड़े हो गए और इस लगभग हास्यास्पद स्थिति से सम्भल गए।

आयत 44. यहूदा ने कहा कि वह यीशु के पकड़वाने के समय एक इशारा देने के लिए उसे चूमेगा: **''जिसको मैं चूमूँ वही है।''** किसी रब्बी को चुम्मे के साथ सलाम करने की प्रथा थी और यहूदा ने इस प्रथा को निडरतापूर्वक माना। ''चूमा'' (φιλέω, *phileō*) का अर्थ दिखाने

के ढंग में यानी गर्मजोशी से चुम्बन लेना है।[75] केवल लूका इस बात को दिखाता है कि यीशु ने यहूदा के चुम्बन देने से भी पहले यह जान लिया और बता दिया था:

> वह यह कह ही रहा था कि एक भीड़ आई, और उन बारहों में से एक जिसका नाम यहूदा था उनके आगे-आगे आ रहा था। वह यीशु के पास आया कि उसका चूमा ले। यीशु ने उससे कहा, ''हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?'' (लूका 22:47, 48)।

भीड़ ने सोचा होगा कि या तो यीशु आगे से लड़ेगा या भाग जाने की कोशिश करेगा। उन्हें यह समझ ही नहीं थी कि वह वह कौन है। यीशु पहले ऐसा सामना किए जाने से बचता था, क्योंकि अभी उसका समय नहीं आया था (देखें यूहन्ना 7:6, 8, 30; 8:20)। इस भीड़ को इसका कुछ पता नहीं होना था। उन्हें केवल इतना पता था कि उसे **पकड़कर यत्न से ले जाना** है, जिसकी पहचान यहूदा ने करवाई थी।

आयत 45. यहूदा **आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा, ''हे रब्बी!'' और उसको बहुत चूमा।** यहूदा ने प्रभु को चूमा और उसे ''हे रब्बी'' कहकर बुलाया, जो कि सिपाहियों के लिए यह निशान था कि उन्हें किसे पकड़ना है। जो कुछ उसने किया उससे उसने अपने आपको खुलकर दिखा दिया। यीशु ने यहूदा के पहले से ठहराए चिह्न से भी पहले अपनी पहचान बताकर अपने आपको अर्पण कर दिया था, परन्तु चांद और मशालों की मध्यम रोशनी में यह संकेत अभी भी आवश्यक था।

यह व्यक्ति जो किसी समय प्रेरित था, बुरा काम कर रहा था। वह जानता था कि यह गलत है और बाद में उसे इसका पछतावा भी हुआ; परन्तु ''पकड़वाने वाले ने यह बिल्कुल नहीं सोचा कि यहूदा का चुम्बन हर जगह एक मुहावरा बन जाना था।''[76]

आयत 46. यीशु की पहचान हो जाने पर, भीड़ ने **उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया**। बाद वाला क्रिया शब्द κρατέω (*krateō*) संकेत देता है कि उन्होंने उसे ''कसकर पकड़ लिया।''[77]

आयत 47. तभी **उन में से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींच** ली। यीशु के उसे रोकने से पहले ही उसने **महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया** (देखें मत्ती 26:51)। यूहन्ना 18:10 इसमें और विवरण जोड़ देता है कि तलवार चलाने वाला पतरस था, दास का नाम मलखुस था, और उसका दायां कान उड़ाया गया था (देखें लूका 22:50)। पतरस के निशाने पर केवल उसका कान नहीं था। दास झुक गया होगा जिस कारण उसका केवल कान उड़ा; यह तथ्य कि उसका दायां कान कटा, संकेत देता हो सकता है कि पतरस का बायां हाथ चलता था।

लूका 22:49 में जोड़ा गया है कि यीशु के किसी चेले ने पूछा था, ''हे प्रभु क्या हम तलवार चलाएं?'' यूहन्ना 18:10 के अनुसार, जैसा कि हमें उम्मीद हो सकती है, पतरस ने उसके उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की। पतरस यह साबित करने को तैयार था कि वह यीशु के लिए मरने को तैयार है। सम्भवतया यदि उसे लड़ने दिया जाता तो वह आनन्द से हाथों में तलवार लेकर मरता। आम तौर पर किसी के मित्रों के लिए अपने आपको रोक कर नैतिक साहस दिखाने से शारीरिक रूप

में लड़ना आसान होता है। मसीही व्यक्ति के लिए बिना हथियारों के खड़े होकर यह कहना कि ''मैं उसका चेला हूं'' और फिर परिणामों को स्वीकार करने के लिए, अंतिम सांस तक लड़ने के बजाय बड़े साहस की आवश्यकता होती है।

दूसरे प्रेरितों ने बाद में अपने आपसे पूछा होगा, ''मैं उसके लिए क्यों नहीं लड़ा? मैं उसके साथ मरने क्यों नहीं गया?'' (देखें यूहन्ना 11:16)। परन्तु पतरस ने नहीं। वह लड़ना चाहता था परन्तु प्रभु ने उसे लड़ने नहीं दिया। मत्ती 26:52-54 पतरस से कही यीशु की और बात बताता है:

> ''अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नष्ट किए जाएंगे। क्या तू नहीं जानता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? परन्तु पवित्रशास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, कैसे पूरी होंगी?''

यह बात हर कहीं लागू नहीं होती कि तलवार उठाने वालों का अंत हमेशा तलवार से ही हो; परन्तु सभ्य समाजों में सामान्य नियम यही है कि खून खराबे से शासन करने वाले लोगों को दण्ड खून-खराबे से ही मिलता है। प्राचीनकाल में युद्ध से जीते हर साम्राज्य के आज खण्डहर मिलते हैं, जबकि मसीह का शांति वाला राज्य बना रहता है।

जैसा कि विलियम बार्कले ने कहा, हम भी इस पर प्रसन्न होने के लिए आकर्षित होते हैं कि पतरस में तलवार निकालने का साहस था,[78] चाहे ऐसा करने से यीशु के राज्य को ही चुनौती मिल जानी थी। हमारा प्रभु नहीं चाहता कि उसके मसीही सिपाही इस प्रकार से लड़ें (देखें यूहन्ना 18:36)। पतरस को छूट देना हमारी अपनी मानवीय निर्बलता को छूट देना होगा। यीशु ने उसके लिए जो उसने किया, उसे डांटा, हमें भी डांटा जाना चाहिए। यूहन्ना 18:11 के अनुसार ''जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या में उसे न पीऊं।'' एक बार फिर से, पतरस की मंशा गलत नहीं थी, परन्तु वह परमेश्वर की योजना की राह में रुकावट बन रहा था (देखें मत्ती 16:23; मरकुस 8:33)।

मत्ती, मरकुस, और यूहन्ना जहां यह बताते हैं कि कान काटा गया, वहीं लूका 22:51 इससे आगे बताता है कि यीशु ने इसे जोड़ दिया। परन्तु यह आश्चर्यकर्म क्रुद्ध भीड़ की उलझन के बीच अंधेरे में हुआ था। अपनी लाइटों के साथ भी, बाग में उपस्थित लोग देख नहीं पाए होंगे कि क्या हो रहा है। यह चंगाई बिल्कुल एक आश्चर्यकर्म थी जो सम्भवतया किसी और बात से बढ़कर तरस के कारण था।

बेशक मलखुस को पता था कि क्या हुआ है। यदि उसने इस पर विचार किया हो कि उसका कान कैसे जोड़ दिया गया था, तो हो सकता है कि वह बाद में यीशु का चेला बन गया हो। कोई चकित हुए बिना नहीं रह सकता कि उसने इस आश्चर्यकर्म के बारे में कितने और लोगों को बताया होगा; कम से कम बाग में उपस्थिति उसके रिश्तेदारों में से एक ने तो यह सब होते देखा ही था (देखें यूहन्ना 18:26)।

यीशु ने इस आदमी के कान को जोड़कर, उस दुष्ट भीड़ के सामने, जो उसे पकड़ने के लिए आई थी, अपने आपको सौंपने से पहले, अपनी सामर्थ और अपनी करुणा को अंतिम बार दिखाया। निश्चय ही यह घटना इसका अतिरिक्त प्रमाण है कि यदि यीशु चाहता तो वह आसानी

से इस भीड़ को हरा सकता था।

मरकुस में इस घटना की बातें, हो सकता है कि इसलिए बताई गई हों, क्योंकि सुसमाचार के इस विवरण के लिखे जाने तक मलखुस मर चुका था। परन्तु पतरस के लिए जिसने तलवार से यह प्रहार किया था, उसकी पहचान बताना सुरक्षित नहीं होगा, इस कारण उसका नाम बाद में यूहन्ना द्वारा लिखे जाने के लिए छोड़ दिया गया (देखें यूहन्ना 18:10)। एक और सम्भावना यह है कि मरकुस ने पतरस का इस कारण नाम नहीं दिया क्योंकि प्रेरित ने जहां भी इन घटनाओं को बताया वहां अपना नाम नहीं दिया।

प्रभु ने अपने प्रेरितों को पहले से बता दिया था कि उनकी दो तलवारें ही काफ़ी थीं (लूका 22:38)। मसीह के उद्देश्य के लिए वे काफ़ी होंगी, शायद जंगली जानवरों को भगाने या लुटेरों से बचाने के लिए, परन्तु बड़ी भीड़ लेकर आने वाले सरकारी अधिकारियों से लड़ने के लिए वे काफ़ी नहीं होनी थीं। ये लोग सांसारिक राज्य के लिए युद्ध नहीं छेड़ सकते होंगे। यीशु के राज्य के लिए हथियारों की आवश्यकता नहीं है (देखें यूहन्ना 18:36; 2 कुरिन्थियों 10:4, 5) इस कारण उनकी तलवारें काम में नहीं आनी थीं।

मसीह की कलीसिया के लिए लड़ाई में सांसारिक हथियारों में कोई ताकत या महत्व नहीं है। सांसारिक बल में उन लोगों को जो आत्मिक सच्चाई को जानते, समझाने की कोई शक्ति नहीं है। सच्चाई के हमारे हथियार युद्ध के हथियारों से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं (देखें 2 कुरि. 10:4, 5)। हमारे शत्रु परमेश्वर के सच्चे ज्ञान से लड़ते हैं। यीशु ने युद्ध के हथियारों के साथ अपना बचाव नहीं किया या अपने राज्य को बढ़ाना नहीं चाहा। यदि यीशु इस हिंसा को स्वीकृति दे देता तो बाद में पिलातुस ने उसके इस दावे को नकार देना था कि उसका राज्य शांति का राज्य है।

आयतें 48, 49. यीशु को गिरफ्तार करने के लिए आई इस भीड़ का सामना करने पर उसका बचाव केवल यह था: **''क्या तुम डाकू जानकर मुझे पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियाँ लेकर निकले हो?''** (14:48)।[79] उसने आगे कहा, **''मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा''** (14:49)। वे उसे कानूनी तौर पर दिन के समय, जब वह मन्दिर में उपदेश देता था, पकड़ सकते थे; परन्तु ऐसी गिरफ्तारी करने से वह बहुत डरते थे।[80] यहूदी व्यवस्था में नियम था कि व्यक्ति को रात के समय अपराध करते हुए पकड़ा जाए। इस अवसर पर यीशु को उनकी कायरता का पता था और उसने उन्हें अपनी ही व्यवस्था को न मानने के लिए डांटा। वे यीशु को मन्दिर में हिरासत में नहीं ले सकते थे, जहां अधिकतर भक्त लोग उपस्थित होने थे, क्योंकि उन्हें उन लोगों का जो उसमें विश्वास करते थे, डर था। यीशु ने भीड़ के रूप में उनके आने में उनकी कायरता को दिखाया। वह इस घटना का वास्तविक चलाने वाला था।[81] जो हो रहा था उसके, प्रधान याजक तो तमाशबीन थे ही, उनके साथ आई पुलिस भी बेबस थी।

मत्ती 26:53 के अनुसार, यीशु अपने पिता से विनती करके स्वर्गदूतों की सेना मंगवाकर, उस सब को जो हो रहा था, रुकवा सकता था। फिर भी उसने उन लोगों के लिए जिन्होंने उसे ग्रहण करना था, उद्धार दिलाने के लिए, अपने आपको बलिदान देना चुना।

यीशु ने कहा कि यह सब जो हुआ **इसलिये हुआ है कि पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों**

(मरकुस 14:49), और इस कारण अंधकार की इस घड़ी के लिए उसने अपने आपको सौंप दिया (देखें लूका 22:53)। बाग में आए लोग उसके कड़े विरोधी थे, क्योंकि गिरफ्तारी को उनके द्वारा यीशु पर हाथ डालकर, उसे पकड़ने के रूप में दिखाया गया है (मरकुस 14:46)। वे उसे उसकी गिरफ्तारी, पेशियों और क्रूसारोहण के दौरान निर्बल और घिनौना दिखाना चाहते थे।

आयत 50. यूहन्ना 18:3, 12 में ''दल'' शब्द का इस्तेमाल यह हो सकता है कि यहूदी अगुओं के साथ आए अंटोनिया के किले के रोमी सिपाहियों के लिए इस्तेमाल हुआ हो। मन्दिर की पुलिस के साथ वे एक छोटी सेना जैसे लगते होंगे। इस घटना के बीच, चेलों को यह पता चलने पर कि अपना बचाव नहीं करेगा और मसीह भीड़ के सामने लाचार होगा **सब उसे छोड़कर भाग गए**। यीशु उनसे यही करवाना चाहता था। उसने थोड़ी देर के लिए उन्हें दुःख सहने से बचने के लिए यही चाहा था। यूहन्ना 18:8 से पता चलता है कि यीशु ने उनसे उन्हें जाने देने को कहा।

प्रभु ने पहले से बता दिया था कि उस रात उन सब ने ठोकर खानी थी (मरकुस 14:27), और उसके साथियों के भाग जाने से पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो गई थी। अपने साथियों द्वारा अकेला छोड़ दिए जाने पर, उद्धारकर्त्ता अभी भी कह सकता था, ''मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है'' (यूहन्ना 16:32)।

आयतें 51, 52. जवान जो **उसके पीछे हो लिया**, उसे आम तौर पर यूहन्ना मरकुस माना जाता है, क्योंकि कहानी को बताने वाला सुसमाचार का लेखक केवल वही था। ऐसा लगता है कि मरकुस अपनी गवाही ही दे रहा था। इसके अलावा यह विवरण, एक जवान के रूप में उसके भय को दिखाता है; क्योंकि आम तौर पर व्यक्ति अपने कपड़ों को सम्भालने के लिए लड़ता है परन्तु वह जान बचाने के लिए **नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए**। चादर को σινδών (*sindōn*) कहा गया है जो कि सूती कपड़ा था। यह महंगा होगा क्योंकि ऐसे कपड़े आम तौर पर मध्यम वर्ग के लोगों द्वारा भी नहीं पहने जाते थे। यह विवरण इस विचार का समर्थन करता है कि अनाम युवक मरकुस था क्योंकि वह किसी बड़े परिवार में से होगा। प्रेरितों 12:12 कहता है कि मरकुस की माता का बड़ा सा घर था, जहां कलीसिया की सभाएं हो सकती थीं इस कारण कइयों का मानना है कि यह ''बड़ी अटारी'' वाला वही घर था (मरकुस 14:15; लूका 22:12) जहां यीशु और उसके चेलों ने फसह मनाया था।[82] यह इसका और प्रमाण हो सकता है कि मरकुस अपने बारे में ही लिख रहा था।

इस जवान को उसकी जिज्ञासा यीशु की गिरफ्तारी को देखने के लिए ले खींच आई होगी। हो सकता है कि उसने कुछ लोगों को बातें करते हुए सुना हो और वह देखना चाह रहा हो कि क्या हो रहा है।[83] फिर उसे पता चल गया और वह भाग गया, **लोगों ने उसे पकड़ा। पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया।** अपने वहां होने की बात कहना, मरकुस का यीशु की गिरफ्तारी के आस पास की घटनाओं की पुष्टि करने का ढंग हो सकता है। यह, यह कहने का ढंग था कि ''मैं वहीं था!'' इस असामान्य विवरण को जोड़ने का कारण जहां भी रहा हो परन्तु इसके उद्देश्य के रूप में अनुमान लगाना दिलचस्प है।

यीशु की पेशियों के विवरण में बाद की किसी भी बात से इस कहानी का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तथ्य इसे एक तर्कसंगत सम्भावना बना देता है कि यह लेखक के जीवन की घटना

का व्यक्तिगत विवरण है।[84]

काइफ़ा के सामने यीशु (14:53-65)

झूठे गवाहों की गवाहियों का आपस में मेल न खाना (14:53-59)[85]

[53]फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब प्रधान याजक और पुरनिए और शास्त्री उसके यहाँ इकट्ठे हो गए। [54]पतरस दूर ही दूर उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक गया, और प्यादों के साथ बैठ कर आग तापने लगा। [55]प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली। [56]क्योंकि बहुत से उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उनकी गवाही एक सी न थी। [57]तब कुछ लोगों ने उठकर उस के विरुद्ध यह झूठी गवाही दी, [58]''हम ने इसे यह कहते सुना है, 'मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा,जो हाथ से न बना हो।''' [59]इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली।

आयतें 53, 54. यीशु की पेशियां पुरोहितों और सरकारी या यहूदी और रोमी दो प्रकार से आगे बढ़ीं। यहूदी पेशियां पहले हुई और रोमी पेशियां बाद में। आरम्भ **वे यीशु को महायाजक के पास ले गए**, जिसके पास **सब प्रधान याजक और पुरनिए और शास्त्री** इकट्ठा हुए हुए थे (14:53)। तभी हमें बताया जाता है, **पतरस दूर ही दूर उसके पीछे-पीछे ... गया**; वास्तव में अंत में वह **महायाजक के आंगन तक** चला गया जहां वह **बैठकर आग तापने लगा** (14:54)।

केवल यूहन्ना ही बताता है कि यीशु थोड़ी देर पहले गद्दी से उतरे महायाजक हन्ना के घर ले जाया गया (यूहन्ना 18:12-14)। यह शायद उसके प्रति आदर था या उस योजना में शामिल था जो हन्ना ने ही बनाई थी। हो सकता है कि वह यीशु को गिरफ्तार करने में अगुआई कर रहा हो।

रोमियों ने हन्ना को उसके पद से उतार दिया था (जो कि 6-15 ई. में हुआ), परन्तु आधिकारिक तौर पर यहूदी लोग अभी भी उसे महायाजक मानते होंगे। इससे यह पता चल जाता है कि लूका 3:2 हन्ना और काइफा दोनों[86] को महायाजक क्यों बताता है।[87] मरकुस 14:63 संकेत देता है कि काइफ़ा कपटी था जिसे नियम तोड़ने या निर्दोष लहू बहाए जाने की कोई परवाह नहीं थी,[88] परन्तु अत्यधिक पूर्वधारणा के साथ मिली यह बेईमानी उसके यह मानने के कारण हो सकती है कि यीशु झूठा गुरु है।

हन्ना के घर से (यूहन्ना 18:12-23), यीशु को हन्ना के दामाद काइफ़ा के घर ले जाया गया (मत्ती 26:57; यूहन्ना 18:24)। वह वर्तमान महायाजक था, जिसे रोम ने नियुक्त किया था। वह 18 से 37 ई. तक पद पर रहा।[89] यह पूछताछ उसके महल के आंगन में हुई (मरकुस 14:54)। हन्ना की तरह उसी घर में काइफ़ा के कमरे होंगे।[90]

आयत 55. काइफ़ा के सामने पेशी के बाद दोषी ठहराने के लिए अंतिम मत के लिए महासभा की बैठक सुबह-सुबह बुलाई गई (14:53)। सुबह-सुबह बुलाई गई यह बैठक, यह तय करने की कोशिश करने के लिए थी कि यीशु पर क्या अभियोग लगाया जाए, एक बड़ी पंचायत के जैसी थी, परन्तु निर्णय लेने में **सारी सभा** (συνέδριον, *sunedrion*)

शामिल थी।[91] महासभा के सदस्यों के दिमाग में यह तो था कि वे यीशु पर कोई न कोई आरोप लगाकर उसे दोषी ठहरा देंगे। परन्तु लोगों के लिए और रोमी अधिकारियों के लिए विश्वसनीय लगने वाला होने के लिए, उन्हें ऐसा दोष ढूंढ़ना पड़ना था। महासभा के अगुओं को ऐसा करना आवश्यक था, क्योंकि रोम ने यहूदियों को किसी को मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं दिया हुआ था। उन्हें पुलिस के अधिकारों जैसी शक्तियां ही दी गई थीं जिनमें वे यहूदी धार्मिक मामलों को देख सकते थे। सभा के लिए यीशु पर आरोप लगाना बड़ा कठिन था, क्योंकि वे **यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली**।

इस दिखावटी पेशी में महासभा ने किसी निर्दोष को मारने के लिए न्याय के सब यहूदी नियमों को तोड़ दिया। यूहन्ना 11:47-53 से पता चलता है कि प्रधान याजक, फरीसी और काइफ़ा ने मसीह की मृत्यु का षड्यन्त्र रचा था। यूहन्ना 19:6 बताता है कि पिलातुस के सामने ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!'' चिल्लाने वाले प्रधान याजक और अधिकारी ही थे।

यीशु के मुकदमे में बहुत से नियमों को तोड़ा गया था। उसकी पेशियों के हर भाग में अवैधताओं पर किताबें लिखी जा चुकी हैं।[92] महासभा के इकहत्तर सदस्य अर्धचक्र में बैठते थे ताकि हर सदस्य दूसरों के चेहरों को देख सके। रब्बियों के छात्र पास बैठते थे और उन्हें पेश होने वाले किसी भी व्यक्ति की ओर से बोलने की अनुमति होती थी परन्तु उसके विरोध में नहीं। किसी पेशी के लिए बैठक रात को नहीं बुलाई जा सकती थी, परन्तु यह नियम तोड़ दिया गया। मृत्यु दण्ड वाला कोई भी मुकद्दमा फसह के अवसर जैसी संध्या पर आरम्भ भी नहीं हो सकता था।[93] मृत्यु दण्ड देने का निर्णय होने पर दण्ड दिए जाने से पहले एक रात का अंतर होना आवश्यक था। यह आदेश इसलिए दिया जाता था कि यदि किसी सदस्य का मन बदल जाए या कोई ऐसा कारण पता चल जाए, जिससे दया की जा सकती हो। उन्हीं में से किसी को आरोपी व्यक्ति का बचाव करने के लिए चुना जाना आवश्यक था, परन्तु यीशु के लिए ऐसा नहीं हुआ।

एक अस्पष्ट परम्परा में कहा जाता है कि कुछ लोग ये बातें कहने के लिए आगे आए: ''मैं कोढ़ी था और उसने मुझे शुद्ध किया। मैं अंधा था और उसने मुझे आंखें दी। मैं बहरा था और उसने मुझे चंगा किया। मैं लंगड़ा था और उसने मुझे चलने के योग्य बनाया। मुझे लकवा हो गया था और उसने मुझे फिर से चंगा कर दिया।''[94] वास्तव में ऐसा हुआ हो या नहीं, परन्तु उस रात सभा ऐसे प्रमाण सुनने को तैयार नहीं थी। महासभा यदि चाहती तो उनके पास ऐसे बहुत से गवाह आ सकते थे: सैकड़ों लोग गवाही दे सकते थे कि यीशु ने उन्हें चंगा किया था, परन्तु यदि उन्हें अवसर मिलता।

आयत 56. अपराध किए जाते रहे। यहूदी व्यवस्था में किसी के अपने अंगीकार कर लेने के आधार पर उसकी मृत्यु देने की मनाही थी। व्यवस्था में कहा गया था कि आरोपी को मृत्यु के दण्ड को घोषित करने के लिए कम से कम दो गवाहियां आवश्यक हैं (देखें व्यवस्थाविवरण 17:6)। पहले तो यीशु के विरुद्ध बोलने के लिए कोई गवाह नहीं मिला। बुलाए गए झूठे गवाह **उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे**। परन्तु उनकी बातें एक-दूसरे से मेल नहीं खाती थीं। जिससे उनकी गवाही अमान्य हो गई। गवाहों के विरोधाभास ने पूरे मुकद्दमे को महासभा का तमाशा बना दिया।

कितने दु:ख की बात है कि धार्मिक अगुओं ने अपने मुकद्दमे के लिए लोगों विशेषकर पवित्र

पर्व के अवसर के पर झूठ बोलने को कहा![95] जब किसी को यह विश्वास हो कि वह हर बात में सही है तो यह मान लेना लुभाने वाला हो सकता है कि जो कुछ भी वह करता है वह सही है। यीशु के शत्रुओं ने रोमी अदालत के सामने उस पर आरोप लगाने के लिए किसी भी विश्वसनीय आधार को मान लिया होगा। उन्होंने पहले यह ठाना हुआ था कि यीशु को मारना ही है (मत्ती 26:59; 27:1; मरकुस 14:1, 55; यूहन्ना 11:53)।

आयत 57. यह तो साफ़ है कि यीशु के विरोध में पहले का कोई भी ओराप, जैसे सब्त के नियम को तोड़ना, प्रभावी नहीं होना था। इस संदर्भ में यहूदी अगुओं ने उनका उल्लेख नहीं किया। रोम किसी को मारने के लिए धार्मिक जुगतों को आधार नहीं मानता था। कार्यवाहियां बिना उसी आधार पर होनी थी जो हन्ना और काइफ़ा ने ठहराया था। अपनी बात से पीछे न हटने के इरादे वाले यहूदी अगुओं ने केवल उन्हीं की बात सुनीं, जिन्होंने **उठकर उस के विरुद्ध झूठी गवाही दी**।

आयतें 58, 59. यीशु को दोषी ठहराने के प्रयास में, उन्होंने गवाही दी, ''**हम ने इसे यह कहते सुना है, 'मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा,जो हाथ से न बना हो।**''' मरकुस में मन्दिर को फिर से बनाने की यीशु की बात से सम्बन्धित उसके विरोध में आरोप का पूरा विवरण है। यदि यीशु ने सचमुच में यह कहा था कि वह उस मन्दिर को जो खड़ा था, गिराकर तीन दिनों में फिर से बना देगा, तो यह मृत्यु दण्ड के लिए आधार के बजाय केवल शेखी मारना माना जाता था। प्रधान याजकों और शास्त्रियों ने मन्दिर की उसकी बात को गलत समझा था और उसका गलत इस्तेमाल किया था। गवाहों की गवाही भी आपस में मेल नहीं खाती। आयत 59 कहती है कि **इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली**। यीशु ने जो कुछ वास्तव में कहा था, वह यूहन्ना 2:19 में मिलता है। यूहन्ना के इस भविष्यद्वाणी को रखने और इसकी व्याख्या किए बिना, हमें यह समझ में नहीं आना था कि यीशु पर आरोप लगाने वाले क्या कह रहे थे। यीशु अपनी शारीरिक देह की बात कर रहा था न कि मन्दिर की; फिर भी उसके विरुद्ध कोई भी आरोप ढूंढ़ने के लिए इन धार्मिक अगुओं को केवल यही शब्द मिले।

पिलातुस को भी पता था कि उनका इरादा न्याय देने का नहीं है। उसने उन पर ''डाह'' से काम करने का आरोप लगाया (15:10; मत्ती 27:18)। इन सब पेशियों में, यीशु की ओर से बोलने वाला उसका कोई साथी नहीं था। किसी ने भी इन शक्तिशाली, अत्यधिक पूर्वधारणा से भरे हुए अगुओं के विरोध में जाने का साहस नहीं किया।

यदि निकुदेमुस वहां था, तो उसने अपनी ज़बान पूरी तरह से बंद रखी। पहले यीशु का थोड़ा बहुत बचाव करने की कोशिश करने पर, उसके साथियों ने उसका मज़ाक उड़ाया था (यूहन्ना 7:50-52)। तीखे विवाद के समय में उसने शांत रहना सीख लिया था।

शायद अरिमतिया के यूसुफ़ ने भी चुप रहना बेहतर समझा। ''गुप्त चेले'' (यूहन्ना 19:38) के रूप में ''वह उनकी योजना और उनके इस काम से प्रसन्न न था'' (लूका 23:51); परन्तु यदि वह महासभा के साथ वहां पर था, तो साफ़ है कि वह खामोश रहा था। मत्ती 27:57 यह पुष्टि करता है कि यूसुफ़ किसी समय ''यीशु का चेला'' बन गया था। यह आयत इस बात का संकेत भी करती है कि वह ''एक धनी मनुष्य'' था। महासभा के यदि सारे नहीं, तो अधिकतर

सदस्य धनवान ही थे।

यीशु की ओर से बोलने वाले सबसे योग्य लोग भाग गए थे। आंगन में बाहर पेशियों का अंतिम परिणाम जानने की प्रतीक्षा करते हुए, पतरस आग सेक रहा था (देखें मत्ती 26:58; लूका 22:55; यूहन्ना 18:18, 25)। स्पष्टतया यूहन्ना ने अपने आपको ''एक अन्य चेला'' कहा जो वहां था (यूहन्ना 18:15, 16)। इस आदमी ने पतरस को आंगन में जाने के लिए प्रबन्ध किया ताकि वह शत्रु की आग के पास बैठ सके (14:54; मत्ती 27:57-65; लूका 22:54, 55)। केवल यूहन्ना ही बताता है कि आग तापने के लिए वह आंगन में कैसे गया (यूहन्ना 18:15, 16)। यह अनुमान लगाया गया है कि यूहन्ना की जान पहचान महायाजक के परिवार के साथ थी क्योंकि वह उन्हें यरूशलेम की गलील की झील से खारे पानी की मछली बेचता था।

पेशियों को देखने के लिए न तो यूहन्ना और न पतरस, इतने निकट थे। दोनों ही आंगन में बाहर रहे। इस पर अचम्भित होना आसान है कि यीशु को कैसा लगा होगा, जब उसने इन दो नज़दीकी लोगों के बारे में सोचा जो उसकी सहायता नहीं कर सकते थे। उसने यह सुनिश्चित करना चाहा होगा कि उसका कोई भी चेला उसके साथ पकड़ा न जाए। यशायाह 63:3 की भविष्यद्वाणी में कहा गया है, ''मैंने तो अकेले ही हौद में दाखें खोदी हैं।''

बोलने से यीशु का इनकार (14:60-62)[96]

[60]तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा, ''तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?'' [61]परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, ''क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?'' [62]यीशु ने कहा, ''मैं हूँ: और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।''

आयतें 60, 61. भविष्यद्वाणी को पूरा करते हुए (यशा. 42:2; 53:7; देखें मत्ती 12:19) यीशु ने पेशी के दौरान बोलने से इनकार कर दिया (देखें 15:61)। महायाजक के उससे पूछने पर **वह मौन साधे रहा** (14:61)। उसकी चुप्पी उसके स्वभाव से भी मेल खाती थी (देखें 1 पतरस 2:23)।

उसकी चुप्पी के सम्बन्ध में, हम पूछ सकते हैं, ''जब गवाहों की बात ही आपस में मेल नहीं खाती थी तो उत्तर क्यों दिया जाना चाहिए था?'' यीशु जानता था कि पूछताछ किए जाने का उद्देश्य उसके विरोध में सबूत इकट्ठा करना है यानी यह किसी भी प्रकार से सच्चाई को जानने या उसे निर्दोष ठहराने के लिए नहीं था। व्यर्थ सवालों का जवाब देना बेकार होना था, इस कारण यीशु ने यहां पर कुछ नहीं कहा।

यीशु से कोई ऐसी बात कहलाने की कोशिश करते हुए जिसका इस्तेमाल वह उसके विरोध में कर पाता, याजक परेशान हो गया होगा। उसने यीशु से पूछा, **''तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?''** (14:60)। उसने कोई ऐसी बात निकलवानी चाही जिसका अर्थ वह उसके परमेश्वर होने की बात पूछकर परमेश्वर के निंदा के रूप में कर सकता (14:61)। महायाजक यीशु को परमेश्वर की शपथ दिलाने पर ही, वह व्यवस्था के अनुसार

उत्तर देने को विवश हुआ (मत्ती 26:63; देखें गिनती 30:2; व्यव. 6:13; 10:20)। इस घटना से कि आकस्मिक उदाहरण मिलता है। इससे पता चलता है कि दैनिक जीवन में चाहे किसी को शपथ नहीं खानी चाहिए (देखें मत्ती 5:33-37), परन्तु किसी मसीही को अदालत में यदि शपथ दिलाई जाती है, तो उसे सच बोलना चाहिए।

एक तरह से, काइफ़ा ने यीशु से सीधे-सीधे पूछा, **''क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?''** (14:61)। यूनानी भाषा में ''ख्रिस्तुस'' और इब्रानी में ''मसीहा'' और अरामी में इसका अर्थ ''अभिषिक्त'' है। पुराने नियम में परमेश्वर की सेवा के लिए ठहराए जाने वाले अलग-अलग लोगों के लिए अभिषेक का इस्तेमाल किया जाता था, जैसे राजा और याजक (1 शमूएल 10:1; 16:13; यशा. 61:1)। परमेश्वर उन्हें अपना काम करने के लिए आशीष देता था और विशेष रूप से सामर्थ देता था। नये नियम के समयों में ''अभिषिक्त'' पद का इस्तेमाल उस आने वाले के लिए होने लगा, जिसके यहूदियों को रोम की गुलामी से छुड़ाने की उम्मीद थी। यहूदी लोग इस बात को मानते थे कि मसीहा ने दाऊद का पुत्र होना था, और यीशु ने उन्हें यह समझाने की कोशिश की थी (जैसे मरकुस 12:35-37 में) कि इस ''पुत्र'' ने दाऊद से भी बड़ा होना था।

आयत 62. महायाजक के इस प्रश्न का कि वह मसीह है या नहीं, यीशु ने उत्तर दिया, **''मैं हूं''** और अपने आपको **मनुष्य का पुत्र** कहा। अपनी पहचान ''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में करवाकर यीशु मसीहा होने का दावा कर रहा था (देखें भजन 110:1; दानिय्येल 7:13; मत्ती 26:64); और महासभा को सम्भवतया समझ आ ही गया था कि उसके यह कहने का क्या अर्थ होगा। यह उसका अपने लिए चुना गया विशेष पद था; जिसका इस्तेमाल उसने सुसमाचार के विवरणों में लगभग अस्सी बार किया।

दानिय्येल की भविष्यद्वाणी में मनुष्य के पुत्र को दोष-मुक्त हुआ, सिंहासन पर बैठे और अपनी वापसी पर स्वर्ग की ओर से प्रशंसा पाते हुए बताया गया। स्तिफनुस ने पथराव से मारे जाने से थोड़ा पहले, यीशु को ''मनुष्य के पुत्र'' के रूप में स्वर्ग में देखा। प्रेरितों 7:56 कहता है कि उसने यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े देखा। यीशु को अपने स्वर्गारोहण के बाद केवल यहीं पर, उसे बैठे हुए नहीं दिखाया गया है। जो कुछ स्तिफनुस ने देखा वह उस तेज के जैसा होगा, जो यीशु के रूपांतर के समय प्रेरितों ने देखा था (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:1-8; लूका 9:28-36)। स्तिफनुस पर पथराव मसीही विश्वास के लिए पहले शहीद का उल्लेखनीय वर्णन है। अपनी विशेष परिस्थितियों में स्तिफनुस ने हमें इसका एक विचार दे दिया है कि एक दिन हमें क्या देखने को मिल सकता है।

जब यीशु से पूछा गया था कि क्या वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो उसे जवाब देना पड़ा। इस बड़ी सच्चाई को नकारना वास्तव में परमेश्वर की निंदा करना होता। भविष्यद्वाणी में मसीहा को परमेश्वर का पुत्र होना बताया गया था (भजन 2:7); परन्तु यदि यहूदियों को कभी इस बात की समझ थी, तो उन्होंने इसे अपने हाथ से जाने दिया। किसी गौण अर्थ में, वे मानते हो सकते हैं कि मसीहा ''परमेश्वर का पुत्र'' कहला सकता है, जैसे आदम (लूका 3:38) या कोई स्वर्गदूत (अय्यूब 1:6)। परन्तु उन्हें आश्वस्त हो जाना चाहिए था कि यीशु इस पद का इस्तेमाल अलग अर्थों में कर रहा था।

14:61, 62 में यीशु के लिए बाइबल के तीन बड़े शब्द ''मसीह,'' ''मनुष्य का पुत्र,''

और ''परम धन्य का पुत्र'' इस्तेमाल किए गए हैं। ''मसीह'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' (''परम धन्य'' के समान) दोनों ही यहूदियों द्वारा मसीहा से जुड़े पदनाम माने जाते थे। परन्तु यह जान पाना कठिन है कि अब तक ''मनुष्य का पुत्र'' को सामान्य लोगों द्वारा मसीहा से जुड़ा पद माना जाता था या नहीं।[97] यीशु द्वारा इस वाक्यांश का इस्तेमाल इतनी बार किया गया कि निश्चय ही इसका संकेत मसीहा की ओर था।

मत्ती 26:64 में जवाब के कई अलग-अलग अनुवादों ''तूने आप ही कह दिया'' (''तूने कह दिया है'' [KJV]; ''तूने सही कहा'' [NKJV]) को मरकुस 14:62 में केवल ''मैं हूं'' से स्पष्ट किया गया है। यीशु के उत्तर के अतिरिक्त भाग को समझना कठिन नहीं है। **सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर** परमेश्वर के लिए कोमल भाषा है। इसका अर्थ केवल इतना है कि ''परमेश्वर के दाहिने हाथ।''

महायाजक के प्रश्न का उत्तर देते हुए, यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के **आकाश के बादलों के साथ** आने की बात की (14:62)। यह आना 70 ई. में यरूशलेम के गिरने के द्वारा इस्राएल जाति का न्याय करने और दण्ड देने के लिए होना था। यह आयत उस अनन्त दण्ड की पेशनगोई ही है जिसमें यीशु के द्वितीय आगमन के समय कुछ लोगों को भेजा जाएगा, परन्तु यह सीधे तौर पर न्याय के दिन की बात नहीं होगी।

कितना बड़ा दावा था! एक दिन महासभा के ये सदस्य यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ देखेंगे; परन्तु यदि उन्होंने बाद में मन नहीं फिराया तो जो कुछ वे देखेंगे वह स्वर्ग के निकट से नहीं होगा।

यीशु के उत्तर का मतलब यह था कि इस दिखावटी मुकद्दमे को बंद कर दिया जाए। अपना ''अपराध'' मानते हुए और परमेश्वर का पुत्र मसीह होने के कारण निर्दोष होने की पुकार करते हुए उसने महासभा पर अभियोग लगा दिया। उसके अंगीकार को नकारकर इन धार्मिक अगुओं ने परमेश्वर के सामने केवल अपने ही दण्ड को बढ़ाया। उनके अन्याय के लिए पूरा स्वर्ग इन लोगों का न्याय करेगा। यहूदी याजकों को अंत में, रोम के साथ युद्ध में वेदी पर काट डाला गया (66-70 ई.), जब वे अभी बलिदान दे ही रहे थे।[98]

यीशु को पता था कि यह उत्तर उसकी मृत्यु का कारण बनेगा; परन्तु फिर भी वह क्रूस पर जाने को तैयार था। उसके अंगीकार से परमेश्वर की इच्छा में उसके पक्के विश्वास का पता चलता है। उसमें पूरी महासभा के सामने साफ़-साफ़ शब्दों में, अपनी वास्तविक पहचान बताने का साहस था। वह उस मृत्यु के सामने जिसका उसे पता था कि आ रही है और अब उसका सामना स्वेच्छा से कर रहा था, शांत रहा। बाग में की गई उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया था, और वह जो उसे सहना आवश्यक था, उसके लिए तैयार था।

तकनीकी रूप में काइफ़ा को यीशु से कोई प्रश्न पूछने का कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि यहूदी व्यवस्था में यह नियम था कि किसी आदमी को उसके अपने किए अंगीकार के रूप में दोषी नहीं ठहराया जा सकता। यदि यीशु महायाजक की बातों को नकार देता तो उसने संसार में अपने प्रभाव को नकार देना था और उसने वह ''भेड़'' नहीं रहना था जो ''ऊन करतने के समय शांत'' थी (देखें यशा. 53:7)। इसके बजाय वह ''विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह'' बन गया (प्रका. 3:14) जिसने अच्छा अंगीकार किया (देखें 1 तीम. 6:13) जिस पर सभी चेले निर्भर है।

परमेश्वर की निंदा के आरोप (14:63-65)[99]

[63]तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, ''अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? [64]तुम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?'' उन सब ने कहा कि यह वध के योग्य है। [65]तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुँह ढाँकने और उसे घूँसे मारने, और उससे कहने लगे, ''भविष्यद्वाणी कर!'' और प्यादों ने उसे पकड़कर थप्पड़ मारे।

आयतें 63, 64. यीशु का जवाब सुनकर महायाजक चिल्ला उठा, **''अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? तुम ने यह निन्दा सुनी।''** यदि यीशु का परमेश्वर का पुत्र होने का दावा झूठा होता, तो निश्चय रूप में यह परमेश्वर की निंदा होना था। किसी भी स्थिति में **महायाजक** के लिए **अपने वस्त्र फाड़ने** की मनाही थी (देखें लैव्य. 21:10)। यह बड़े शोक या रोष का संकेत था; वह आतंक की प्रतिक्रिया का स्वांग कर रहा था। वास्तविकता यह थी कि उसकी कार्यवाही से शैतानी आनन्द की झलक थी; क्योंकि अब उसका शैतानी उद्देश्य पूरा हो सकता था। इस अंगीकार से उसे वह आधार मिल गया जिस पर वह यीशु के मृत्युदण्ड के लिए मुकदमा पिलातुस को दे सकता था। यानी ऐसा मुकद्दमा जिसकी आधिकारिक स्वीकृति महासभा की ओर से दी गई थी।

मृत्यु दण्ड दिए जा सकने से पहले पुष्टि करने के लिए गवाहियां होना आवश्यक था। नियम के विपरीत, यीशु के शत्रुओं ने बिना गवाहों को सुने, उसे उसके अपने दावे के जवाब में दोषी ठहरा दिया (14:63; देखें मत्ती 26:65)। उन्होंने दावे को ही परमेश्वर की निंदा मान लिया; इसलिए उनका विचार था कि किसी गवाह की आवश्यकता नहीं है। उनके दिमाग में था कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में ''ईश्वरीय'' होने का दावा अपने आप में ही झूठी गवाही थी; उन्होंने इसे परमेश्वर का घोर अपमान माना और इस कारण **वध के योग्य** मान लिया। लैव्यव्यवस्था 24:16 में परमेश्वर की निंदा करने के लिए मृत्यु की आज्ञा थी, और सभा इस निर्णय पर पहुंची कि यीशु इस दण्ड के योग्य है (14:64; देखें मत्ती 26:66)।

आयत 65. यीशु के साथ बहुत अन्याय किया गया। उसे पीटा गया और थप्पड़ मारे गए। इस समय जिन अधिकारियों के अधीन वह था, उन्होंने बार-बार उसे मारा। **कोई तो उस पर थूकने** लगे। थूकना अत्यधिक अपमान की बात थी। यह सारा मज़ाक इन अधिकारियों के लिए खेल के जैसा लगा। यदि ये लोग वही थे जो बाग में पीछे को गिरे थे, तो उन्हें यीशु के साथ ऐसा व्यवहार करने से डरना चाहिए था। अब, सब कुछ अपने हाथ में होने पर, यदि वे बिना आदेश पाए **उसे घूंसे मार** रहे थे और **उसे थप्पड़ मार** रहे थे, तो उन्हें पता था कि उनके अगुओं की अनुमति है। यदि मृत्यु जल्द होने वाली हो, तो कैदी को मारना कोई बड़ी बात नहीं होनी थी।

उन्होंने **उसका मुंह भी ढांक** दिया और फिर उन्होंने उसे आज्ञा दी कि **''भविष्यद्वाणी कर।''** घटनाओं का लूका का संस्करण हमें दृश्यों को समझने में सहायता करता है। यीशु के सताने वाले उससे कह रहे थे, ''भविष्यद्वाणी कर कि तुझे किसने मारा?'' (लूका 22:64)। वे यह मानकर उसे ताने दे रहे थे कि यदि वह परमेश्वर का नबी होता तो उसने बता देना था कि उसे कौन मार रहा है।

परमेश्वर के नबियों को भी हमेशा हर समस्या का उत्तर देने के लिए प्रकाशन नहीं दिए जाते

थे। यिर्मयाह झूठे नबी हनन्याह का तुरन्त उत्तर नहीं दे पाया था, परन्तु बाद में वह परमेश्वर के वचन के साथ लौटा था और उसने घोषणा की थी कि पाखंडी नबी ने उसी वर्ष मर जाना था। यिर्मयाह 28:1-17 पूरे का पूरा सच्चे और झूठे नबियों के बीच अंतर को समझाता है। यिर्मयाह सच बोलता था जो कि सब को पता था। बेशक यीशु यदि चाहता तो सही उत्तर दे सकता था।

इन सब बातों को लिखते हुए मरकुस के मन में यशायाह 50:6, 7 के शब्द आए होंगे:

> मैं ने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और थूकने से मैं ने मुंह न छिपाया। क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक की नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा।

यीशु ने बिना कोई बदला लिए इसे मान लिया। उसने पलटकर किसी को नहीं मारा; उसने केवल इस कार्यवाही का कारण पूछा। उसका व्यवहार यह दिखाता है कि जब हमारे साथ बुरा हो या गैर-कानूनी ढंग से हमारे साथ पेश आया जाए, तो हमारा जवाब क्या होना चाहिए। यीशु ने किसी के विरोध में अपनी आवाज़ नहीं उठाई। उसने कहा, ''यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई की गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?'' (यूहन्ना 18:23)।

पतरस के इनकार (14:66-72)[100]

[66]जब पतरस नीचे आँगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहाँ आई, [67]और पतरस को आग तापते देख उसे टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, ''तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था।'' [68]वह मुकर गया, और कहा, ''मैं न ही जानता और न ही समझता हूँ कि तू क्या कह रही है।'' फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया; और मुर्ग़ ने बाँग दी। [69]वह दासी उसे देखकर उनसे जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, ''यह उनमें से एक है।'' [70]परन्तु वह फिर मुकर गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे फिर पतरस से कहा, ''निश्चय तू उनमें से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है।'' [71]तब वह धिक्कारने और शपथ खाने लगा, ''मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता।'' [72]तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने बाँग दी। पतरस को वह बात जो यीशु ने उससे कही थी स्मरण आई: ''मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।'' और वह इस बात को सोचकर रोने लगा।

आयतें 66-71. यीशु के साहस को पतरस की कायरता के विपरीत देखा जा सकता है। यीशु जहां प्रश्न पूछे जाने की रौशनी में था, वहीं पतरस ने **नीचे आँगन में** आग के धीमे प्रकाश में छिपने की कोशिश की (14:66)। जब किसी के मन में डर हो तो आवश्यक बातें जो कुछ समय पहले ही उससे कही गई हों, भूल सकती हैं। भूल गई सच्चाइयों ने जल्द ही पतरस को आकर परेशान करना था।

शायद इतिहास पतरस द्वारा यीशु के तीन इनकार किए जाने के लिए उस के साथ अधिक ही कठोर रहा है (14:68, 70, 71)। इस कठिन समय में उसने, कम से कम यीशु के निकट रहने

की कोशिश तो की। एक दृष्टिकोण, से जो कुछ पतरस ने किया, उसके लिए बड़ी हिम्मत चाहिए थी। यूहन्ना को छोड़ बाकी के सब भाग गए थे। निश्चय ही सुरक्षा के लिए अंतिम आश्रय जो किसी के भी मन में आ सकता था, वह महायाजक के घर का आंगन ही होना था। पतरस को अभी भी लग रहा होगा कि यीशु को बचाने में सहायता के लिए उसे कोई न कोई रास्ता मिल सकता है। यदि इस प्रेरित को डरने का कोई कारण नहीं था तो हमें उस कारण का पता नहीं है। कोई भी सतर्क व्यक्ति, पहले ही संकेत से कि वह पहचान में आ गया है, आंगन से चला जाता, परन्तु पतरस नहीं गया। जब उसके प्रभु को गिरफ्तार कर लिया गया तो पतरस ''दूर ही दूर उसके पीछे'' गया (14:54), परन्तु कम से कम गया तो।

यूहन्ना 18:15, 16 में ''दूसरा चेला'' का अर्थ स्पष्टतया यूहन्ना ही है:

> शमौन पतरस और एक अन्य चेला भी यीशु के पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जाना-पहचाना था, इसलिये वह यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया, परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा। तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना-पहचाना था, बाहर निकला और द्वारपालिन से कहकर पतरस को भीतर ले आया।

यूहन्ना उसकी सहायता न करता तो पतरस ने आंगन में नहीं जा पाना था। आंगन में जो कुछ भी हुआ उसे ध्यान में रखते हुए, यूहन्ना ने पतरस को बाहर छोड़कर समझदारी दिखाई होगी।

यूहन्ना का वहां होना चेला होने का दावा करने वाले के रूप में नहीं था। परिवार के लोग उसे जानते थे और उस सम्बन्ध के कारण वह बिना किसी के मन में उसके या पतरस के बारे में कोई संदेह आए, उसे आंगन में ला सका। परन्तु थोड़ी देर बाद **महायाजक की दासियों में से एक** ने **पतरस** को **नासरी यीशु के साथ** रहने वाले के रूप में सही पहचाना (14:66, 67)। उसके दावा करने पर पतरस यह कहते हुए **मुकर गया** कि **''मैं न ही जानता और न ही समझता हूँ कि तू क्या कह रही है''** (14:68)। उसने ऐसे दिखाया जैसे उसे पता ही न हो कि वह किस की बात कर रही है। आंगन में उपस्थित लोगों से दूर जाने के लिए **वह बाहर डेवढ़ी में गया** (14:68)। लड़की **पास खड़े** लोगों को यह बताने पर ज़ोर देती रही कि पतरस यीशु के चेलों में से एक था, यानी **उनमें से एक** था (14:69); और वह **फिर मुकर गया** (14:70)।

थोड़ी देर बाद पास खड़े लोग पतरस के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गए होंगे। वे कह रहे थे, **''निश्चय तू उनमें से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है''** (14:70)। वे देख रहे थे कि वह ''गलीली'' है और इस कारण वह यीशु के साथियों में से ही होगा। पतरस की गलीली बोल-चाल से उसकी पहचान हो गई होगी (देखें मत्ती 26:73)। गलील यूनानी संस्कृति से इतना प्रभावित था कि इसे ''अन्यजातियों का गलील'' कहा जाता था (मत्ती 4:15)। फसह के समय के दौरान यरूशलेम में बहुत से गलीली होंगे, परन्तु ये लोग महायाजक के सेवकों में से नहीं होंगे।

यूहन्ना 18:26 बताता है कि पतरस से सवाल पूछने वालों में ''महायाजक के दासों में से एक'' था ''जो उसके कुटुम्ब में से था जिसका कान पतरस ने काट डाला था।'' इस दास ने पतरस ने पूछा, ''क्या मैंने तुझे उसके साथ बारी में नहीं देखा था?'' दूसरे लोगों ने माना कि पतरस यीशु के अनुयायियों में से ही होगा, परन्तु पतरस बार-बार इनकार करता रहा। तीसरी बार यह कहते हुए कि **''मैं उस मनुष्य को, ... नहीं जानता''** वह **धिक्कारने और शपथ**

खाने लगा।

मरकुस 14:62 में यीशु के ''मैं हूं'' और यूहन्ना 18:17, 25 में पतरस के ''मैं नहीं हूं'' में कितना बड़ा अंतर दिखाई देता है। पतरस के लिए अपने विश्वास को बताने का कितना बड़ा अवसर हो सकता था! कायरता के कारण हमने कितनी बार शानदार अवसर खोए हैं? आज का दौर चाहे पतरस और यहूदा दोनों के लिए बहाने बनाने का है, परन्तु हमें उनके पाप की खतरनाक को देखना आवश्यक है, नहीं तो हमें पतरस के मन फिराव की गहराई और उसके वापस आने में अनुग्रह के धन की समझ नहीं आएगी।[101] केवल यह जानकर कि उसका पाप कितना बड़ा था, हम मसीह के अनुग्रह के बड़प्पन को समझ पाएंगे, जिसने पतरस को उसके गिरने से पाया।

आयत 72. अन्य अवसरों पर पतरस ने उस रात मुर्ग़ के बांग देने से पहले और बाद की अपनी यादों को बताते हुए सुना होगा।[102] इतने मर्मस्पर्शी ढंग से कोई और इन बातों को नहीं बता सकता था। पतरस के इनकारों का विवरण देने के बाद, मरकुस ने लिखा, **तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने बाँग दी।** पतरस यीशु को काइफ़ा के पास से महासभा के पास ले जाए जाते हुए एकटक देख रहा था (देखें लूका 22:60, 61)। इस देखने के कारण यह दर्दनाक वाक्य मिलता है: **और वह इस बात को सोचकर रोने लगा।** यीशु के चेहरे को देखकर पतरस को यीशु के शब्द याद आ गए कि ''**मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा**'' (देखें 14:30)। उसी समय वह अंदर तक हिल गया और उसे अपने पाप का अहसास हो गया। यह देखकर पतरस का मन अंदर से छिद गया और मसीह की भविष्यद्वाणी को पूरा होते देख उसे अपने पाप भयावता समझ में आई। उसे यह भी समझ में आया कि उसके इनकार करने से उसके प्रभु का मन दु:खी हुआ था, जिसे उसने इतनी ईमानदारी से उसकी सेवा करने का वायदा किया था। आश्चर्य की बात नहीं है कि वह बाहर गया और ''फूट फूटकर रोया'' (लूका 22:62)।

जीवन पतरसर इस कहानी को बताते हुए, कहता होगा, ''मैंने यह किया, परन्तु यीशु ने मुझ से प्रेम करना और मेरे लिए प्रार्थना करना कभी नहीं छोड़ा!'' यीशु के पतरस को क्षमा करके उसे आत्माओं को बचाने के अपने काम में वापस लाने की कहानी को लिखने का काम यूहन्ना को दे दिया गया (यूहन्ना 21:15-19)।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए: फसह का पर्व

हमारे लिए यीशु की अंतिम संध्या की घटनाओं को समझने के लिए, बड़े यहूदी समारोह यानी फसह के पर्व में की जाने वाली बातों की तरतीब को समझना आवश्यक है। आइए, वर्तमान यहूदी भोज के तरतीब के मनाए जाने के साथ *मिशना*[103] में दिए गए निर्देशों को मानने की इस विशेष घटना को देखते हैं।

1. *क़िद्दुश*[104] का कटोरा लिया गया, यह कटोरा ''पवित्र किए जाने'' या ''अलग किए जाने'' को दर्शाता था। यह कार्य फसह के भोजन को सामान्य भोजनों से अलग करता था। परिवार का मुखिया, कटोरे लेकर, इस पर प्रार्थना करके, इस पर आशीष देता और उसके बाद सब इसमें से पीते।

2. हाथ धोए जाने की पहली रस्म की जाती। फसह को मनाने वाले हर व्यक्ति के लिए तीन बार अपने हाथों को धोना आवश्यक था। यह धोया जाना विशेष संस्कार के साथ किया जाना

आवश्यक था।

3. फिर अजवाइन या सलाद पत्ते को खारे पानी में डुबोकर खाया जाता। अजवाइन उस जूफ़े का प्रतीक थी, जिससे मिस्र में इस्राएलियों के पहलौठों को बचाने के लिए, उन के घरों के दरवाज़ों की चौखटों और अलंगों के ऊपर लहू लगाया गया था (निर्गमन 12:7)।

4. रोटी तोड़ी जाती। केवल अखमीरी रोटी इस्तेमाल में लाई जा सकती थी। वास्तव में पर्व में भाग लेने वाले सब लोगों के घरों में से पहले ही से, हर प्रकार का ''खमीर'' निकाल दिया जाता था (निर्गमन 12:15-19)।

इस बार भाग लेने वालों के लिए दो आशिषें बोली जातीं। परिवार का मुखिया कहता, ''यह दु:खों की वह रोटी है जिसे मिस्र देश में हमारे बाप-दादाओं ने खाया। जो भी कोई भूखा हो वह आए और खाए। जो भी जरूरतमंद हो वह आए और हमारे साथ फसह मनाए।''[105] आधुनिक मनाए जाने में, जो कि इस्राएल देश से बाहर होता है, यह प्रार्थना को जोड़ दी गई है: ''इस वर्ष हम इसे यहां लेते हैं, अगले वर्ष इस्राएल देश में लेंगे। इस वर्ष दासों के रूप में लेते हैं, अगले वर्ष स्वतन्त्र लोगों के रूप में लेंगे।''[106] इस शब्दरचना का इस्तेमाल, इस्राएलिए कौम के रूप में, यरूशलेम में इकट्ठा होने की इच्छा को जगाकर रखे जाने के लिए किया जाता है।

5. कहानी मिस्र से छुटकारे से जुड़ी थी। वहां उपस्थित सबसे छोटा व्यक्ति पूछता, ''यह पर्व दूसरे पर्वों से अलग कैसे है?'' जवाब देते हुए परिवार का मुखिया, पहले फसह से आरम्भ करके, इस्राएल की पूरी कहानी का वर्णन करता।

6. फिर इसके बाद, भजन 113 और 114 गाए जाते। यहूदियों में भजन 113-118 को ''हल्लेल'' के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर की महिमा।'' वास्तव में इस अवसर पर गाए जाने वाले सभी गीत महिमा के गीत ही होते हैं। ये भजन पवित्र शास्त्र के उन पहले हवालों में से थे जिन्हें किसी यहूदी लड़के के लिए तेरह वर्ष की आयु में *बार मिज़वाह* (या ''आज्ञा का पुत्र'' बनने) के लिए याद करना आवश्यक था।[107]

7. फिर दूसरा कटोरा यानी ''हग्गादाह का कटोरा'' पीया जाता। इस कटोरे को ''व्याख्या करने का कटोरा'' या ''घोषणा करने का कटोरा'' कहा जाता था।

8. उपस्थिति सभी लोग भोजन करने के लिए तैयार होने के लिए अपने हाथ धोते। परमेश्वर को उसकी सभी आशिषों के लिए, महिमा देते हुए उसके सामने प्रार्थना की जाती।

9. फिर दो अखमीरी रोटियों के बीच कुछ कड़वी भाजी रखी जाती, उसे *चरोसेथ*[108] (या *हरोसेथ*) में डुबोकर खाया जाता। यह निश्चित रूप में यूहन्ना 13:26 में बताया गया ''रोटी का टुकड़ा डुबाकर'' ही था। NIV के अनुसार यीशु ने ''रोटी का टुकड़ा डुबोया'' परन्तु KJV में ''भिगोया'' है। इसी समय और स्थिति में, यीशु ने ''रोटी को डुबोकर'' (NKJV), यहूदा को दी। उसके इस कार्य से यहूदा की पहचान विश्वासघाती के रूप में हुई (मरकुस 14:20; देखें मत्ती 26:23)। यहूदा के रोटी लेने पर हम उसके पाप की दासता में जाने को देखते हैं।

10. फसह का भोजन सही ढंग से लिया जाता था। पूरा मेमना खाया जाना आवश्यक था। बचे हुए मांस का हर हिस्सा जला दिया जाना आवश्यक था (देखें निर्गमन 12:10)। इसे सामान्य भोजन की तरह बाद में नहीं खाया जा सकता था।

11. रस्मी धोने के द्वारा हाथ फिर से धोए जाते थे। फिर बच गई अखमीरी रोटी खाई जाती।

12. धन्यवाद की प्रार्थना की जाती, जिसमें एलिय्याह के आने और मसीह के आने का संदेश देने की प्रार्थना की जाती। उसके लिए एक गदी खाली छोड़ी जाती; और बीच में कहीं एक द्वार खुला रखा जाता और अभिवादन करते हुए यह कहा जाता, ''हे एलिय्याह, अंदर आ जाओ!''

13. इस सम्बन्ध में, एक तीसरा कटोरा पिया जाता। इस कटोरे को ''धन्यवाद का कटोरा'' कहा जाता।

14. हल्लेल का दूसरा भाग (भजन 115-118) गाया जाता।

15. चौथा कटोरा पीया जाता।

16. भजन 136 (बड़ा हल्लेल, जिसका अर्थ ''बड़ी महिमा'' है) गाया जाता।

17. दो छोटी-छोटी प्रार्थनाओं के साथ फसह का भोज खत्म होता।

प्रासंगिकता

परमेश्वर का सेवक, यीशु (14:1, 2)

14:1, 2 में जो कुछ यीशु के साथ हो रहा था, उसके बारे में मरकुस का संक्षिप्त संकेत मत्ती में कहीं पूर्ण रूप में दिया गया है:

> जब यीशु ये सब बातें कह चुका तो अपने चेलों से कहने लगा, ''तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फसह का पर्व है, और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।'' तब प्रधान याजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नामक महायाजक के आंगन में इकट्ठा हुए, और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। परन्तु वे कहते थे, ''पर्व के समय नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए'' (मत्ती 26:1-5)।

यीशु ने अपना जैतून का उपदेश खत्म कर दिया था। उसकी टिप्पिणियां मत्ती 24; 25 और मरकुस 13 में दर्ज हैं। ध्यान में क्रूस था और यीशु ने वे सब प्रमुख शिक्षाएं दे दी थीं जिन्हें अपने चेलों को उसने योजना बनाई थी।

मत्ती 26:2 में यीशु द्वारा दु:ख सहने का चौथा विवरण दिया गया है, परन्तु यह बात मरकुस में नहीं है। यह यीशु की अपने आने वाले दु:खों की अंतिम पेशनगोई थी।[109] मरकुस के विवरण में ज़ोर दिया गया है कि वह पूरी त्रासदी जो यीशु के ऊपर आने वाली थी, परमेश्वर के वश में थी। यह भविष्यद्वाणी के पूरा होने के रूप में होना था। यीशु ने अपनी पेशनगाई में साफ़ कहा कि उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना ''दो दिन बाद'' होना था।

यीशु की मृत्यु का सम्बन्ध ''फसह'' से है जो नीसान महीने के चौदहवें दिन पड़ता था।[110] यह महीना हमारे कैलेंडर के मार्च या अप्रैल से मेल खाता है। इस पर्व को जो कि केवल ''दो दिन बाद'' था (मरकुस 14:1), इस्राएलियों के मिस्र से छुटकारे को मनाया जाता था। विलियम टिण्डेल (लगभग 1494-1536) ने जब बाइबल के अपने अनुवाद को छपवाने के समय हमारी धार्मिक शब्दावली में ''फसह'' (πάσχα, *pascha*) शब्द का योगदान दिया। उसने इस शब्द

का इस्तेमाल इब्रानी शब्द פֶּסַח (*pesach*) के अनुवाद के रूप में किया।

इस वचन में यीशु को कैसे दिखाया गया है? एक बार फिर से, हम उसे दु:खी सेवक के रूप में दिखाया गया देखते हैं जिसने मनुष्य के पाप के प्रायश्चित के लिए सताव सहना और क्रूस पर चढ़ाए जाना स्वेच्छा से सहा।

1. यीशु को *तैयार सेवक* के रूप में दिखाया गया है। ''प्रधान याजक'' और ''पुरनिये'' (मत्ती 26:3), यानी महासभा[111] के सदस्य और ''शास्त्री'' यीशु को मार डालने की योजना बना रहे थे (मरकुस 14:1)। प्रधान याजक और पुरनिये यहूदियों के धार्मिक अगुवे थे। यीशु से उनकी शत्रुता मरकुस 8:31 से पहले भी दिखाई गई थी। लाज़र के पुनरुत्थान से इन अधिकारियों के मनों में यीशु की मृत्यु की बात समा गई थी (यूहन्ना 11:53)। सब मिलकर वे उसकी हत्या करने की योजना को अंतिम रूप देने की कोशिश कर रहे थे।

यीशु को पता था कि यह सब होने वाला है। उसने इसका आरम्भ होते हुए देख लिया था। यरूशलेम को जाते हुए, यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसने पिता की इच्छा को मानना था। वह परमेश्वर का तैयार सेवक था।

2. यीशु को *ठुकराया जाने वाला सेवक* दिखाया गया। मत्ती ने यीशु के क्रूसारोहण की योजना में शामिल होने के रूप में महायाजक काइफ़ा का नाम लिया।[112] यह महायाजक (जो 18-36 ई. में पद पर था) हन्ना का दामाद और उत्तराधिकारी था। पुतियुस पिलातुस से पहले के हाकिम वलेरियुस ग्रेटस ने काइफ़ा को महायाजक बनाया था।[113]

वास्तव में महायाजक के पद पर एक समय में केवल एक व्यक्ति होता था। पुराने नियम में, यह पद पारिवारिक और जीवन भर के लिए था। परन्तु नये नियम के काल में, हाकिम जब चाहते महायाजकों को नियुक्त करते और जब चाहे उतार देते थे। 37 ई.पू. 67 ईस्वी तक कम से कम अठाइस अलग-अलग महायाजक हुए।[114] इसी कारण यह पदनाम न केवल पद पर बैठे व्यक्ति का बल्कि पूर्व के पदाधिकारियों और कुलीन परिवारों का भी हो गया, जिनमें से इन्हें चुना जाता था।

मत्ती 26:3, 4 हमें बताता है कि ''तब प्रधान याजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नामक महायाजक के आंगन में इकट्ठा हुए, और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें।'' मरकुस केवल इतना कहता है, ''प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़ कर मार डालें'' (मरकुस 14:1)।

यीशु जगत का बड़ा उद्धारकर्त्ता बनकर आया था। वह उद्धार, आशा, सच्चाई और अनन्त जीवन ला रहा था। स्वर्ग की ओर से भेजी गई सच्चाई के रूप में उसने पुराने नियम के मूसा के सिस्टम को इसके बलिदानों और धार्मिक अगुओं के अधिकार सहित धार्मिक दृश्य को बदल देना था। ये पुरनिये, प्रधान याजक और महायाजक उस सब को जो वह कर रहा था सहन नहीं कर पाए; इस कारण वे उसे मार डालने की योजना बनाने लगे। उन्होंने यीशु को ठुकराने का सबसे बड़ा पाप जो कोई कर सकता है, वह किया।

3. यीशु को क्रूस पर चढ़ाए गए सेवक के रूप में भी दिखाया गया है। उसके शत्रु उसे ''छल'' से पकड़कर (14:1) उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। उन्होंने उसे ठुकराया ही नहीं बल्कि उसे मार डालने की अपनी योजना को अंजाम भी दिया। इससे बड़ा पाप और क्या हो

सकता था। उन्होंने उसे गुप्त तरीके से गिरफ्तार करना था, शायद अंधेरे में, ताकि लोगों को इसका पता न चल पाए। रोम द्वारा उसे दोषी ठहरा दिए जाने के बाद, इन षड्यन्त्रकारियों ने उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने पर, पास खड़े होकर देखना था। यह उनकी दिली इच्छा थी।

परन्तु महासभा के सदस्य, इस पर सहमत थे कि संसार भर से आए यात्रियों के होने के कारण दंगा भड़क सकता है, जिनकी राष्ट्र भक्ति की भावनाएं पर्व के समय पर उफान पर रहती थीं, जो कि कोई छोटी बात नहीं थी।[115] उन्होंने पर्व के दौरान कार्यवाही न करने का निर्णय लिया (14:2), जो आठ दिन तक चलना था। उनके लिए अपनी योजना को पर्व से पहले पूरा करना आवश्यक था, नहीं पर्व के बीत जाने तक सब कुछ भुला देना पड़ना था।

निष्कर्ष: यीशु को परमेश्वर के सेवक के रूप में देखा जाता है। परमेश्वर के पुत्र के लिए परमेश्वर के सेवक के रूप में इस संसार में बनना कैसा था? उसे परमेश्वर की योजना के आगे अपने आपको देना आवश्यक था, चाहे इसका अर्थ जो भी होता। उसे ठुकराए जाने के सबसे बुरे रूप को सहना तैयार होना आवश्यक है। उसे क्रूस पर जाकर मृत्यु की सबसे खतरनाक किस्म को सहने के लिए तैयार होना आवश्यक था।

सेवक संसार का सबसे बड़ा व्यक्तित्व है। यीशु ने कहा, ''जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने'' (देखें मत्ती 23:11; मरकुस 9:35)। फिर भी इस संसार में सेवक बनकर रहने का अर्थ यह हो सकता है कि सेवक को बड़े कठिन मार्ग में से जाना पड़ेगा। यीशु के लिए ऐसा ही था और हमारे लिए भी ऐसा ही हो सकता है।

स्वार्थी व्यक्ति सेवक नहीं हो सकता क्योंकि वह वास्तविक बलिदान करने से तैयार नहीं होता। स्वार्थी व्यक्ति सचमुच में दूसरों के लिए नहीं जीता। सेवक होने के लिए, बलिदान देने के लिए तैयार होना आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा'' (मत्ती 16:25)।

यदि यीशु सेवक होना न चुनता तो क्या होता? यदि वह अपना प्राण न देने का निर्णय कर लेता तो क्या होता? यदि यीशु परमेश्वर के सेवक के रूप में रहकर न मरता तो हमें क्षमा या अनन्त जीवन की कोई आशा नहीं होनी थी।

यीशु को तोहफ़ा देना (14:3-9)

इन आयतों में नये नियम में मिलने वाले यीशु को दिए जाने वाले सबसे सुन्दर पलों में से एक है। यह घटना किसी के मसीह को विशेष उपहार देने की है। यह उपहार सही इरादे से, सही अवसर पर और विचारशील और प्रोत्साहित करने वाले ढंग से दिया गया था।

मरकुस में यह स्पष्ट नहीं बताया गया कि यह घटना कब की है। यूहन्ना 12:1 कहता है कि यह अभिषेक किया जाना ''फसह से छह दिन पहले'' हुआ, यरूशलेम के दक्षिण पूर्व में लगभग दो मील (यूहन्ना 11:18) जैतून के पहाड़ की पूर्वी ढलान पर बसे बैतनिय्याह में (देखें मरकुस 14:3) गांव था यह गांव मरियम, मारथा और लाज़र का घर था (यूहन्ना 11:1)।

यीशु शमौन कोढ़ी का महिमान था (मरकुस 14:3), जो शमौन फरीसी से अलग होगा (लूका 7:36-50)। नये नियम में ''शमौन'' नाम के कम से कम दस आदमी हैं। तब जाना यह नाम आम होता था। यह शमौन यीशु का मित्र था जो बैतनिय्याह में रहता था।

कोढ़ी व्यक्ति को दूसरे लोगों के साथ मिलने की मनाही होती थी (लैव्य. 13:45, 46), इस कारण इसका अर्थ यह हुआ कि शमौन को उसके कोढ़ से चंगा कर दिया गया था, परन्तु उसके नाम के साथ अभी भी ''कोढ़ी'' लगता था जो कि वह पहले था। वह ''बचा हुआ'' था। बेशक, यीशु ने उसे चंगा कर दिया था। सुसमाचार के चारों विवरणों में से किसी में भी कहीं पर उसका नाम नहीं है।

शमौन फरीसी के घर में एक पापिन स्त्री ने यीशु का अभिषेक किया (लूका 7:37, 38), उसके चरित्र के कारण शमौन फरीसी ने आपत्ति की (लूका 7:39)। यहां पर, जब लाज़र की बहन मरियम ने यीशु पर इत्र उण्डेला, तो यहूदा ने उसके ऐसा करने पर आपत्ति की क्योंकि उसे लगा कि यह बहुत कीमती तोहफ़ा है। केवल यूहन्ना सुसमाचार का वह विवरण है जो उसका नाम ''मरियम'' (यूहन्ना 12:3) और आपत्ति करने वाला का नाम ''यहूदा'' बताता है (यूहन्ना 12:4, 5)। पहले किसी समय में, इस मरियम ने अतिथियों की सेवा करने के बजाय यीशु के कदमों में बैठकर उसके वचनों को सुनना चुना था। यीशु ने मरथा से कहा था, ''... उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा'' (लूका 10:42)। यहूदा के इस स्त्री की फिजूलखर्ची के विरोध में बोलने पर दूसरे चेले आवश्यक उसकी आपत्ति से सहमत होंगे।

मरियम एक कीमती लेप (μύρον, *muron*) लेकर आई थी, जो संगमरमर जैसे पत्थर की कीमती, सफेद शीशी में था। उसने शीशी को तोड़ा और यीशु के सिर और पांवों पर उण्डेल दिया (मरकुस 14:3; यूहन्ना 12:3)। इत्र की सुगंध से सारा घर भर गया (यूहन्ना 12:3)। अतिथियों के लिए सम्मान के लिए सिर का अभिषेक करना था (भजन 23:5; लूका 7:46)।

यह जानने के लिए कि यह सुन्दर था, हमें यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि मरियम ने क्या किया। हम उसके दिए उपहार को और यह भी उसके ढंग को न भूले दिया। उसका तोहफा इतना विशेष क्यों था?

1. यह *कीमती तोहफा था*। यहूदा ने कहा कि इसका मोल तीन सौ दीनार से अधिक है (मरकुस 14:5)। यह किसी साधारण मज़दूर को दी जाने वाली लगभग एक वर्ष की मज़दूरी के बराबर होगा। यह बहुत महंगा लेप था।

यहूदा ने उस पर जो उस स्त्री ने किया, आपत्ति की और दूसरे चेलों से यह कहलवाया कि इस इत्र को बेचकर इससे मिलने वाले पैसा का इस्तेमाल कंगालों को देने के लिए किया जा सकता था। मरकुस 14:4, 5 कहता है, ''परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, 'इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया? क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा कर कंगालों में बाँटा जा सकता था।''' उन्हें लगा कि ऐसे तोहफे से कंगालों को बड़ा लाभ मिल सकता है। वे तोहफे को स्वीकार करने के लिए यीशु की आलोचना करते हुए भी लगे।

यह तोहफा जो मरियम यीशु को दे रही थी, बहुत ही कीमती था। इत्र के शीशी में रखे जाने के ढंग के कारण इसे एक ही बार में इस्तेमाल किया जाना आवश्यक था। मरियम के पात्र को तोड़कर सारा तोहफा दे दिया गया था (14:3)। वह इसका कुछ भाग नहीं दे सकती थी यानी उसे इसे पूरे का पूरा ही देना पड़ना था।

2. यह *सही समय* पर दिया गया *तोहफा* था। चेलों के विचार से विपरीत विचार होते हुए यीशु ने उसके कार्य को ''अच्छा काम'' बताया। उसने कहा, ''उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते

हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा'' (14:6, 7)।

यीशु ने समझाया कि मरियम प्रेम, विश्वास और त्याग को दिखा रही थी। उसने यह भी कहा कि कंगालों की सहायता करने के अवसर आते रहने थे (देखें व्यव. 15:11), परन्तु इस प्रकार से कार्य करने का अवसर केवल एक बार आना था। यीशु ने अपने अनुयायियों के साथ अधिक देर तक नहीं रहना था; थोड़े ही दिनों में उसने क्रूस पर चले जाना था। जो कुछ उसने किया था उसके लिए आभार जताने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए तुरन्त करना इसे कारण आवश्यक था। दया के कुछ काम अभी किए जाने आवश्यक हैं, नहीं तो अवसर हाथ से निकल जाएगा और दोबारा कभी नहीं आएगा।

3. यह *एक यादगारी तोहफा था*। अभिषेक करने में मरियम का इरादा चाहे जो भी रहा हो, परन्तु यीशु ने इसे अपनी मृत्यु के पहले उसके गाड़े जाने के लिए उसे तैयार किए जाने के सांकेतिक महत्व के साथ जोड़ दिया। वह यीशु के मरने से पहले उसका कफ़न-दफ़न कर रही थी। यीशु ने कहा, ''जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मला है'' (14:8)।

निकुदेमुस और अरिमतिया के यूसुफ़ द्वारा जल्दी-जल्दी किए जाने वाले कफ़न दफ़न को छोड़ (यूहन्ना 19:38-42), यह यीशु का एकमात्र जनाज़ा था। जी उठने की सुबह महिलाएं उसे अभिषेक करने के लिए कब्र पर गई थीं (मरकुस 16:1); परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि वह पहले ही मरे हुओं में से जी उठा था। शमौन के घर में जो कुछ मरियम ने किया वह यीशु को मिलना एकमात्र अभिषेक था।

4. यह *मज़बूत तोहफ़ा* था। जो कुछ उसने किया उसे बना रहना था और संसार ने उसे सुनना था। इस स्त्री द्वारा किए गए काम के लिए यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी'' (14:9)।

निष्कर्ष: यीशु के लिए यह तोहफ़ा इतना महत्वपूर्ण क्यों था? यह कीमती, सही समय पर दिया गया और एक यादगारी तोहफ़ा है। क्या हम ऐसा तोहफ़ा दे सकते हैं। क्या हम ऐसा तोहफ़ा देना चाहते हैं?

भयानक गलती (14:10, 11)

यहूदा द्वारा यीशु को पकड़वाया जाना निश्चय तौर पर मानवीय इतिहास की सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक है। उसकी त्रासदी भेद भी है और सामान्य घटना भी; क्योंकि यह यीशु के साथ रहते और चलते हुए एक व्यक्ति के मन में बुराई के आने, जन्म और बढ़ने से निकली (देखें याकूब 1:14, 15)।

विवरण में जहां इसे रखा गया उससे उसे ध्यान में रखते हुए यहूदा की बेईमानी (14:10, 11), पिछले भाग में मरियम के समर्पण से अलग है (14:3-9)। प्रभु जहां भी समर्पण का कोई बढ़िया उदाहरण देता है, वहां पर शैतान आकर बिगाड़ का कोई उदाहरण दे ही देता है।

यहूदी अगुओं के साथ यहूदा का सौदा उस सप्ताह में पहले कहीं, शायद यीशु की मृत्यु से

पहले मंगलवार हो चुका था। बाइबल यह संकेत देती है कि मंगलवार के दिन वे सौदे को पूरा करने के अवसर की तलाश में थे (14:11)। यहूदा ने इतनी भयानक गलती क्यों की? उसने अवसर के सुन्दर झरने को लेकर इसे दुष्टता की तेज़ नदी में बदल दिया। उसने ऐसा कैसे किया?

1. यहूदा ने *जानबूझकर गलती* की। उसने बुराई करने की योजना बनाई। वचन कहता है, ''तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे'' (14:10)।

जब याजकों ने यहूदा का प्रस्ताव सुना, तो ''वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको [यीशु को पकड़वाने के बदले] रुपये देना स्वीकार किया'' (मरकुस 14:11)। पकड़वाए जाने के समझौते की शर्तें का उल्लेख केवल मत्ती करता है। चाहे इसे ''लिखा है'' के साथ नहीं बताया गया, जैसे मत्ती के अन्य कुछ उद्धरणों में मिलता है, परन्तु इस वचन में पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है: ''उन्होंने उसे तीस चांदी के सिक्के तौलकर दे दिए'' (मत्ती 26:15; देखें जकर्याह 11:12)। इस प्रकार से यह विवरण इस बात की पुष्टि करता है कि यह राशि ईश्वरीय प्रकाशन से की भविष्यद्वाणी का पूरा होना था।

यहूदा ने अपने अंदर धन का लोभ आने दिया और उसने उस लोभ को अपने अंदर खतरनाक काम करने दिया। स्पष्टतया उसे यह अहसास नहीं था कि जो भी कोई धन से प्रेम करता है वह बड़े खतरे में पड़ जाता है, चाहे वह मसीह का प्रेरित ही क्यों न हो।

ऐसा लगता है कि यीशु की सेवकाई में किसी समय यहूदा को प्रेरितों को मिलने वाले चंदे का खजानची बना दिया गया था (देखें यूहन्ना 12:6; 13:29)। बाद में यीशु की सेवकाई में, जब मरियम ने यीशु के पांवों पर महंगा इत्र मला, तो यहूदा एक अर्थ में चिल्ला उठा, ''कितनी बर्बादी कर रही है! हमें चाहिए था कि इसे बेचकर मिलने वाला पैसा कंगालों को देते!'' (मरकुस 14:5)। यूहन्ना 12:6 उसके लिए कहता है, ''उसने यह बात इसलिये नहीं कही कि उसे कंगालों की चिन्ता थी परन्तु इसलिये कि वह चोर था, और उसके पास उनकी थैली रहती थी और उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था।''

समय बीतने पर, यहूदा ने भौतिक वस्तुओं को पाने की अपनी लालसा को तब तक बढ़ने दिया, जब तक ये उस पर हावी नहीं हो गईं। जब उसका नियन्त्रण धन पर था, तब तक तो सब ठीक था और उससे वह प्रेरितों की आवश्यक सेवा करता था; परन्तु फिर धन के लोभ ने यहूदा पर नियन्त्रण कर लिया और उसके हृदय को अपना गुलाम बना लिया। लालच उसके मन के किसी छोटे से कोने में से निकलकर एक बड़ा पहाड़ बन गया, जिसने उसके मन को भर दिया।

निर्गमन 21:32 के अनुसार, जो राशि यहूदा ने मांगी थी वह गुलाम के लिए आम तौर पर दी जाने वाली कीमत थी। मैक्गार्वे का मानना था कि चांदी के ये तीस सिक्के समझौते की केवल पेशगी थे।[116] फिर भी यहूदा को अपने सौदे की मिली मामूली सी राशि इतिहास का सबसे घटिया सौदा था।

उसके पेशकश से धार्मिक हाकिमों की यह समस्या सुलझ गई कि यीशु को फसह से पहले कैसे गिरफ्तार किया जाए। यहूदा को यीशु की आदतों का पता था (यूहन्ना 18:2) और वह अधिकारियों को वहां ले जा सकता था, जहां वे यीशु को गुप्त रूप में कैदी बनाकर ले जा सकते थे।

इस तथ्य से कि यहूदा द्वारा की गई गलती योजनाबद्ध ढंग से थी, इसे पाप का एक और विस्तार बना दिया। जब कोई पाप करने की योजनाएं सोच समझकर बनाता है, तो वह परमेश्वरर के विरुद्ध विद्रोह कर रहा होता है और हो सकता है कि वह कभी मन न फिराए।

2. यहूदा का विश्वासघात *एक ऐसी गलती* था जिसमें दूसरे लोग शामिल थे। उसने अपने पाप में प्रधान याजकों को जानबूझकर शामिल किया। इतना भयंकर विचार! उनके साथ उसके सम्पर्क के कारण यह पाप और बढ़ गया। हम पढ़ते हैं, ''तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे'' (14:10)। यहूदा इस पाप को अकेले नहीं कर सकता था; इसके लिए उसे दूसरों का सहयोग आवश्यक था। पाप को साथ पसन्द है और कई बार इसकी आवश्यकता होती है!

बाद में यहूदा बाग के फाटक पर यीशु के पास उसे पकड़ने के लिए जाने वाले दल के आगे-आगे था। यीशु उनकी ओर बढ़ा, अपनी पहचान करवाई और अपने आपको उनके सुपुर्द किया (यूहन्ना 18:7, 8)। उसने अपनी पहचान के लिए यहूदा को अनावश्यक बना दिया, जो कि याजकों के साथ हुए उसके सौदे का भाग था। फिर भी यहूदा ने वह करना चुना जो उसने करने का वचन दिया था। अफ़सोस की बात है कि यहूदा ने अगला कदम उठा लिया। वह यह सोचने के लिए नहीं रुका कि उसे पापपूर्ण समझौते को पूरा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह सौदा करने के लिए क्षमा मांगकर पैसे लौटा सकता था और यीशु से क्षमा मांग सकता था और सही काम करना आरम्भ कर सकता था। परन्तु शैतान उस पर हावी था।

विश्वासघात चुम्बन से पहले और बाद में भी, यीशु ने उसे डांटा होगा। लूका कहता है, ''वह यीशु के पास आया कि उसका चूमा ले। यीशु ने उससे कहा, 'हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?''' (लूका 22:47, 48)। मत्ती कहता है कि चूमा लेने के बाद यीशु ने उससे कहा, ''हे मित्र, जिस काम के लिए तू आया है उसे कर ले'' (मत्ती 26:50)। दूसरे शब्दों में, यहूदा हमारे प्रभु की डांटों, फटकारों और रहमदिली को बेकार समझकर विश्वासघात की योजना के हर भाग के साथ आगे बढ़ गया। वह उस भयंकर काम करने और इसे करते रहने से रोकने की यीशु की हर बात को ठुकराकर उसे करता रहा।

कोई गलती अचानक से बड़ा पाप बन सकती है, जब वह पाप दूसरों को बुराई करने के लिए अगुआई करने वाला या प्रोत्साहित करने वाला हो। मीका ने कहा था, ''हाय उन पर, जो बिछौनों पर पड़े हुए बुराइयों की कल्पना करते और दुष्ट कर्म की इच्छा करते हैं'' (मीका 2:1)। यीशु ने एक और हाय कही, ''हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है'' (मत्ती 18:7)। अपने आपको ठोकर लगना बुरा है परन्तु इससे भी बुरा है जो दूसरों के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, ठोकर का कारण बनना है।

3. यहूदा ने *भयानक गलती* की। उसने वास्तव में यीशु को, जो लोगों को अनन्त जीवन दिलाने के लिए संसार में आया था, बेच दिया। उसने यीशु को हत्यारी भीड़ को सौंप देना चुना जो उसे क्रूस पर चढ़ाने पर तुली हुई थी। कोई इनसान ऐसा करने की बात सोच कैसे सकता है?

सौदा हो जाने के बाद, यहूदा ने अपना ध्यान यीशु को दुष्टों के हाथ में सौंप देने पर लगाया। बाइबल में यहूदा के इरादों को विस्तार से नहीं बताया गया जिनके कारण उसने यह दुष्ट कार्य किया; हमें केवल उस शपथ के बारे में बताया गया है जो उसने उन लोगों के साथ खाई जो यीशु

को मार डालने पर तुले हुए थे।

परमेश्वर के पुत्र ने, जो सब के मनों को जानता है, अपने प्रेरित बनाने के लिए यहूदा और ग्यारहों को चुना (मत्ती 10:2-4; मरकुस 9:16-19; लूका 6:14-17)। रात भर प्रार्थना करने के बाद, यीशु ने अपने चेलों में से इन लोगों को चुना क्योंकि उनमें वे गुण थे जो उसे अपने मिशन को पूरा करने के लिए तैयार किए जाने वाले लोगों में चाहिए था। ऐसा नहीं कि इस चयन में यीशु ने यहूदा के चरित्र के दोष या मन की कमज़ोरी पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि उसने यहूदा में क्षमता और समर्पण को देखा और उसने उसे किसी भी अयोग्यता या निर्बलता पर काबू पाने का अवसर दिया।

अपने चुने जाने पर यहूदा ने आनन्द, जोश और खराई के साथ मसीह के राजदूत के रूप में काम करना स्वीकार किया। प्रेरितों में से किसी ने भी उसकी ईमानदारी पर संदेह नहीं किया या उसकी योग्यता पर सवाल नहीं उठाया। बल्कि इस टोली ने उसे अपना खजानची चुन लिया (यूहन्ना 13:29)। यीशु किसी भी व्यक्ति को आत्मिक रूप में बढ़ने और उन्नति करने देगा, परन्तु उसे उस आत्मिक राज्य के ईश्वरीय मानदण्ड के अनुसार रहना आवश्यक है, जिसे यीशु इस संसार में लाया।

यहूदा प्रतिभावान, महत्वाकांक्षी प्रेरित होने से धूर्त, चलाक धोखेबाज विश्वासघाती कैसे बन गया? वह मसीह के भरोसेमंद, श्रद्धालु से जो कि ईमानदार था, धोखेबाज़ शैतान कैसे बन गया? बाइबल का ध्यान से अध्ययन करने पर पता चलता है कि यह झुकाव धीरे-धीरे और सूक्ष्म रूप में बना, जिसमें छोटे-छोटे कई निर्णय अंत में उससे विनाशकारी विश्वासघात के लिए तैयार करते रहे। उसने अंधी धुन के लिए अपने मन की खिड़की को थोड़ा सा खोला; बाद में वह बुरी लालसा को अपने अंदर आने देता रहा, और उसे अपने मन में बसाता रहा। अंत में उसने भयानक लालसा को अपने मन में पक्के तौर पर आने दिया। धीरे-धीरे उसने अपने अच्छे मन को लालची मन में बदल दिया।

धन का लोभ लोगों को बुरे और हिंसक बना सकता है। पौलुस ने इसकी साफ़ चेतावनी दी: ''पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं'' (1 तीम. 6:9)।

निष्कर्ष: यहूदा ने भयानक गलती की। उसने जानबूझकर पाप किया, जो कि एक ऐसा अपराध था, जिसमें दूसरे लोग शामिल थे। वह दुष्ट काम आज भी संसार में है, जो लोगों के मनों को परेशान करता है। उसने बुराई के साथ गुप्त, घिनौनी संगति के लिए यीशु के साथ संगति को छोड़ दिया।

विश्वासघात का यह कार्य दो तरफ़ा नाटक है: जिसका एक पक्ष यहूदा है और दूसरा पक्ष यीशु है। यहूदा कहानी के बुरे भाग लालच, धोखेबाजी, बड़े से बड़े सभी विशषाधिकारों का लाभ न ले पाना और व्यक्ति के मन के साथ शैतान को काम करने देने को दिखाता है। यीशु उस सब को दर्शाता है जो अच्छा है। उसका प्रेम किसी को भी आसानी से जाने नहीं देता; यह वह प्रेम है जो दूसरे सब, यहां तक कि पुराने मित्रों को भी छोड़ जाने पर, साथ रहता है। यीशु ने वह सब किया जो पवित्र परमेश्वर यहूदा को बचाने के लिए मानवीय स्वतन्त्रता के साथ मिलकर

कर पाया।

यदि यहूदा यीशु के पास आकर, उसके सामने अपनी गलती मानकर, मन फिराना चुन लेता तो निरश्चय ही उसे क्षमा किया जा सकता था। इसके अलावा उसकी कहानी बाइबल में मन फिराव की सबसे बड़ी कहानियों में से एक होती। यदि वह अपने प्रभु के पास लौट आता, तो क्या हम हर पापी को यहूदा के मन फिराव की कहानी न बता रहे होते, जिसे उद्धारकर्त्ता के पास जाने का रास्ता ढूंढ़ने की आवश्यकता है।

हम इस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं। अपने दु:ख के सामने हार मानकर, साफ है कि यहूदा ने मन से कहा, ''मैं जानता हूं कि वह पेड़ कहां है जिसकी टहनी एक टीले के साथ लगती है। मैं उस टहनी पर रस्सा डालूंगा, फंदा लगाऊंगा और अपने निकम्मे जीवन को समाप्त कर दूंगाा। मेरे लिए कोई आशा नहीं बची।'' (देखें मत्ती 27:5.) यीशु की पेशियों को खत्म होने की ओर बढ़ने के साथ-साथ यहूदा उस पेड़ की ओर चला गया। उसने रस्से को खिसकनी गांठ दी और फंदा गले में डाल लिया। कांपते हुए हाथों से उसने रस्से को पेड़ से बांधा। अंतिम बार पीछे को देखने के बाद जहां पेशियां हो रही थीं, वह टीले की ओर मुंह किया और नीचे भूमि की ओर देखा। आंखें बंद करते हुए और गहरी सांस लेते हुए उसने किनारे से छलांग लगा दी। रस्सी कस गई और यहूदा अपनी जगह पर यानी उस नियती में चला गया जहां पर उसके निर्णय उसे ले गए थे। इस आदमी के जीवन पर, प्रभु की बातों का विलाप पेड़ पर लटके हुए है: ''यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता'' (मत्ती 26:24)।

अपने अगुवे को देखना (14:12-16)

14:12-16 का यह संक्षिप्त हवाला, एकदम मार्मिक और चुभता हुआ है। यह हमें भावनात्मक रूप में यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की काली रात में ले जाता है। पवित्र शास्त्र के सबसे विचलित कर देने वाले विवरणों में से यह एक है। चेलों को पता नहीं था परन्तु यीशु को इसका पता था। इससे पता चलता है कि यीशु पृथ्वी पर के अपने जीवन के अंत तक अपने प्रेरितों से कितना प्रेम करता था। यूहन्ना की टिप्पणी है: ''फसह के पर्व से पहले, जब यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा'' (यूहन्ना 13:1)।

दोपहर को और शाम को, यीशु ने उस पक्के, निजी सम्बन्ध को दिखाया जो उसने अपनी निजी सेवकाई के दौरान अपने प्रेरितों से बनाए रखा था। उसकी इस तस्वीर में, नेतृत्व के उसके मौलिक गुण जो उसने हमेशा दिखाए, हमारी समझ, सराहना और प्रशंसा के लिए शोर मचाते हैं।

1. यह घटना यीशु *ईश्वरीय ज्ञान की सामर्थ* को दिखाती है। 14:13 में जिन दो प्रेरितों का नाम बताया गया है, वे पतरस और यूहन्ना थे (देखें लूका 22:8)। यीशु ने इन दोनों को बताया:

> ''नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना; और वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?' वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो'' (14:13-15)।

चेलों ने फसह मनाने के लिए तैयारियां करनी थीं। बड़ा काम उपलब्ध जगह की पहचान करना था। जगह का पता चल जाने पर दूसरी तैयारी आसान हो सकती थी। उनके और कामों में मेमने को बलि करना और इसे भूनना आरम्भ करना होना था। निर्गमन 12:6 के अनुसार मेमना गोधूली के समय बलि किया जाना आवश्यक था। भोज नगर में खाया जाना और बाकी की रात यरूशलेम के आस पास सीमाओं के भीतर बिताई जानी थी।

जगह के सम्बन्ध में, ईश्वरीय ज्ञान के साथ यीशु यह कहते हुए निर्देश देने लगा। ''नगर में जाओ'' (14:13)। उसे उस व्यक्ति की पहचान पानी का घड़ा ले जाते हुए एक आदमी के रूप में बताई जिन्हें चेलों को घर ले जाना था (14:13)। आम तौर पर पानी के घड़े महिलाएं उठाती थीं, परन्तु पतरस और यूहन्ना को पानी का घड़ा उठाकर जाते हुए एक आदमी को देखने के लिए कहा गया था। यह आदमी सम्भवतया गुलाम था। यीशु ने घर के स्वामी या मालिक की पहचान भी बताई (14:14), जिसने उन्हें वह अटारी वाला कमरा दिखाना था जिसका इस्तेमाल उन्होंने करना था। यीशु ने उन्हें बताया कि कमरा उनके लिए सजाया गया और तैयार किया गया होना था (14:15)। वचन कहता है, ''चेले निकलकर नगर में आये, और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया; और फसह तैयार किया'' (14:16)।

हमारा प्रभु यीशु अंतरयामी है। वह भूत, वर्तमान और भविष्य को जानता है। वह स्वर्ग से आया है, और उसे पता है कि हमें वहां कैसे ले जाना है। वह कभी अपनी प्रतिज्ञाओं को नहीं भूलेगा, हमारी विनतियों को गलत नहीं समझेगा, हमारी पीड़ाओं को नज़रअंदाज़ नहीं करेगा या हमारी आवश्यकताओं की उपेक्षा नहीं जानेगा।

2. इस फसह की घटना हमें याद दिलाती है कि हमारा अगुआ किस प्रकार से *आज्ञा मानने की दीनता* का उदाहरण है। यीशु हमें वह बनाता है जो वह खुद है। यह हवाला हमें दिखाता है कि यीशु ने फसह को मनाया था, वैसे ही जैसे उसके समय के यहूदी मनाते थे। उसने कहा था:

> यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा (मत्ती 5:17, 18)।

परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का वह सिद्ध उदाहरण है।

3. हमारा अगुआ *संगति के उत्साह* को दिखाता है। पृथ्वी पर की उसकी सारी सेवकाई उन बारह पुरुषों के इर्द-गिर्द बनी थी जिनमें उसने अपनी शिक्षा और बातचीत के साथ अधिकतर समय दिया। आने वाले राज्य की नींव रखते हुए परमेश्वर के पुत्र ने आत्मिक लोगों की संगति में पृथ्वी पर का अपना जीवन बिताया।

इस काली रात का सामना करते हुए, यीशु को अपने चुने हुए लोगों की संगति की आवश्यकता थी। उसने अधिकतर रात उन चुनौतियों की बात करते हुए जो उनके सामने आनी थीं, बिताई।

4. इस हवाले में जो कुछ यीशु ने किया और कहा वह यह दिखाता है कि वह *तरस करने*

वाला अगुआ है। यीशु सबसे तरस करने वाला व्यक्ति है जो कभी इस पृथ्वी पर कभी रहा हो। उसके चेलों का सामना अपने सर्वशक्तिमान मित्र के गिरफ्तार होने, पेशियों और क्रूस पर चढ़ाए जाने से होना था। उसका मन उनके लिए दुःखी था।

उसके चुने हुए प्रेरितों में से एक ने उनका इनकार करना था, एक ने चांदी के तीस सिक्कों के लिए उसे पकड़वा देना था, और उनमें से अधिकतर ने विरोध का सामना होने पर डर से भाग जाना था (14:50)। एक अर्थ में इस सब के बावजूद, यीशु ने कहा, ''आओ, हम फसह मिलकर खाएं।'' इस परिस्थिति में उसने इन्हें जो कुछ उनके साथ होने वाला था, प्रेम से गले लगाना था और उन्हें याद दिलाना था किसी ने उसे छोड़ देने पर उनके लिए प्रार्थना करते हुए और उनके लौट आने की राह देखते हुए।

निष्कर्ष: यीशु हमारा महान अगुआ है। वह हमें पूर्वज्ञान के साथ, आज्ञाकारी होने का उदाहरण देकर, स्नेहपूर्ण संगति देकर और करुणा के साथ अगुआई देता है। इससे अच्छा अगुआ और प्रभु हमें नहीं मिल सकता था।

किसी ने सही ही कहा है, ''व्यक्ति पैदा तो असली होता है, परन्तु मरता नकली है।'' हर व्यक्ति के लिए अपनी नकल का रास्ता चुनना आवश्यक है। सवाल यह नहीं है कि ''क्या मैं किसी की नकल करूं?'' बल्कि यह है कि ''मैं किसकी नकल करूं?'' चेला मसीह-ही यानी मसीह के पीछे चलने वाला है।

यीशु देहधारी परमेश्वर के रूप में हमारा उदाहरण, संसार की ज्योति बनने के लिए आया। उसका उदाहरण सिद्ध, ऊंचा करने वाला, संतोष देने वाला और सच्चा है। सिद्ध होने से ये अद्‌भुत गुण केवल यीशु में मिलते हैं। पूरी तरह से इन्हें केवल परमेश्वर का पवित्र पुत्र दिखा सकता है।

आइए हम यीशु के पीछे चलना चुनें, जो कि एकमात्र अगुआ है जो हमें उस रूप में बदल सकता है जो हम इस सांसारिक जीवन में पाना चाहते हैं। वह हमें इस संसार के जंगल में से परमेश्वर के सनातन घर के प्रकाश में ले जा सकता है।

यीशु का पकड़वाया जाना (14:17-21)

इन घटनाओं में जो उस रात घटीं जब परमेश्वर का पुत्र यीशु गिरफ्तार किया गया था, दिखाए गए पाप से बड़े किसी पाप की कल्पना करना कठिन होगा।

उसके पकड़वाए जाने की पृष्ठभूमि पर विचार करें। यह पृथ्वी पर यीशु की अंतिम रात थी। उसके लिए अपने प्रेरितों का साथ सबसे प्रोत्साहित करने वाली और सबसे आवश्यक थी। परन्तु इस शाम, पाप उस पवित्र अटारी वाले कमरे के आस पास, मन्दिर में और नगर की अदालतों में पसर गया।

इसके अलावा इसकी *कठोरता* पर विचार करें। सब सच्चाइयों में सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि यीशु हमारे बीच में आया, रहा और विचरा। मनुष्य संसार में यीशु की उपस्थिति का आनन्द लेते हुए परमेश्वर के चेहरे को छू सकता था। यहूदा उसके साथ बैठता, उसके साथ खाता, और रोज़ उसकी बातें सुनता था, परन्तु उस रात उसने चांदी के तीस सिक्कों में उसे बेच डाला।

इसके अलावा, उसके विश्वासघात की *दायरे* पर विचार करें। इसका प्रभाव विश्वव्यापी था।

जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक करोड़ों लोग इस अपराध को याद करते रहेंगे। समय में एक पाप, एक मनुष्य और एक अंधेरा क्षण सदा की याद, अनन्तकालिक त्रासदी बन गया!

''यह मेरा लहू है'' (14:22-25)

अपने चलों के साथ फसह खा लेने के बाद, यीशु ने उनका ध्यान एक और भोज की ओर दिलाया, जो वह उनके साथ लेना चाहता था। उसने रोटी ली, जो कि फसह के भोजन में से ली गइ अखमीरी रोटी थी, और उन सब को इसमें से लेने को कहा। इससे आशीष देने के बाद, उसने उनसे कहा, ''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है'' (लूका 22:19; देखें मरकुस 14:22)। उसके शब्द पृथ्वी पर की उसकी सारी सेवकाई में फैल गए और विशेषकर उसके देहधारी होने, क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसकी निकट आती मृत्यु के बदल को दिखाते हुए, उसकी बलिदानी मृत्यु के साथ खत्म हुए।

फिर, यीशु ने दाख के रस वाला कटोरा लिया और सब प्रेरितों से इसमें से पीने को कहा। इसके लिए धन्यवाद देने के बाद, उसने कहा, ''यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28; देखें मरकुस 14:24)।

परिस्थिति अपने आप में यह ज़ोर दे रही थी कि हमारा उद्धारकर्त्ता प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। रोटी उसका वास्तविक शरीर नहीं हो सकती थी, न ही कटोरे में उसका वास्तविक लहू हो सकता था; क्योंकि वह तो अपने चेलों के साथ था और निजी तौर पर उन्हें रोटी और कटोरा प्रस्तुत कर रहा था। वह यादगारी भोज की स्थापना कर रहा था जो उसकी मृत्यु को याद करने के लिए होना था, जो जल्द ही होने वाली थी।

पहली बार अटारी वाले कमरे में इस भोज को मनाते हुए, प्रेरितों को इसे लेने के महत्व की सही समझ नहीं थी। जो कुछ होने वाला था, उसका पूरा अर्थ अभी उन पर प्रकट नहीं हुआ था। वे उसकी मृत्यु के बारे में थोड़ा बहुत जानते थे, क्योंकि यीशु उन्हें इसके बारे में बताता रहता था (मत्ती 16:21; मरकुस 8:31; 10:32-34); परन्तु उन्हें इसकी जो यीशु उन्हें बता रहा था, इतनी समझ नहीं थी। बाद में उन्होंने उसकी बातों को याद करके, उसके गहरे अर्थ को समझ पाना था जो उसकी बातों में उन्हें बताया गया था।

अपने लहू के बारे में कहे गए उसके शब्द कितने आशा और प्रोत्साहन से भरे थे! ''तुम सब इस में से पीओ; क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:27, 28; देखें मरकुस 14:23, 24)। उसकी बात के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से विचार किया जाना चाहिए।

1. *''इसमें से पीओ, क्योंकि यह ... मेरा लहू है।''* यहां पर हम उसके बलिदान की गहराई को देखते हैं। जो भेंट वह दे रहा था उसके लिए उसके जीवन का पूरा भाग दिया जाना आवश्यक था। यीशु ने ''मेरा लहू'' शब्दों में अपने बलिदान के पूर्ण होने को संक्षिप्त कर दिया, क्योंकि लहू प्राण का पर्यायवाची है। अपने लहू को बहाते हुए, यीशु ने अपने प्राण को बहा दिया। प्राचीन इस्राएलियों को परमेश्वर ने बताया था, ''क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है'' (लैव्य. 17:11)।

2. *''इसमें से पीओ, क्योंकि यह वाचा का मेरा लहू है।''* यहां हम उसके बलिदान की *लम्बाई* को देखते हैं। ''वाचा'' (διαθήκη, *diathēkē*) शब्द उस करारनामे का संकेत देता है जो परमेश्वर ने उन सब लोगों से किया जिन्होंने उद्धार के लिए उसके पास आना था। उसके बलिदान की अवधि उस वाचा में देखने को मिलती है जो उसके लहू ने पक्की की। इब्रानियों के लेखक ने कहा है:

> परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं। और बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। ... इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रा. 9:11-15)।

यीशु की मृत्यु से, वाचा के रूप में, पूरे मसीही युग के लिए, जो कि संसार का अंतिम युग है, उद्धार का मार्ग मिलना था।

3. *''इसमें से पीओ, क्योंकि यह ... मेरा लहू है जो बहुतों के लिए ... बहाया जाता है।''* यहां हम उसके बलिदान की *चौड़ाई* को देखते हैं। यीशु का लहू पृथ्वी के सब लोगों तक पहुंचना था। यह फैलाव हमें बताता है कि यीशु को कैसे देखा जाए: ''पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दु:ख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे'' (इब्रा. 2:9)। उसने हर किसी के लिए जिसने उसके सुसमाचार के संदेश को ग्रहण करके उसके लहू में धोया जाना था, मरना था। पृथ्वी की जनसंख्या की तुलना में चाहे बहुत कम लोग एक समय में या एक जगह पर आज्ञा मानते हैं, परन्तु उद्धार पाए हुए लोग सारे संसार भर के ''बहुत से'' लोगों में शामिल होंगे।

4. *''इसमें से पीओ, यह मेरा लहू है जो ... पापों की क्षमा के निमित बहाया जाता है।''* यहां हम उसके बलिदान की *ऊंचाई* को देखते हैं। यीशु हमारे पापों को मिटाने के लिए, हमारे अपराधों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बनने के लिए मरा। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर ने उनसे जिन्होंने उसके पास आना था, कहा, ''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण करूंगा'' (इब्रा. 8:12)। मूसा की व्यवस्था वाले पशुओं के बलिदान निरन्तर और बार-बार चढ़ाए जाते थे (इब्रा. 10:11-13)। हमारे प्रभु की मृत्यु निरन्तर और सदा तक के लिए प्रभावी थी।

निष्कर्ष: अटारी वाले कमरे में कहे गए यीशु के शब्द सरल, सीधे और थोड़े थे, परन्तु उनमें छुटकारे के विचारों का बड़ा दायरा है जो हमारे उसके भोज में भाग लेने पर हमारा मध्यस्थ बनता है (मत्ती 26:27, 28)। यहां पर संक्षिप्त और प्रतीक रूप में उस बड़े और महिमामय उद्धार की गहराई, लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई मिलती है, जिसे यीशु अपनी मृत्यु के द्वारा लाया।

''मेरे स्मरण के लिए'' (1 कुरि. 11:24; देखें मरकुस 14:22-25)

अपने चेलों के निरन्तर मनाने के लिए, भोज की स्थापना करते हुए, यीशु ने भोज के यादगारी होने को दोहराते हुए ज़ोर दिया। रोटी के लिए धन्यवाद देने के बाद और दाख के रस के लिए धन्यवाद देने के बाद, दो बार उसने उन्हें चेताया, ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरि. 11:24, 25)।

अपने ''स्मरण'' की बात से उसने अपने प्रेरितों को भोज की तीन बड़ी विशेषताएं याद दिलाईं। संकेत से उसने इसके निरन्तर मनाए जाने की ओर संकेत किया। उनके इसमें से लेने पर यानी भविष्य में इसे लेने पर, हर बार उसे स्मरण करना आवश्यक था। दूसरा, उसने भोज के फोकस को समझाया। यह उसके सम्मान में होना था: ''*मेरे* स्मरण के लिए यही किया करो।'' तीसरी विशेषता इसका पीछे की ओर फोकस था। यह पीछे की ओर देखने का माध्यम होना था।

पुराने नियम के बलिदानों के सम्बन्ध में इब्रानियों 10:1-3 में ''स्मरण'' शब्द इस्तेमाल हुआ है। व्यवस्था ''आने वाली वस्तुओं का प्रतिबिम्ब [था] परन्तु उनका असली स्वरूप नहीं।'' इस कारण प्रतिवर्ष लगातार चढ़ाए जाने वाले बलिदान किसी को भी कभी सिद्ध नहीं बना पाए। हम पढ़ते हैं कि ''नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का *स्मरण* हुआ करता है'' (इब्रा. 10:1-3)।

पुराने नियम के बलिदान, ''स्मरण'' का माध्यम थे। उनसे आराधना करने वालों को उनके पापों का जो उन्होंने किए होते थे, स्मरण रहता था। यही प्रभु भोज में भी है। भोज में भाग लेना प्रभु यीशु को स्मरण करने का अवसर और माध्यम देता है।

यह देखते हुए कि भोज यीशु के ''स्मरण'' के रूप में हमारे सामने कैसे रखा गया, आइए भोज की इस विशेषता पर ध्यान करते हैं।

1. भोज लेते हुए हमारा ध्यान पीछे उस पर चला जाता है *जो उसने किया*। यह भोज का ऐतिहासिक पहलू है। हम अपने मनों में उस पर विचार करते हैं जो यीशु के साथ हुआ। हम पवित्र शास्त्र के लैंस में से पेशियों, कोड़े मारे जाने, क्रूस तक जाने, क्रूस पर दुःख उठाने के छह घण्टे और क्रूस पर चढ़ाए जाने के आस पास की सब घटनाओं पर विचार करते हैं।

मसीहियत की जड़ें इतिहास में यानी यीशु के वास्तविक जीवन और पुनरुत्थान में हैं। अपने अस्तित्व के लिए ऐसे ऐतिहासिक आधार का दावा कोई और धर्म नहीं कर सकता।

2. इस भोज में, हम अपने मनों को पीछे ले जाते हैं कि जो कुछ उसने किया वह कैसे किया। यह भोज का ईश्वरीय पहलू है। यह केवल एक मृत्यु नहीं थी बल्कि परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु थी।

यह स्मरण किए बिना कि उसकी मृत्यु कैसे हुई, यीशु की मृत्यु पर गम्भीरता से विचार नहीं किया जा सकता। पतरस ने कहा कि यीशु ने ''न तो पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था'' (1 पतरस 2:22, 23)। अपने प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाइबल द्वारा दिखाई गई तस्वीर को देखने पर हमें तीन नकारात्मक और एक सकारात्मक बात मिलती है। उसने पाप नहीं किया, उसने पलटकर

बदला नहीं लिया और उसने धमकी नहीं दी, बल्कि अपने आपको परमेश्वर के सुपुर्द कर दिया।

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की ऐसी समीक्षा हमें एक निष्कर्ष पर लेकर आती है: ''मैं परमेश्वर के पुत्र को मरते हुए देख रहा हूं!'' हम अपने आपको प्रभु के प्रत्येक दिन (रविवार) में सूबेदार के जूते पहने देखते हैं। हम जानते हैं कि मसीह को क्रूस पर हमने चढ़ाया है; परन्तु उस पूरी लहू-लुहान घटना में उसके बरताव को देखकर हमें उसकी ओर देखकर यह घोषणा करनी पड़ेगी कि ''निश्चय ही यह मनुष्य धर्मी था'' (लूका 23:47); ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!'' (मत्ती 27:54)। यूहन्ना ने लहू की गवाही की बात की (1 यूहन्ना 5:8); यानी लहू के प्रमाण का कुछ भाग यीशु का दिखाया गया आचरण यानी वह स्वर्गीय स्वभाव है।

3. मेज़ के पास बैठने पर हमारा ध्यान पीछे की ओर जाता है कि *जो उसने किया वह क्यों किया*। यह भोज की सहभागिता का भाग है। हम अपने प्रभु के साथ बैठते हैं और याद करते हैं कि वह *हमारे लिए* कैसे मरा।

भोज की व्याख्या करते हुए यीशु ने दो बार ''तुम्हारे लिए'' कहा (लूका 22:19, 20; देखें मत्ती 26:27, 28; मरकुस 14:23, 24)। उसने कहा कि उसकी देह ''तुम्हारे लिए दी'' गई और यह कि कटोरा ''तुम्हारे लिए बहाया'' गया। उसका दु:ख सहना प्रतिनिधिक था यानी यह हमारी जगह था। वह अपने किए पापों के लिए व्यवस्था के न्याय को पूरा करने के लिए नहीं, बल्कि हमारे पापों के सम्बन्ध में परमेश्वर के न्याय को पूरा करने के लिए मरा। हमारे लिए उसे कोड़े मारे गए, हमारे लिए उसे ठट्ठा किया गया, हमारे लिए उसके ऊपर थूका गया, हमारे लिए क्रूस पर कीलों से ठोका गया, हमारे लिए स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रोका गया, और हमारे लिए परमेश्वर द्वारा त्यागा गया, अंत में वह हमारे लिए मर गया।

हमारे प्रभु की मृत्यु की शाम, यीशु ने यह यादगारी शब्द कहे: ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।'' ''स्मरण'' शब्द में विस्तार है, क्योंकि सभी मसीह सप्ताह के हर पहले दिन यीशु की मृत्यु को याद करने के लिए इकट्ठा होते हैं (प्रेरितों 20:7)। इस शब्द में समय का अंतर भी है, क्योंकि हमारे प्रभु के चेले दो हज़ार वर्ष पीछे पृथ्वी पर यीशु के जीवन और मृत्यु तक पीछे चले जाते हैं। ''स्मरण'' में मेल जोल है, क्योंकि इस भोज में मसीह लोग स्वयं यीशु के साथ सहभागिता करते हैं। उसने अपने प्रेरितों को बताया, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ'' (मरकुस 14:25)। इस शब्द में निरन्तरता है क्योंकि मसीही लोग हर सप्ताह इस मेज़ पर बैठते हैं और तब तक बैठते रहेंगे, जब तक यीशु आता नहीं है। एक अर्थ में इसमें भाग लेना उन्हें जीवन देता है। इस शब्द में पवित्रता भी है, क्योंकि मसीही लोग इस भोज के द्वारा संसार की सबसे पवित्र घटना और पूरे इतिहास की सबसे पवित्र घटना यीशु की मृत्यु को स्मरण करते हैं।

निष्कर्ष: हम प्रभु के प्रत्येक दिन एकता में इस प्रकार से इकट्ठा हों जिसे संसार समझ नहीं सकता यानी मसीह के भोज के इर्द - गिर्द पारिवारिक एकता में। उसके भोज के द्वारा हम एक गहरे ध्यान में जाएं तो केवल यीशु पर ध्यान दिलाता हो। जो कुछ उसने किया, जैसे उसने किया और जिस कारण से उसने किया उस सब को स्मरण करते हुए हम परमेश्वर के पुत्र के साथ एक विशेष और विलक्षण संगति साझा करें।

अपनों के लिए यीशु का प्रेम (14:26-31)

यहां पर यरूशलेम में उस अटारी वाले कमरे में, फसह का मनाया जाना हो चुका था और यादगारी का प्रभु भोज आरम्भ हो चुका था। प्रभु ने अपनी विदाई के बारे में अपने प्रेरितों के साथ लम्बी बातचीत की (देखें यूहन्ना 13-16)। स्पष्टतया यहूदा के अपने विश्वासघात को पूरा करने के लिए चले जाने के बाद यीशु उन बड़े क्षणों पर विचार करने लगा जो उसके सामने आने वाले थे। उसने कहा ''जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, 'अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है; [यदि उसमें परमेश्वर की महिमा हुई है,] तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा और तुरन्त करेगा''' (यूहन्ना 13:31, 32)। अपनी पिता की योजना को पूरा करके यीशु को महिमा मिलनी थी, और अपनी सारी सृष्टि के लिए अपने प्रेम को दिखाकर उसके पिता को महिमा मिलनी थी।

जब प्रेरितों के साथ अपनी विदाई और इसके होने के ढंग के बारे में यीशु की बातचीत खत्म हो जाने के बाद उसने उनके लिए और उन सब के लिए जिन्होंने उसमें विश्वास लाना था प्रार्थना की (यूहन्ना 17:6-26)। उसने प्रार्थना की कि उसमें एक होने से उन्हें कोई रोक न पाए। फिर, ''फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए'' (मरकुस 14:26)। चाहे हम पक्का नहीं कह सकते, परन्तु गतसमनी की ओर जाते हुए यीशु ने अपने चेलों को यह चेतावनी अवश्य दी होगी कि उसी रात उन्होंने तितर-बितर हो जाना था ''तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: 'मैं रखवाले को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।' परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा'' (14:27, 28)।

यीशु के लिए यह रात कितनी भारी थी! उसे पता था कि क्या होने वाला है, और उसे पता था कि उसके प्रेरितों ने क्या करना है। क्रूस पर चढ़ाए जाने का दृश्य जो उसके दिलो दिमाग पर छाया हुआ था, वह किसी भी भारी से भारी बोझ से जो कोई उठा सकता है, भारी था। उस पर यह पता होना कि उसके प्रेरित उसे छोड़ जाएंगे, और भी दु:खी करने वाला होगा।

यीशु के विषय में यह घटना हमें क्या बताती है? यह हमारे उद्धारकर्त्ता की कैसी तस्वीर प्रस्तुत करती है?

1. संकेत से यह वचन इस बात की घोषणा करता है कि *हम से इतना प्रेम कोई नहीं कर सकता जितना यीशु करता है*। अपनी शारीरिक सोच से हमें आश्चर्य या चकित नहीं होना था, कि यीशु इन लोगों के साथ कोई सम्बन्ध न रखकर किसी नई टोली को ढूंढ़ना आरम्भ कर देता जो, अपने आपको उनसे अच्छा दिखाती। यहूदा पहले ही यीशु को पकड़वाने के लिए निकल चुका था (14:10)। उसे पता था कि पतरस ने तीन बार उसका इनकार करना था (14:30); और सभी प्रेरितों ने अपनी अपनी परिस्थितियों में उसे छोड़कर भाग जाना था (14:50)। उस उद्देश्य के हिसाब से जो यीशु के दिमाग में उनके लिए था ये लोग असफल लग रहे थे।

इस सब के बावजूद अपने प्रेरितों के लिए यीशु का प्रेम अटूट था। प्रेरितों से सम्बन्धित उसके काम और उसकी भावनाएं हमें रोमियों 5:7, 8 का स्मरण करवाती हैं: ''किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।''''जब हम पापी ही थे'' के पांच शब्द हमारा

ध्यान खींचकर हमें इस पर विचार करने को कहते हैं। उनका अर्थ यह है कि उस समय जब हम पाप की अवस्था में रह रहे थे, तो मसीह हमारे लिए मरा। जब प्रेरित छोड़कर भाग रहे थे, तब यीशु क्या कर रहा था? वह उनके लिए मरने जा रहा था ताकि उन्हें क्षमा किया जा सके, ताकि उन्हें उनके सब पापों से धोकर शुद्ध किया जा सके।

2. संकेत से यह वचन यह भी कह सकता है कि *हम पर उतना विश्वास कोई नहीं कर सकता जितना वह करता है*। यीशु ने इन पर भरोसा किया। उसने उन्हें याद रखने को कहा कि उसने उन्हें गलील में फिर से मिलना था (14:28)। पुनरुत्थान के बाद उसने उन्हें गलील में इकट्ठे करना था और उन्हें यह बताना था कि क्षमा किए जाने के बाद, उन्होंने संसार के लिए उसके दूत बनना था। उनके उसे बिल्कुल निराश करने से थोड़ी देर बाद ही, उसने उन्हें सुसमाचार सौंपकर उनके कंधों पर सारे संसार में उद्धार दिलाने वाला अपना संदेश फैलाने की जिम्मेदारी डाल दी (16:15)।

पतरस को बड़ा विश्वास था कि वह यीशु का इनकार नहीं करेगा। मरकुस ने इसे इस प्रकार से वर्णन कियाा:

> पतरस ने उससे कहा, ''यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।'' यीशु ने उससे कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही इसी रात को मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।'' पर उसने और भी जोर देकर कहा, ''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तेरा इन्कार कभी न करूँगा।'' इसी प्रकार और सब ने भी कहा (14:29-31)।

यीशु ने पतरस से कहा, ''शमौन, हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं के समान फटके, परन्तु मैं ने तेरे लिये विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना'' (लूका 22:31, 32)। पतरस ने कसमें खा खाकर और अपने आपको कोसकर यीशु का इनकार करना था, परन्तु यीशु को विश्वास था कि उसने उसके पास लौट आना था।

यीशु के हम पर छोड़ देने से पहले हम खुद पर छोड़ देंगे। यीशु अपने प्रेरितों के साथ रहा और अंत में उन्हें ऐसे बना दिया जो उसकी सामर्थ में दृढ़ होकर टिके रहे।

3. यह वचन यह भी संकेत देता है कि *हमें कोई भी वैसे क्षमा नहीं कर सकता जैसे यीशु करता है*। सब प्रेरितों को यीशु की क्षमा प्राप्त हुई। यहूदा को भी उसकी क्षमा मिल सकता थी यदि वह पश्चात्ताप करके उसके पास लौट आता। मन फिराने वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह से दूर नहीं है।

प्रेरितों की टोली में से केवल यूहन्ना ही क्रूस के पास था। हम नहीं जानते कि यीशु के क्रूस पर दिए जाने के समय दूसरे प्रेरित कहां थे। शायद इस डर से कि कहीं उन्हें भी क्रूस पर न चढ़ा दिया जाए, वे इधर - उधर छिपे हुए थे। शायद वे इतने घबराए हुए थे कि क्रूस के पास नहीं रह पाए। जब यीशु को अपने प्रेरितों की सबसे अधिक आवश्यकता थी, तब उनमें से केवल एक उसे दिलेरी देने के लिए उसके पास रहा। प्रेरितों में से किसी ने भी, यहां तक कि यूहन्ना ने भी, सही ढंग से दफ़नाए जाने के लिए यीशु के शव को मांगा नहीं।

यीशु का अनुग्रह अपरम्पार है; इसमें वह ईश्वरीय सामर्थ है जो हर युग के हर पश्चात्तापी पापी तक पहुंच जाती है। पौलुस ने कहा, ''हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है'' (इफि. 1:7)। क्षमा परमेश्वर के ''अनुपात के धन'' के अनुसार मिली है। जिस प्रकार से कोई धनवान उदारता से दान दे सकता है वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों पर बहुतायत से अनुग्रह को उण्डेलता है। उसने पुत्र के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह हमें सम्पूर्ण क्षमा देता है यानी हमारे किसी पाप को रहने नहीं देती। यह हमें अनन्त अनुग्रह देता है यानी किसी पाप को दोबारा क्षमा किए जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा यह हमें निरन्तर अनुग्रह देता है यानी जब हम ज्योति में चलते हैं, तो उसका लहू हमें बचाए रखता है (देखें 1 यूहन्ना 1:7)।

निष्कर्ष: यह वचन हमें यीशु की अद्‌भुत तस्वीर दिखाता है। कोई हम से उस प्रकार से प्रेम नहीं कर सकता जिस प्रकार से वह करता है। यह प्रेम सबसे बड़ा है। कोई हम पर वैसे विश्वास नहीं करता जैसे वह करता है। यह उसकी पूर्णता का भरोसा है। कोई हमें वैसे क्षमा नहीं करता जैसे वह करता है। यह उसकी ओर से सम्पूर्ण उद्धार है। कोई इससे बढ़कर क्या मांग सकता है? हमें अनन्त प्रेम, अनन्त आशा और अनन्त क्षमा मिली है!

हमने देखा है कि यह वचन यीशु को कैसे दिखाता है। ''देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी ...'' (1 यूहन्ना 3:1)। यीशु हमें परमेश्वर के पास ले जाने के लिए आया। अपनी मृत्यु के द्वारा। वह हमें परमेश्वर की संतान में बदल सकता है।

हम पौलुस के साथ यह कह सकते हैं, ''फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देता है? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?'' (रोमियों 8:34, 35)। हमने मसीह के प्रेम को, उसके बने रहने वाले बड़े प्रेम को देखा, जिससे हमें कोई चीज़ तब तक अलग नहीं करती जब तक हम खुद ढीठ होकर उससे अलग न होना चाहें। आइए उसके प्रेम को मान लें ताकि हमें अब और सदा सदा के लिए उसकी भरपूरी में रहना मिल सके! ''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की'' (कुलु. 1:19, 20)।

गतसमनी का संघर्ष (14:32-42)

आधी रात के निकट किसी समय, यीशु गतसमनी बाग में (14:32) यानी उस जगह पर गया जहां जैतून का तेल निकाल जाता होगा, क्योंकि इस शब्द का अर्थ ''कोहलू'' है। शाम के आरम्भ में, उसने अपने चेलों के पांव धोकर (यूहन्ना 13:5-15), उन्हें दीनता और सेवा के सबक दिए थे। उसने अपने प्रेरितों के साथ फसह मनाया था और उस भोज की स्थापना की थी, जो पूरे मसीही युग में उसकी मृत्यु की यादगार होना था (मरकुस 14:22-25)। उस भोज को लेने के बाद उसने अपने चेलों को विदाई उपदेश दिए (यूहन्ना 15; 16)। अपने इस दु:ख भरे अलविदा के अंत में, उसने महायाजक वाली वह बड़ी प्रार्थना की, जो यूहन्ना 17 में मिलती है।

अधी रात की घड़ी निकट आने (या शायद बीत जाने) पर अपने प्रेरितों के साथ वह गतसमनी की ओर निकल पड़ा। वे हिन्नोम की तराई में आए और किद्रोन नामक नाले के पार गए जो कि इसमें निश्चय ही उस लहू से लाल हो रखा था, जो मन्दिर में पसका के असंख्य मेमनों के बलि किए जाने से उसमें बह रहा था। शीघ्र ही वे बाग के प्रवेशद्वार के पास पहुंचे, जो जैतून पहाड़ के नीचे कहीं था। यह जैतून के वृक्षों वाला भूमि का एक टुकड़ा होगा, यानी वह जगह जहां पर यीशु आम तौर पर प्रार्थना के लिए आता था। शायद वह बाग के मालिक का जानकार था और उसने एकांत स्थान और प्रार्थना के लिए स्थान के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति ले रखी थी।

प्रवेश द्वार पर, उसने बाग में अंदर जाते हुए पतरस, याकूब और यूहन्ना को भी अपने साथ लिया और बाकी के आठ प्रेरितों को वहीं रहने दिया (14:33)। हम उस रात की हवा में जैतून के वृक्षों की धीमी धीमी सरसराहट होने की कल्पना कर सकते हैं। आधी रात को ज़बर्दस्त सर्दी हो गई और वहां पर घनघोर अंधेरा छा गया क्योंकि पेड़ों से अधिकतर नमी वाली भूमि ढकी हुई थी। उसने तीनों चुने हुए चेलों को उसके साथ जागने को कहा, क्योंकि वह प्रार्थना के लिए उनसे थोड़ी दूर जा रहा था (14:34)।

यीशु अपने मन में आने वाली भावनाओं को बहुत कम बताता था। सुसमाचार के विवरण उसके कामों और गतिविधियों का विस्तार में वर्णन करते हुए हमें बताते हैं कि उसने क्या किया। परन्तु लेखक उसके मन की भावनाओं को बताने का प्रयास बहुत कम करते हैं। उसके मन की भावनाओं को हम बहुत कम समझते हैं। हम लाज़र की कब्र पर उसके मरियम और मारथा के आंसू देखकर उसको तड़प को पढ़ सकते हैं (यूहन्ना 11:33)। जो कुछ उसने देखा उससे वह बड़ा दु:खी और परेशान हुआ था। यरूशलेम में अपने प्रवेश पर जैतून पहाड़ के किनारे पर पहुंचकर वह नगर को देखकर रोया (लूका 19:41)। वह उस पर जिसका उसे पता था कि लोग करने वाले हैं, खुलकर रोया। जब यीशु अटारी वाले कमरे में अपने प्रेरितों से मिला, ''यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, 'मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा''' (यूहन्ना 13:21)। यह भावुक कर देने वाले दृश्य; और अपने अनोखेपन के कारण, वे उसकी सेवकाई में पहाड़ की चोटियों की तरह खड़े हैं।

परन्तु गतसमनी में हम यीशु के मन को ऐसे देखते हैं जैसे हमने पहले कभी नहीं देखा। इसका एक संक्षिप्त, परन्तु स्पष्ट चित्रण इब्रानियों 5:7 में दिया गया है: ''यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उस को मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और विनती की और भक्ति के कारण उस की सुनी गई।'' यहां भावनात्मक संघर्ष और भारी मन की जो जिसने गतसमनी बाग में उसे भर दिया, एक मन को परेशान कर देने वाली तस्वीर है।

छह वाक्यांशों के साथ मत्ती, मरकुस और लूका ने[117] उसके मन के अत्यधिक भीतर के संघर्ष और पीड़ा को दिखाया है। बीच बीच में उन्होंने उसे अपने सबसे प्रिय साथियों को यह बताते हुए दिखाया है कि उसके मन में क्या चल रहा है। कहीं-कहीं, लेखकों ने वह बताया जो उन्हें लगा कि उसके अंदर है। इस बाग में यीशु ने वह झेला जो उसने अपने पृथ्वी पर के जीवन और सेवकाई में पहले कभी नहीं देखा था। जो कुछ हो रहा था हम उसे नहीं समझ सकते हैं,

परन्तु थोड़ा सा इसकी कल्पना आवश्यक कर सकते हैं।

1. *यीशु के संघर्ष में अत्यधिक पीड़ा थी।* उसने उन तीनों को जिन्हें वह अपने साथ लाया था, बताया कि उसका जी ''बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ'' (मरकुस 14:34)। उसके द्वारा इस्तेमाल किया शब्द περίλυπος (*perilupos*) गहरी उदासी को दर्शाता है। जैसे जैसे वह उस समय की ओर बढ़ रहा था जब उसने क्रूस पर अपने प्राण के ऊपर पाप के भयानक बोझ को उठाना था, वैसे-वैसे वह और परेशान हो रहा था। संसार का दोष उसके शुद्ध, निष्कलंक मन और हृदय पर बड़ी बुरी तरह से पड़ने वाला था।

2. *उसका संघर्ष मायूस करने वाला था।* मरकुस ने लिखा कि वह ''बहुत ही अधीर होने लगा'' (14:33)। अनुवाद हुए शब्द ''अधीर'' (ἐκθαμβέω, *ekthambeō*) का अनुवाद ''भयभीत'' भी हो सकता है। यीशु देह में परमेश्वर था यानी वह परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र दोनों था। वह पूर्ण मनुष्य बना था, परन्तु अभी भी वह परमेश्वरत्व में से दूसरा था। मनुष्यजाति के उद्धार की लड़ाई लम्बी, भयानक और डरावनी थी। उसका मनुष्य होना इससे परेशान था; उसकी ईश्वरीय आत्मा इस पर दुःखी थी।

3. *बाग में उसका संघर्ष उसके द्वारा उठाया जाने वाला सबसे भारी बोझ था।* वह ''व्याकुल होने लगा'' (14:33)। ''व्याकुल'' (ἀδημονέω, *adēmoneō*), या ''बड़ा भारी'' (KJV) का अर्थ है उस आने वाली घटना के होने वाले परिणाम से उसका जी बैठा जा रहा है। उसकी आत्मा अत्यधिक अधिक बोझ में दबी जा रही थी।

4. *उसका संघर्ष इतना कड़ा था कि यह उसकी शारीरिक देह को मृत्यु का अहसास दिला रहा था।* उसका मन ''बहुत उदास यहां तक कि मरने पर'' था (14:34)। उसका दुःख और शोक इतना बड़ा था कि डर था कि कहीं उसकी देह तनाव के आगे हार न मान ले। उसकी देह की इस हालत के कारण ही ''स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था'' (लूका 22:43)। यदि उसे बल न मिला होता तो हो सकता था कि वह हमारे लिए क्रूस पर अपनी देह को भेंट न कर पाता। यह क्रूस पर दिए जाने से पहले ही गिर जाती।

5. *उसका संघर्ष कष्टदायक था।* लूका ने कहा, ''वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा'' (लूका 22:44)। उसका शब्द ἀγωνία (*agōnia*) था, जो किसी की पूरी ऊर्जा के साथ कष्टदायक संघर्ष, पूरा ज़ोर लगाने को दर्शाता है। हम क्रूस पर दिए जाने के कष्टदायक दुःख को आसानी से देख सकते हैं, परन्तु आम तौर पर हमें गतसमनी में सही भयानक कष्ट दिखाई नहीं देता। अपने प्राण को लोगों की आत्माओं के लिए लड़ते को तैयार करते हुए यीशु उस कष्ट में गया जिसे कोई समझ नहीं सकता। हम इस बात में कि उसका पसीने से एक झलक को देख सकते हैं, ''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बून्दों के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका 22:44)। पवित्र आत्मा ने यह बताने के लिए कि अपनी कठिन परीक्षा के तनाव, खिंचाव और शक्ति पर यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी, वाक्य के केवल एक भाग का इस्तेमाल किया।

6. *उसके संघर्ष में अकेलापन था।* यीशु चाहता था कि उसके चेले उसके साथ हों, परन्तु उसे प्रार्थना की आवश्यकता इससे भी बड़ी थी। उनसे अलग होने पर भी वह चाहता था कि आत्मा और प्रार्थना में उसके साथ हों। चेले शाम की भावुक बातचीत से थके हुए थे और अब वह

आराम करना चाह रहे थे। लूका कहता है कि वे ''उदासी के मारे'' सो रहे थे (लूका 22:45)। उनकी आंखें थकावट से भारी हुई थीं। यीशु उस रात किसी भी और समय से बढ़कर उनका साथ और प्रार्थनाएं चाह रहा होगा, परन्तु उन्हें नींद आते जा रही थी। यीशु को अपनी भयानक घड़ी का सामना अकेले करने के लिए छोड़ दिया गया।

7. *उसके संघर्ष में बुराई की शैतानी शक्तियां ऐसे लगी हुई थीं जैसे वे पहले कभी नहीं लगी थीं।* अपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु की परीक्षा के बाद शैतान ''कुछ समय के लिए'' उसके पास से चला गया (लूका 4:13; KJV)। बाद में शैतान उसके विरोध में जितनी ताकतवर सेना लेकर आ सकता था, आया। शैतान के साथ मसीह का पहले वाला सामना इस सामने की तत्कालिता और भयावहता से बढ़कर नहीं था। अंधकार के संसार के आतंक यीशु को कसकर अपने वश में कर रहा था।

निष्कर्ष: इस बाग में हमारे प्रभु द्वारा सहे दु:ख की गहराई को कोई नहीं समझा सकता। इस बड़े तनाव को चुनौती देते हुए हमें उसका मनुष्य रूप दिखाई देता है, परन्तु हम उसके ईश्वरीय स्वभाव को भी देखते हैं। परमेश्वर का पवित्र पुत्र संसार के पाप के लिए प्रायश्चित का बलिदान बनने की तैयारी कर रहा था।

अपने बड़े शोक के समय, यीशु ने परमेश्वर के साथ होना चाहा। बाग में अपने एकांत स्थान से वह हमें बताता है, ''जब तुम अपनी गहरी वादी में हो, अपने सबसे बड़े संघर्ष में हो, तो अपने पिता के साथ अकेले रहो। शांत जगह पर चले जाओ और अपने मन को उसके सामने खोल दो।''

परमेश्वर के पुत्र को भी अपने निकट मित्रों से शांति मिली। अपने भारी मन में से उसने अपने चेलों से जागते रहने और उसके साथ प्रार्थना करते रहने को कहा। लूका ने कहा कि वह उनसे ''एक ढेला फेंकने की दूरी पर गया'' (लूका 22:41)। ''गया'' के लिए इस्तेमाल हुए शब्द (ἀποσπάω, *apospaō*) का अर्थ ''अपने आपको अलग करना'' है। यह जानते हुए कि उसके साथ क्या होने वाला था, यीशु ने चाहा कि वे अपने आने वाले संघर्षों के बारे में प्रार्थना करें। उसे यह भी पता था कि उस के साथ क्या होने वाला है और वह चाहता था कि वे उसके निकट रहें और जो कुछ होने वाला था उसके बारे में प्रार्थना करें।

यीशु ने दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध के बारे में एक और गहरी सच्चाई दिखाई। उसके नमूने से हमें पता चलता है, ''सबसे भारी बोझ पड़ जाने पर इसके बारे में उनसे बात करो जो तुम्हारे प्रिय हों।'' परमेश्वर के सर्वशक्तिमान पुत्र यीशु ने उसके बारे में जो हो रहा था अपने निकट मित्रों को बताया। उसने कड़े शब्दों के साथ अपने अंदर के दु:ख को दिखाया।

सबसे बढ़कर गतमनी में हमारे प्रभु का विवरण यह दिखाता है कि जीवन के बड़े युद्ध उनके होने से पहले जीते जाते हैं। यीशु ने अपने पिता के साथ मिलकर पहले से तय कर लिया कि क्रूस पर जाने पर वह क्या करेगा और कैसे करेगा। गतसमनी के बाद उसके अंदर पूरी शांति और सम्पूर्ण भरोसा था। यीशु के अपने दु:खों को सहने के ढंग से कौन प्रभावित नहीं हो सकता? उसने उनके बीच में प्रार्थना की। एक रात पहले गतसमनी में यीशु ने यह तय कर लिया कि वह गबथा और गोलगुता के साथ कैसे निपटेगा।

उसने बिना करुणा के क्रोध का कटोरा पिया, ताकि हम बिना क्रोध के करुणा का कटोरा पी सकें। कष्ट मृत्यु का भय नहीं बल्कि पाप के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध की समझ थी जो उसे सहना था। उसका शुद्ध और पवित्र स्वभाव मृत्यु से नहीं बल्कि संसार के पाप के श्राप के कारण मृत्यु से पीछे हटा।[118]

यीशु के लिए वहां होना (14:32-50)

बाग में अपने पकड़वाए जाने से थोड़ा पहले, यीशु ने अपने चेलों को बताया था कि वे उसे छोड़कर भाग जाएंगे। अपनी पेशनगोई में उसने जकर्याह 13:7 की शब्दावली का इस्तेमाल किया: ''तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: 'मैं रखवाले को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी''' (मरकुस 14:27)।

पतरस ने दृढ़ता से यह घोषणा करते हुए कि ''यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा'' (14:29) उसकी बातों को मानने से इनकार कर दिया। पतरस की ऐसी घोषणा को सुनकर सभी चेलों ने उसके साथ यह प्रण लिया कि चाहे जैसी भी मुसीबत आ जाए वे नहीं डालेंगे (14:31, 32)। उनके दावों और वायदों के बावजूद यीशु की भविष्यद्वाणी सच साबित हुई। गिरफ्तार करने वालों के साथ छोटी सी मुठभेड़ के बाद, सभी चेले ''उसे छोड़कर भाग गए'' (14:50)। अपनी पेशियों के लिए ले जाया जाने के समय यीशु मित्रहीन और अकेला था।

अपने आपको पेड़ों के पीछे छिपा लेने या अंधकार में सिपाहियों से छिप जाने के बाद पतरस और यूहन्ना, अंत में काइफ़ा के घर के आंगन तक चले गए। यूहन्ना ने लिखा है, ''शमौन पतरस और एक अन्य चेला भी यीशु के पीछे हो लिए'' (यूहन्ना 18:15)। यूहन्ना ने पतरस को फाटक पर देखा और महायाजक के साथ अपने अच्छे सम्बन्ध होने कारण उसने बाहर जाकर उसे आंगन में अपने साथ अंदर ले आया (यूहन्ना 18:16)। पतरस के तीन बार हमारे प्रभु का इनकार करने और यीशु द्वारा उसे देखने पर, दु:खी होने के बाद, वह आंगन से निकलकर रोते-रोते पीछे अंधकार में चला गया (लूका 22:62)। उसके बाद पतरस के बारे में रविवार सुबह तक, यीशु के दर्शन देने तक कुछ पढ़ने को नहीं मिलता (लूका 24:34)। जहां तक हमें पता है यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने या दफ़नाए जाने के समय वह वहां नहीं था। स्पष्टतया शुक्रवार और शनिवार वह परेशान रहा होगा और व्याकुल और परेशान होगा कि उसने क्या कर बैठा।

यूहन्ना के बारे में हम क्रूसारोहण के समय के बारे में अवश्य पढ़ते हैं। उसने दिखाया कि वह क्रूस के पास था परन्तु अपने आपको अपने नाम से नहीं बल्कि ''चेला जिससे [यीशु] प्रेम रखता था'' वाक्यांश के साथ बताया (यूहन्ना 19:26)। क्रूस के पास यीशु के चेलों को ढूंढ़ते हुए हमें यूहन्ना और कुछ महिलाओं का छोटा सा झुण्ड देखने को ही मिलता है। सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण वहां तीन चार स्त्रियों के बारे में बताता है जो वहां पर थीं ''यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और उसकी माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं'' (यूहन्ना 19:25)। लूका ने इस झुण्ड को थोड़ा सा बड़ा दिखाया है: ''पर उसके सब जान पहचान, और जो स्त्रियां गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी हुई यह सब देख रहीं थी'' (लूका 23:49)। मरकुस ने लिखा है, ''कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं: उन में मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी थीं'' (मरकुस

15:40)।

क्रूस पर से नीचे देखते हुए यीशु को अपने प्रेरितों में से केवल यूहन्ना दिखाई दिया। लिखा है, ''जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखा तो अपनी माता से कहा, 'हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है!''' (यूहन्ना 19:26)। सुसमाचार के लेखक इस पर पूरी खामोशी बरतते हैं कि यीशु की मृत्यु के समय दूसरे प्रेरित कहां थे। इस तथ्य से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उन्होंने क्रूसारोहण को नहीं देखा।

हो सकता है कि चेलों का छोटा सा झुण्ड जो पहले क्रूस के पास खड़ा था और बाद में डर के कारण उस भयानक दृश्य को न देख पाने के कारण पीछे जाकर दूर से देखता रहा हो। हमारे लिए अपने अत्यंत दु:खदायी बलिदान के आरम्भ में यीशु की नज़रे भीड़ में से किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ रही होंगी जो उसकी सेवा कर सके। जहां तक उसके ग्याह प्रेरितों और उसके सौतेले भाइयों की बात है, उनमें से कोई वहां नहीं था। दर्द से कमज़ोर हो चुकी उसकी आंखें यूहन्ना पर लगी रहीं। छोटी आज्ञा देकर उसने अपनी सांसारिक जिम्मेदारी को निभाया: ''उसने चेले से कहा, 'यह तेरी माता है'''(यूहन्ना 19:27)।

जब यीशु को उसकी आवश्यकता थी तो यूहन्ना वहीं था! यूहन्ना को बाद के वर्षों में, यह याद करके कितना अच्छा लगता होगा कि जब यीशु ने उसके लिए किसी को खड़ा रहने को कहा, तो वह उसे उसकी परिस्थितियों में जो कुछ चाहिए था उसकी सहायता करने के लिए वहां था।

1. *यूहन्ना ने यीशु द्वारा सहायता के लिए बुलाए जाने पर ''वहां होने'' के लिए एक आत्मिक बदलाव के द्वारा अपने आपको तैयार किया था।* याकूब और यूहन्ना को पहले ''गर्जन के पुत्र'' (मरकुस 3:17) कहा जाता था। एक बार उन्होंने एक गांव को जिसने उन्हें ठुकरा दिया था आकाश से आग गिराकर नष्ट कर देना चाहा था (लूका 9:52-54)। परन्तु यीशु की संगति में उग्र स्वभाव के ये दोनों जन आत्मिक रूप में बढ़ गए थे। यीशु की उपस्थिति ने उन्हें बदल दिया था। याकूब प्रेरितों में पहला शहीद बन गया (देखें प्रेरितों 12:2), और यूहन्ना प्रेम के रूप में प्रसिद्ध हो गया (देखें 1 यूहन्ना 4)।

यूहन्ना के गर्जन का पुत्र होने से कोमल प्रेम का प्रेरित होने तक, उसे इतना पता नहीं था कि वह अपने कोमल हृदय को तैयार कर रहा है ताकि जब यीशु इस बुरे दिन पर अपनी मां के हृदय के तलवार से छिद जाने पर उसे उसकी देखभाल करने के लिए कहे। सेवक पैदा नहीं होते बल्कि यीशु की बिल्कुल बदल देने वाली संगति के द्वारा बनाए जाते हैं। परमेश्वर ईमानदारी से हमें उस काम के लिए तैयार करता है जो भविष्य में वह हम से करवाएगा। आज किसी के लिए भी यीशु के लिए तैयार होने का एकमात्र ढंग अपने जीवन को यीशु के स्वरूप में बदल देना है।

2. *ऐसे समय आ सकते हैं जब यीशु के लिए हम ऐसा कर सकते हैं जो दूसरा नहीं कर सकता।* क्रूस के नीचे क्या कोई और था जो उस भूमिका को निभा सकता था जो यीशु ने यूहन्ना को दी। ऐसा लगता है कि इस काम को कर पाने के योग्य केवल वही था। पल पल बदलती घटनाओं और परिस्थितियों में ऐसा समय आया जब यूहन्ना से यीशु की माता की देखभाल करने को कहा गया। स्पष्टतया यीशु के लिए यह सहायता कोई और नहीं कर सकता था।

अनोखे काम हमारी राह देख रहे हो सकते हैं। हर व्यक्ति अपने आपको प्रभाव के उस दायरे

में पाता है, जिसमें केवल वही कोई विशेष अंतर ला सकता है। उस दायरे के अंदर दूसरे लोगों पर वही प्रभाव कोई दूसरा और नहीं डाल सकता। समय की धीमी गति में, कई बार हम अपने आपको ऐसे क्षेत्र में पाते हैं, जहां ऐसे काम होते हैं जो करने आवश्यक हैं, ऐसी सेवा होती है जो की जानी आवश्यक होती है या ऐसे काम होते हैं जो केवल हम ही कर सकते हैं। यीशु के लिए यूहन्ना वहां था; वह सही समय पर, सही जगह पर था और उसका मन सही था। वह उस काम को जो यीशु अपने सहायता के लिए किसी से करवाना चाहता था, करने के लिए वहां था और तैयार था। क्या हमारे साथ ऐसा होगा?

3. *उद्धार की अपनी बड़ी योजना को अंजाम देते हुए यीशु को अपनी सहायता के लिए दूसरों की आवश्यकता होगी।* वह क्रूस से उतरकर अपनी माता के लिए प्रबन्ध नहीं कर सकता था। दुष्ट भीड़ ने कड़वे मज़ाक वाला ताना देते हुए अपनी शक्ति दिखाने के लिए, क्रूस पर से उतर आने की चुनौती दी: '''इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें।' और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे'' (मरकुस 15:31, 32)। परन्तु संसार को अपना उद्धार वह केवल क्रूस पर रहकर ही दे सकता था। उसके अलावा किसी दूसरे को क्रूस के कदमों की नीचे होने वाली बातों का ध्यान आवश्यक होना था। छुटकारे के उसके काम के लिए उसके मन और उसके प्राण की पूर्णता आवश्यक थी, इस कारण उसने यूहन्ना को अपनी जगह अपनी माता की देखभाल करने के लिए कहा।

यीशु अब संसार में वैसे नहीं रह सकता जैसे पहले रहता था। अब वह पिता के सिंहासन पर मध्यस्थ का काम करता है। यूहन्ना ने लिखा है कि वह ''पिता के पास हमारा सहायक है'' (1 यूहन्ना 2:1)। पृथ्वी पर के अपने काम को उसने अपने लोगों को सौंप दिया है। उसने हम से संसार में उसकी कलीसिया, उसकी आत्मिक देह, उसके हाथ और उसके पांव बनने को कहा है। उसने संसार में अपने प्रभाव को बढ़ाने और अपने काम को करने की जिम्मेदारी हमें दी है। स्वर्ग में अपने सिंहासन से नीचे देखते हुए एक अर्थ में उसने हम से कहा है, ''देखो, यह तुम्हारा काम है! उस मिशन पर ध्यान दो जो मैंने तुम्हें दिया है। जहां मैं हूं वहां से मैं नीचे नहीं आ सकता, इसलिए मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए। मैं अपना काम तुम्हें सौंप रहा हूं।''

निष्कर्ष: हम सब के लिए यीशु के लिए ''वहां होना'' सबसे बड़ी लालसा होनी चाहिए। हमने यूहन्ना को उसकी सेवा करने को तैयार होने की सुन्दरता को देखा है, जिसने अपने आपको इस अवसर के लिए तैयार किया। अपने उद्धारकर्त्ता की मृत्यु के समय वह उसके पास खड़ा था, और कुछ भी जो यीशु से कहता, करने को तैयार था। जब वह बड़ा क्षण आ गया तो उसने वह किया जो वह मसीह के लिए कर सकता था। उसे सदा उस प्रेरित के रूप में जाना जाएगा जो यीशु के लिए जब उसे संसार में अपने काम को ले जाने के लिए किसी आवश्यक थी ''वहां होने'' को तैयार था। आइए हम उसके पदचिह्नों पर चलें

परमेश्वर के पुत्र की गिरफ्तारी (14:43-51)

नये नियम में बताई गई मुख्य सच्चाई यह है कि हमारे बीच में आकर रहने और हमारे लिए मरने वाला परमेश्वरत्व में से दूसरे, परमेश्वर के पुत्र को छोड़ कोई और नहीं था। यूहन्ना ने इस

तथ्य को बड़े स्पष्ट और अविस्मरणीय ढंग से लिखा है: ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)। आश्चर्य की बात है कि जन्म लेने वाला यह यीशु जिसे चरनी में रखा गया था (लूका 2:11, 12), वही था जिसके विषय में पौलुस ने लिखा है: ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं'' (कुल. 1:16)।

यीशु के विषय में इस गम्भीर सच्चाई की समझ आ जाने पर, हमें प्राकृतिक और आलौकिक मिश्रण यानी ईश्वर और मनुष्य के बीच आगे पीछे मिलाने को जो कि उसके सांसारिक जीवन की विशेषता है, मानना कठिन नहीं होगा। हमें संदेह नहीं होगा कि याकूब के कुएं पर उसके प्यास लगी थी (यूहन्ना 4:6, 7) परन्तु फिर भी वह सामरी स्त्री के साथ जीवन के जल की बात कर सकता था (यूहन्ना 4:10)। हम महासभा के सामने उसके यह मानने पर कि वह परमेश्वर का पुत्र था (लूका 22:70) और फिर थोड़ी देर बाद अपने आपको रोमी क्रूस पर सरेआम देने पर हैरान नहीं होंगे (लूका 23:33)।

मनुष्य होने के साथ-साथ ईश्वर होने का अर्थ यह था कि यीशु के बारे में कोई भी बात साधारण नहीं होनी थी। उसका जन्म, बपतिस्मा, परीक्षाएं, शिक्षाएं, और मृत्यु निराले थे, बाद में उसकी गिरफ्तारी में भी ऐसी बातें थीं जो इसे इतिहास की दूसरी सब गिरफ्तारियों से अलग करते हैं। कोई भी व्यक्ति जो उस बुरे क्षण पर जब परमेश्वर के पुत्र को हिरासत में लिया गया था, विचार करता है तो वह यह अवश्य देखेगा कि इन सब घटनाओं में उसके परमेश्वर होने की महिमा कैसे दिखाई देती है।

1. *उसे पकड़ने के लिए आई भीड़ का सामना करने में हम उसके ईश्वरीय/मानवीय होने को देखते हैं।* उसके पास आने वाली टोली की संख्या सैकड़ों में होगी। इसमें रोमी सिपाही, प्रधान याजक और लोगों के पुरनिये, मन्दिर की सुरक्षा के अधिकारी और शायद देखते ही साथ हो लेने वाले नगर के लोग थे। मरकुस ने कहा है कि ''बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिए'' आईं (मरकुस 14:43)। यह जानते हुए कि वह कौन थे, किस लिए आए थे, और आगे क्या होना था और यीशु उनके पास जानकर पूछने लगा, ''किसे ढूंढ़ते हो?'' (यूहन्ना 18:4)। भीड़ की अगुआई करने वाले उसके बरताव और ईश्वरीय व्यवहार से घबरा गए, अचानक पीछे धकेले जाने से अपने से पीछे वाले लोगों में जा बजे, जिस कारण उनमें से कुछ भूमि पर गिर गए। भीड़ के सम्भलने पर यीशु ने फिर से यह कहते हुए कि ''मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे ढूँढ़ते हो तो इन्हें जाने दो'' (यूहन्ना 18:8) अपने आपको उनके सुपुर्द कर दिया।

इस तनाव भरे क्षण में यीशु का व्यक्तित्व उन सब बातों से मेल खाता था जिन्हें हम परमेश्वर से जोड़ते हैं। वह जीवन और आने वाले राज्य की सच्चाई खुलेआम, बल्कि मन्दिर के आस पास बताता था। उसने अपना काम एकांत में नहीं किया था। वह जो कुछ इस संसार में कर रहा था, उसे खुलकर और बेबाकी से कर रहा था। उसे गिरफ्तार करने के लिए आए लोग बुरे इरादे के साथ और अपने मनों में उसकी दुष्ट तस्वीर लेकर ऐसा कर रहे थे। परन्तु उन्होंने पाया कि वे एक राजकुमार, एक राजा को गिरफ्तार कर रहे हैं, जिसमें सिद्ध मनुष्य होने के सभी गुण थे।

2. *यहूदा के साथ पेश आने में हम उसकी महिमा को देखते हैं।* यहूदा के बार में वह सब कुछ जानता था। जब यहूदा अटारी वाले कमरे से निकलकर अंधेरे में बाहर गया तो यीशु को सब पता था कि वह क्या करने वाला है और कैसे करने वाला है। यीशु ने उसे फिर भी प्रेम से चेताया कि शैतान उसकी परीक्षा ले रहा था (देखें मत्ती 26:25)।

बाग में जब यहूदा उसके पास आया तो यीशु ने यहूदा को बता दिया कि वह उसे पकड़वाने के लिए आया है (लूका 22:48)। यीशु की बात को अनदेखा करते हुए यहूदा ने उसे चूमा (मरकुस 14:45)। उसने यीशु को पकड़वाने के चिह्न के रूप में चुम्बन का निशान चुना था। यह चुम्बन सम्भवतया गले मिलने के साथ हुआ जो कि निजी मित्रता और लगाव को दिखाने के लिए था। मत्ती ने कहा कि यहूदा यीशु के पास गया और कहा, ''हे रब्बी, नमस्कार और उसको बहुत चूमा'' (मत्ती 26:49)। उसने यूनानी शब्द *कैटाफिलियो* का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''चाव से, बहुत या बार-बार चूमना।'' यही शब्द फरीसी के घर में उस स्त्री के वर्णन के लिए इस्तेमाल हुआ है जिसने यीशु के पांवों पर इत्र मलकर उन्हें चूमा था (लूका 7:38)।

कितने आश्चर्य की बात है कि यीशु ने यहूदा को इस नीच काम को करने से रोका नहीं! उसने यहूदा को उसे चूमने दिया और उसने उसके प्रति वैर नहीं दिखाया। उसके कामों से केवल उसके परमेश्वर होने को समझा जा सकता है। उसने यहूदा को अपनी मानवीय स्वतन्त्रता का खुलकर इस्तेमाल करने दिया। न केवल उसने उसे समझाया और चेतावनी दी बल्कि उसने उसे जो कुछ उसने करने का निर्णय ले लिया था उसे करने की नैतिक स्वतन्त्रता भी दी।

3. *उसके मलखुस को चंगा करने में हम उसके परमेश्वर होने को देखते हैं।* यीशु के पृथ्वी पर के जीवन का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति उसकी चमत्कारी गवाही को देखने को जानता है। अपनी गिरफ्तारी के समय उसने संसार को करुणा और उस सामर्थ का एक और विचार दे दिया जिसने यह पुष्टि की कि उसे पिता की ओर से भेजा गया था।

जब पतरस ने उतावली में महायाजक के सेवक का कान उड़ा दिया (मरकुस 14:47; यूहन्ना 18:10), तो यीशु ने इसे उठाकर फिर से लगा दिया (लूका 22:51)। मलखुस का कान ठीक कर दिया गया, जिससे इतिहास में सिखाने का एक महत्वपूर्ण क्षण मिल गया। संसार के पापों के लिए मरने से पहले यीशु ने उसके परमेश्वर होने को साबित करने के लिए एक स्पष्ट चिह्न दिया, जिसे क्रूस पर मरने के लिए ले जाया जा रहा था। उसका चमत्कारी प्रदर्शन उसे पकड़ने आए लोगों के लिए, अपने चेलों के लिए और अपने प्राणों के उद्धारकर्त्ता की खोज करने वाले सब लोगों के लिए था।

4. *अपने चेलों के विषय में उसकी भविष्यद्वाणी के पूरा होने में हम उसकी महिमा देखते हैं।* उसने उन्हें बताया था कि उनके चरवाहे के मारे जाने पर उन्होंने तितर-बितर हो जाना था (मरकुस 14:27)। यीशु के मलखुस का कान जोड़ देने के थोड़ी देर बाद, सभी प्रेरित भाग गए (14:50)। यीशु ने उसे गिरफ्तार करने आए अधिकारियों से कहा था, ''इन्हें जाने दो'' (यूहन्ना 18:8)। अवसर मिलने पर उसके चेले जल्दी से भाग गए। कुछ नगर की ओर चले गए, जहां वे घरों के पीछे छिप सकते हैं; कुछ बाग में दौड़ गए, जहां उन्होंने रात के अंधेरे में छिप जाना था। बाद में पतरस और यूहन्ना अपने छिपने के स्थानों से बाहर आए और दूर से अपने प्रभु के पीछे-पीछे चलते रहे, परन्तु लोगों से बचते हुए।

एक जवान, शायद मरकुस ने शोर सुना और बिस्तर से बाहर आ गया होगा। तन पर केवल सूती कपड़ा लपेटे, वह भीड़ के पीछे भागा, जो यीशु को पकड़कर ले जा रही थी। किसी न किसी प्रकार उसने यह संकेत दे दिया होगा कि उसकी दिलचस्पी यीशु में है। जब चेले तितर-बितर हो गए तो एक सिपाही ने जवान को पकड़ा। उसने सिपाही को झटका दिया और अपना सूती कपड़ा सिपाही के हाथ में छोड़कर भाग गया। अंधेरे में नंगा भाग जाने वाला जवान सचमुच में सोच रहा होगा कि वह रोमी सिपाही द्वारा गिरफ्तार किए जाने से बड़ी मुश्किल से बचा था (मरकुस 14:51, 52)।

चमत्कारी शक्ति होने के अलावा यीशु अंतरयामी भी था। उसे अपने प्रेरितों के कमज़ोर स्वभाव का पता था। उसे इस बात का ध्यान था कि उसके चेले और भीड़ क्या करेंगे। जो कुछ होने वाला था उसके बारे में उसकी पेशनगोइयों से उसकी हर बात की पुष्टि हो गई थी।

5. *उस ऐतिहासिक घड़ी की उसकी समीक्षा में हम उसके परमेश्वर होने को देखते हैं।* गिरफ्तार आए दल से उसने कहा, ''यह तुम्हारी घड़ी है, और अन्धकार का अधिकार है'' (लूका 22:53)। हमें परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्र की ओर उस घटना के जो होने वाली थी शैतानी होने को समझाने में सहायता के लिए कुछ कहे जाने की उम्मीद होगी। उसके स्पष्ट परन्तु संक्षिप्त विवरण देने से इस घटना के शैतानी होने का पता चला।

बाग में प्रवेश करने की घटना कितनी बुरी और खतरनाक थी! क्या कोई नाशवान, पापी लोगों के परमेश्वर के पवित्र पुत्र को हिरासत में ऐसे जैसे वह कोई अपराधी हो ले जाने के किसी पहलू को समझ सकता है? इन लोगों ने यह गंदा काम करने के लिए सौदेबाजी की, युक्ति निकाली थी और निर्णय किया था। उनके यीशु पर अपने हाथ और अपनी रस्सियां डालने पर, सबसे अंधकारमय घड़ियां आ गईं। वे बुराई की सबसे बड़ी शक्ति के आगे समर्पण कर रहे थे जो उन्हें घेरकर उनके मनों में समा गई।

निष्कर्ष: परमेश्वर के पुत्र की गिरफ्तारी से हमें उसके मानवीय और ईश्वरीय पहलुओं को का पता चलता है। यीशु को पेशियों के लिए रस्सियों, तलवारों और डंडों से ले जाए जाने को देखकर हम उसके मनुष्य होने को देखते हैं। परन्तु इन सभी घटनाओं में हमें उसकी स्पष्ट महिमा और परमेश्वर होना दिखाई देता है। इसके बारे में कही गई सुसमाचार के लेखकों की बातों को पढ़कर हम इस सच्चाई से प्रभावित होते हैं कि परमेश्वरर के पुत्र यीशु ने निष्ठुर, दुष्ट लोगों के हाथों गिरफ्तार किया जाना स्वीकार कर लिया ताकि वह हमारे पापों के लिए मर सके।

यीशु उतना ही ईश्वरीय था जितना यदि वह मनुष्य न होने पर होता और उतना ही मनुष्य था जितना ईश्वरीय न होने पर होता। वह एक व्यक्तित्व में परमेश्वर और मनुष्य का सम्पूर्ण मेल था। पवित्र शास्त्र में उसे ''मनुष्य का पुत्र'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा गया है। उसके विषय में यदि हमें यह सच्चाई समझ में आ जाए तो दूसरी सच्चाइयों को मानने में कोई समस्या नहीं होगी जो नये नियम में उसके बारे के बताई गई हैं।

काइफ़ा के सामने यीशु का अंगीकार (14:53-65)

काइफ़ा और महासभा ने यीशु को मृत्यु के योग्य अपराधी साबित करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी थीं, परन्तु वे बुरी तरह से नाकाम रहे थे। कई गवाहों की गवाहियां आपस में नहीं

खाती थीं और वे बेकार साबित हुईं जिससे काइफ़ा की कचहरी में लोग उलझन में पड़ गए थे (14:56)। अंत में दो झूठे गवाहों ने अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में मन्दिर में कही गई हमारे प्रभु की एक बात की गलत व्याख्या कर दी। उसके प्रतीकात्मक शब्दों का अर्थ शाब्दिक रूप में लेते हुए उन्होंने कहा, ''हम ने इसे यह कहते सुना है, 'मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा,जो हाथ से न बना हो''' (14:58); ''इसने कहा है कि 'मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं''' (मत्ती 26:61)। परन्तु, काइफ़ा को पता था कि अपने सबसे खराब अर्थ में भी, इस प्रकार की जानकारी ने रोमी हाकिम पिलातुस के सामने टिक नहीं पाना था। उसने यहूदियों के धार्मिक मामलों में दखल नहीं देना था।

जब दो गवाह मन्दिर वाली यीशु की बात को लेकर आए तो निराश हुआ काइफ़ा, यीशु पर चिल्ला उठा, ''तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?'' (मरकुस 14:60; देखें मत्ती 26:62)। उसके लहज़े और उग्रता से यीशु के विरुद्ध कोई प्रमाण न ढूंढ़ पाने की उसकी मायूसी दिखाई दे रही थी। जैसे कि किसी विश्वसनीय याजक को करना चाहिए था, यीशु को निर्दोष घोषित करने के बजाय, काइफ़ा ने इस उम्मीद से कि यीशु उन निराधार आरोपों का जो उस पर लगाए जा रहे थे, जवाब देते हुए खुद फंस जाएगा, उसे टटोला। ''परन्तु वह मौन साधे रहा'' (14:61)। उत्तर देने से उसके इनकार के कारण इस पेशी पर ज़ोरदार प्रहार हुआ। खामोशी से काइफ़ा की घातक योजना बेकार हो गई! कहानी बनाने के लिए जो प्रमाण उसने तैयार किए वह यीशु की सफ़ाई के एक शब्द के भी योग्य नहीं था। सम्पूर्ण सच्चाई से निकली गरिमा से यीशु ने कुछ नहीं बोला।

महायाजक अपने अंतिम विकल्प पर आ रहा था। उसे वहां उपस्थित लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु परमेश्वर की निंदा करने वाला व्यक्ति था, सच्चाई को घुमाना ज़रूरी था। परमेश्वरर की निंदा करने के प्रमाण से रोम ने प्रभावित नहीं होना था, परन्तु इससे महासभा ने मान लेना था कि यीशु को मार डाल जाए।

अपनी जाति के लिए नाटकीय लगाव को दिखाता हुए उसने यीशु को आज्ञा दी, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे'' (मत्ती 26:63)। परमेश्वर की शपथ दिलाए जाने पर (देखें लैव्य. 5:1), यीशु ने बता दिया कि वह कौन था। अब उसने किसी भी बात पर चुप नहीं रहना था। उत्तर के पहले भाग उसने स्पष्ट था: ''तू ने आप ही कह दिया'' (मत्ती 26:64)। मरकुस 14:62 उसे केवल ''मैं हूं'' कहते हुए दिखाता है।

मत्ती ने उसके उत्तर के इस भाग को शामिल नहीं किया। मूल पुष्टि में यह कहा गया हो सकता है, ''तूने आप ही कह दिया: मैं हूं''; या हो सकता है कि मरकुस ने ''मैं हूं'' के दो शब्दों के साथ अपने रोमी पाठकों के लिए ''तूने आप ही कह दिया'' लोकोक्ति का अनुवाद किया। यीशु ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था। उसने, यानी परमेश्वर के पुत्र ने अदालत के सामने अपने परमेश्वर होने की सच्चाई रख दी थी। परन्तु यीशु यह पुष्टि करने से कि वह कौन है रुका नहीं। उसने पुष्टि करता हुआ एक वायदा जोड़ दिया। उसने कहा, ''वरन् मैं तुम से यह भी कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे'' (मत्ती 26:64)। वह परमेश्वर का पुत्र मसीह था, है और रहेगा। कोई भी

चीज़ चाहे उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना ही क्यों न हो, इसे बदला नहीं जा सकता। इस अदालत में यीशु काइफ़ा के सामने खड़ा था, परन्तु एक दिन काइफ़ा दूसरे सब लोगों के साथ अदालत में यीशु के सामने खड़ा होगा!

काइफ़ा और उसके धार्मिक साथियों ने ''मसीह'' के पदनाम का अर्थ दाऊद का पुत्र समझ लिया होगा। जिसने कथित रूप से इस्राएल का राज्य बहाल करने के लिए आना था। उन्होंने ''परमेश्वर का पुत्र'' का अर्थ परमेश्वर का चुना हुआ सेवक मान लिया होगा। मसीहा के उनके विचार में यह विचार नहीं होगा कि आने वाले ने परमेश्वरत्व में से दूसरा यानी परमेश्वर का पुत्र होना था। बेशक यीशु इन शब्दों को एक नया अर्थ दे रहा था। अपने उत्तर में वह भविष्यद्वाणी कर रहा था कि भविष्य में उन्होंने, उसे जिसे वे क्रूस पर चढ़ाने की योजना बना रहे थे, अनन्त दण्ड देने के लिए, परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखना था। दानिय्येल 7:13 और भजन 110 से लिए गए विवरणों का इस्तेमाल करते हुए, जिनकी इन ज्ञानी शास्त्रियों और पुरनियों को समझ होगी, यीशु ने भविष्यद्वाणी की कि एक दिन उन्होंने उसे पिता की ओर से भेजे गए न्यायी के रूप में देखना था। इस महत्वपूर्ण सभा ने यदि यीशु की बातों पर गम्भीरता से विचार किया होता तो उन्होंने यह निष्कर्ष निकाल लेना था कि इसी ने, जिसे वे दण्ड दे रहे थे, एक दिन उनका न्यायी बन जाना था।

काइफ़ा और सभा को कही गई एक अतिरिक्त शानदार बात में यीशु ने उसका, जो वह था एक विशालदर्शी विचार दे दिया।

1. *उसने सार्वजनिक रूप में, निडरतापूर्वक और साफ़ साफ़ घोषणा की कि वह मसीह, अर्थात परमेश्वर का अभिषिक्त (मसह किया हुआ) है।* यीशु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ यह सच्चाई बताते हुए नहीं किया। उन आरम्भिक दिनों में उन्हें, उसने जिन्हें उसने चंगाई दी, इसके बारे में चुप रहने का कहा। उसका मसीहा होना सही समय के आने तक गुप्त रखा जाना था। इस सच्चाई को कि वह कौन है, लोगों को बताने से पहले उसे बहुत सा बुनियादी काम करना और बुनियादी सच्चाइयां बताना आवश्यक था। बहुत से लोग राज्य को लाने की जल्दी कर रहे थे, परन्तु यीशु के प्रारम्भिक कार्य के लिए समय चाहिए था। काइफ़ा के सामने यह पेशी संसार को यह बताने के लिए कि वह कौन है, यीशु का अपना चुना हुआ समय था। इस पृष्ठभूमि और परिस्थिति में उसने काइफ़ा से कहा ''तूने आप ही कह दिया'' (मत्ती 26:64)।

2. *उसने और दृढ़ता से कि वह परमेश्वर का पुत्र है।* यीशु को फंसाने के प्रयास के रूप में चाहे काइफ़ा को यह पता नहीं था कि वह क्या पूछ रहा है, परन्तु यीशु का दिया उत्तर ईश्वरीय सच्चाई के उच्च स्तर का था। यह जानते हुए कि पुराने नियम में परमेश्वर की निंदा को गलत कहा गया है, काइफ़ा ने झट से मृत्यु की घोषणा करने के लिए यीशु के जवाब का लाभ उठाया। उसने यह दिखावा करने के लिए कि उसे बड़ा सदमा लगा है अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, ''इसने परमेश्वर की निंदा की है'' (मत्ती 26:65)। फिर सभा के सदस्यों की ओर मुड़ते हुए उसने मांग की, ''अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुमने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या सोचते हो?'' उन धार्मिक अगुओं का एक गुट जो अपने विचार देने या निर्णय सुनाने से डर रहे थे, ''सबने कहा कि यह वध के योग्य है'' (मरकुस 14:63, 64)।

काइफ़ा और सभा के उसके साथी सदस्यों ने सबसे महत्वपूर्ण बात को छोड़ दिया था कि

यीशु परमेश्वर की निंदा का दोषी नहीं हो सकता था क्योंकि वह सच बोल रहा था! यीशु ने कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र है क्योंकि काइफ़ा के प्रश्न का एकमात्र सही उत्तर यही था! काइफ़ा किसी ढोंगी को नहीं बल्कि परमेश्वर के पुत्र को परख रहा था!

3. *इसके अलावा यीशु ने आपने आपको, अनन्त न्यायी के रूप में दिखाया जिसने आकाश के बादलों पर आना था।* उसके शब्द प्रतीकात्मक भविष्यद्वाणी होंगे जो उसके पुनरुत्थान और कलीसिया की स्थापना के आगे, सुसमाचार के प्रसार के आगे, उस दण्ड के आगे जो 70 ई. में टाइटस के द्वारा यरूशलेम को नष्ट किए जाने पर आनी थी, आना था और समय के अंत में अनन्त न्याय तक थे। दानिय्येल ने मनुष्य के पुत्र को राज्य को लेने और अति प्राचीन के आदेश देने का दर्शन देखा (दानिय्येल 7:13, 14)। यीशु ने उस दर्शन की शब्दावली का इस्तेमाल इस प्रकार से किया कि उससे उसने अपने आपको उन भविष्यद्वाणियों का पूरा होना दिखाया। वही था जो आने वाला था, आ गया और फिर आएगा। वह काइफ़ा को यह बता रहा था कि वह मसीह, अर्थात परमेश्वर का पुत्र और आने वाला न्यायी है।

हिंदी भाषा में (अनुवादक) काइफ़ा के प्रश्न का यीशु का उत्तर केवल एक संयुक्त शब्द में दिखाया गया है, परन्तु इसमें उसकी तीन बड़ी सच्चाइयां मिलती हैं। यह बात उन आश्चर्यकर्मों के साथ जो उसने किए थे, उस अलौकिक शिक्षा से जो वह लेकर आया था, मरे हुओं में से जी उठने के साथ जो उसने जल्द ही हो जाना था, और उसकी सच्चाई की पुष्टि करने वाले दूसरे हर प्रमाण के साथ मेल खाती होंगी। इस पृष्ठभूमि के विपरीत, उसके शब्दों को उसकी न बदलने वाली सच्चाई बताने वाले के रूप में स्वीकार किया जाना आवश्यक है। कोई ऐसा नहीं है जिसे उसकी बातों को सुनने के बाद यह समझ में न आ सके कि वह कौन था और कौन है।

निष्कर्ष: काइफ़ा की अदालत लगी हुई थी और इतिहास का यह क्षण वह समय था जिसे यीशु ने अपनी घोषणा के लिए चुना था। उसके परमेश्वर होने की इस स्वीकृति ने पृथ्वी पर के उसके जीवन के दौरान पहली बार यह संकेत दिया कि उसने उस सच्चाई पर मोहर की जिसकी उसने अपने बारे में ठोस ढंग से, संक्षेप में और सार्वजनिक रूप में घोषणा की। उसकी बातों से यह स्पष्ट हो गया कि क्या चल रहा था। वह कह रहा था, ''तुम जानते हो कि तुम किसे क्रूस पर चढ़ा रहे हो? तुम अपने मसीहा, परमेश्वर के पुत्र और अपने आने वाले न्यायी को नकार रहे हो। तुम हठी होकर उसे उन बेकाबू हाथों में दे रहे हो जो उसे क्रूस पर चढ़ा देंगे!'' उसकी बातों में हर पापी मन से जो वहां था, मूक विनती थी: ''क्या तुम जो कर रहे हो उस पर विचार नहीं करोगे और जो यहां हो रहा है उसके विलक्षण महत्व को नहीं देखोगे? तुम केवल मुझे ही क्रूस पर नहीं चढ़ा रहे, बल्कि तुम अपने भविष्य पर मोहर भी लगा रहे हो।''

यीशु के चेहरे को देखना (14:53, 66-72)

शुक्रवार वाले दिन सुबह-सुबह, जिस दिन यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना था, किसी समय पतरस ने कभी ठोकर न खाने का शेखी भरा अपना वायदा तोड़ा (14:29-31) और बार-बार ज़ोरदार ढंग से यीशु का इनकार किया। अपने अंतिम इनकार के बाद उसने न केवल मुर्ग को बांग देते सुनना था बल्कि उसे यीशु के चेहरे में देखना भी था। जब उसने सिर उठाकर देखा और उसकी आंखों के सामने यीशु की ढूंढ़ती हुई आंखें थीं तो पतरस के लिए यह बहुत बड़ी बात

थी। उसका दिल चूर-चूर हो गया। पेशियों वाले स्थान से वह जल्दी से गहरे अंधेरे में चला गया, जहां अपने बुरी तरह से नाकाम होने के कारण परमेश्वर के सामने रोया।

गतसमनी बाग में प्रार्थना में रात भर दु:खी होने से पहले, यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा था कि वे उसे छोड़कर भाग जाएंगे (14:27; देखें यूहन्ना 16:32)। यीशु के गिरफ्तार होने पर, उन्होंने ऐसा ही किया (मरकुस 14:50)। यीशु के पतरस को अपनी तलवार मयान में रखने (मत्ती 26:52; यूहन्ना 18:11) और पकड़ने आए अधिकारियों के उसे ले जाने को तैयार होने के बाद, उसके चेलों ने भाग जाने के अवसर का लाभ उठाया। रात के अंधेरे में वे इधर-उधर हर दिशा में फैल गए। पतरस और यूहन्ना यीशु को देखते रहे और टिमटिमाती हुई मशालें लेकर भीड़ किद्रोन नाले के पार हन्ना की ओर बढ़ गई, जहां यीशु से पूछताछ होनी थी। फिर धैर्य लौटने पर वे अपने डर को एक ओर करके सुरक्षित दूरी से भीड़ के पीछे-पीछे चले गए (यूहन्ना 18:15; देखें मत्ती 26:58; मरकुस 14:54)।

कचहरी में पहुंचकर जो कि उस घर के सामने थी जहां यीशु को ले जाया गया था, इस बात से हैरान कि आगे क्या होगा, वे दूसरों के बीच खड़े हो गए होंगे। यूहन्ना ने उस युवती के पास जाकर जो द्वारपालिन थी, आंगन में जाने की अनुमति मांगी। महायाजक यूहन्ना को जानता था जिस कारण द्वारापालिन भी उसे पहचानती थी (यूहन्ना 18:17)। बिना हिचक के उसने घर के सामने खुले आंगन में उसे जाने दिया। थोड़ी देर बाद, यूहन्ना को याद आया होगा कि द्वार के बाहर पतरस सदमे में है, जिसे समझ में नहीं आ रहा कि कहां जाए और क्या करे। यहीं पर ''वह चेला [यानी यूहन्ना] जो महायाजक का जाना-पहचाना था, बाहर निकला और द्वारपालिन से कहकर पतरस को भीतर ले आया'' (यूहन्ना 18:16)। उनके द्वार में से निकलने पर, द्वारपालिन दासी ने पतरस से कहा, ''कहीं तू भी इस मनुष्य के चेलों में से तो नहीं है?'' (यूहन्ना 18:17)। शायद डरा हुआ होने के कारण पतरस ने कहा, ''मैं नहीं हूं'' (यूहन्ना 18:17)।

सर्दी का मौसम था, और आंगन में खड़े लोगों के लिए प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। आंगन में बैठे या खड़े लोगों को गर्माहट देने के लिए, जो हन्नाह के घर में होने वाली कार्यवाहियों के नतीजे की राह देख रहे थे, कोयले की मध्यम सी आग जल रही थी। पतरस आग के पास गया (यूहन्ना 18:25)। शायद वह इसके पास कभी बैठता और कभी खड़ा हो रहा था। उसके आग सेकते हुए आग की लपट उसके चेहरे पर पड़ी होगी।

महायाजक की एक दासी ने उससे कहा, ''तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था'' (मरकुस 14:67)। सबके सामने, जहां तक उसकी आवाज जा सकती थी, पतरस ने तपाक से कहा, ''मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है'' (मत्ती 26:70; देखें मरकुस 14:68)।

आग के पास खड़े दूसरे लोगों ने उसकी सुर में सुर मिलाते हुए कहा होगा, ''कहीं तू भी उसके चेलों में से तो नहीं?'' (यूहन्ना 18:25), और पतरस ने घोषणा की, ''मैं नहीं हूं'' (यूहन्ना 18:25)। प्रश्नों से, चौकसी से और विशेषकर प्रश्नों से अपने उत्तरों से निराश हुआ मायूस हुआ पतरस यह सोच चुपके से आग के पास से आंगन की ओर चला गया कि वह असानी से गुमनामी में जा सकता है।

थोड़ी देर बाद फिर प्रश्नों की एक और झड़ी लग गई। एक आदमी ने पास आकर कहा, ''तू भी तो उन्हीं में से है!'' पतरस ने गुस्से से कहा, ''हे मनुष्य मैं नहीं हूं'' (लूका 22:58)।

अपने आस पास के लोगों से यह कहते हुए कि ''यह उनमें से एक है'' (मरकुस 14:69), एक और दासी बोली तो पतरस ने इनकार करते हुए (मरकुस 14:70), शपथ खाते हुए जवाब दिया (मत्ती 26:72; KJV)। उसने कुछ इस प्रकार से कहा होगा: ''परमेश्वर के सामने जानते हुए, मैं तुम्हें बताता हूं, 'मैं इस आदमी को नहीं जानता''' या ''परमेश्वर मेरा गवाह है, मैं तुम्हें सच बता रहा हूं कि मैं उसे नहीं जानता'' (देखें मत्ती 26:70, 71)।

हमारे प्रभु ने अपनी भविष्यद्वाणी में कि पतरस ने तीन बार उसका इनकार करना था, इन चारों जवाबों को एक इनकार यानी दूसरे इनकार में डाल दिया होगा। पतरस ने चार अलग-अलग स्वरों से चार अलग-अलग आरोपों का उत्तर दिया। तीन प्रश्न तो लोगों की ओर से लगते हैं जिसमें दो दासियों के, और एक आदमी का है, जबकि दूसरा प्रश्न आग के पास इकट्ठा हुए लोगों के बीच में से था।

लगभग एक घण्टे बाद, वहां खड़े लोगों में से किसी ने ज़ोर देकर कहा, ''निश्चय यह भी तो उसके साथ था, क्योंकि यह गलीली है'' (लूका 22:59)। किसी और ने कहा, ''सचमुच तू भी उनमें से एक है, क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है'' (मत्ती 26:73)। ''हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है!'' (लूका 22:60)। मरकुस ने लिखा, ''मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता'' (मरकुस 14:71)। ''तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ बाँग दी'' (14:72)। भोर के पहरेदार मुर्गे को दूर से सुना जा सकता था, जिससे पतरस के अंतिम इनकार से इतिहास बन जाना था और यीशु की भविष्यद्वाणी के पूरा होने की घोषणा हो जानी थी। यह मछुआरा जिसने दावा किया था कि उसे यीशु से कोई दूर नहीं कर सकता, शपथ खाते हुए और अपने आपको कोसते हुए, एकांत में और सार्वजनिक रूप में यीशु का इनकार करते हुए नाकाम हो गया था।

उसी समय यीशु को काइफ़ा की जांच पड़ताल से उसकी दूरी पेशी तक ले जाया गया। उसे वहां ले जाया जा रहा था जहां महासभा की आधिकारिक पेशी होनी थी। उस छोटे से गुज़रते पल में, एक पेशी से दूसरी पेशी तक ले जाते हुए, यीशु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा। पतरस ने ऊपर देखा और उनकी नज़रें मिल गईं। लूका ने इस क्षण को कुछ शब्दों में कैद कर लिया: ''प्रभु ने मुड़कर पतरस को देखा'' (लूका 22:61)। लूका के विवरण से यह भावुक दृश्य समय में ठहर गया है। संसार एक दो सेकंड में यीशु और पतरस की आंखों के मिलने पर यीशु की आंखों के पतरस के मन में गई शिक्षा, भावना और महत्व की पूरी तरह से नहीं सकता। आश्चर्य की बात नहीं कि वचन कहता है कि पतरस ''बाहर जाकर ज़ोर-ज़ोर से रोया'' (लूका 22:62)।

यीशु की आंखों में जब पतरस ने देखा तो उसे क्या दिखाई दिया?

1. *यीशु के चेहरे में उसे अपने सामने अपनी पिछली झलक दिखाई दी।* फसह के भोज में, एक अर्थ में उसने कहा था, ''हे प्रभु, मैं इन दूसरों के बारे में तो नही जानता परन्तु मैं वह जानता हूं जो मैं करूंगा। मैं तेरे साथ जेल में बल्कि मरने के लिए भी चला जाऊंगा। मेरी ओर से एक बात तो पक्की है कि मैं तेरा इनकार नहीं करूंगा'' (देखें मत्ती 26:33)। उसके कहने का अर्थ था कि जो कुछ वह कह रहा था, वह दिल से कह रहा था और उसने यीशु की गिरफ़्तारी के समय अपने दावों को सही करके भी दिखाया था। अपनी तलवार म्यान में से निकालकर मलखुस के चेहरे के सामने घुमाते हुए उसने उस सेवक का कान काट दिया था। निश्चय ही

उसने अपनी तलवार के उस एक तेज़ी से घुमाने के द्वारा अपनी और दूसरों की जान जोखिम में डाल दी थी। तलवार म्यान में रखने की यीशु की आज्ञा से पतरस के मन पर असर हुआ होगा और वह आक्रामक, दृढ़ संकल्प मन से अनिश्चित या उलझन में पड़ा व्यक्ति बन गया होगा। जो कुछ हो रहा था उस पर यीशु की शिक्षा की पतरस को पूरी समझ नहीं थी। बाद में आंगन के द्वार में और आग से यीशु के साथ अपने सम्बन्ध की सच्चाई के प्रश्नों के हमले से पहले वह पिघल गया था। वह बुरी तरह से नाकाम हुआ था। हो सकता है कि कष्ट पहुंचाने वाले प्रश्नों ने उसके मन को चीर दिया हो: ''मैंने यह कैसे कह दिया कि 'मैं इस आदमी को नहीं जानता?' मैंने इतनी सफ़ाई से, इतनी जल्दी से और इतने यकीन से कैसे कह दिया?''

2. *पतरस ने यीशु के चेहरे को देखने पर उसकी करुणा दिखाई दी।* पतरस चकित था कि यीशु के चेहरे के हाव भाव प्रचार नहीं कर रहे थे, ''हे पतरस मैंने तुझे बताया था कि तू क्या करेगा! हां, मैंने तुझे यही बताया था! तेरे यह बोलने से पहले मैं जानता था कि तू क्या बोलेगा!'' यीशु के साथ रहने के अपने तीन वर्षों में पतरस ने यीशु को कभी किसी के विरोध में बिगड़ते नहीं देखा था। उसने कभी बदला लेने या पलटकर वार करने की सोच नहीं देखी थी। इसके विपरीत उसने उसे यह कहते हुए सुना था कि किसी भाई को कितनी बार क्षमा किया जाए: ''मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक'' (मत्ती 18:22)। वह यीशु की शिक्षा को याद कर सकता था, ''और यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा'' (मरकुस 11:26)। उसने उसे व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से यह कहते हुए सुना होगा, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11)। अब यीशु के साथ अपने रहने के किसी भी अन्य समय से बढ़कर उसने यीशु के चेहरे पर उन लोगों के लिए जो पाप में गिर गए हैं उसके मन की करुणा की बड़ी झलक देखी। यीशु की आंखें और चेहरा कह रहे थे, ''पतरस, तूने गलती की है, परन्तु क्षमा का रास्ता है। इसे पकड़ और इसमें चल। याद रख, मैं तुझ से अभी भी प्रेम करता हूं और तुझ से प्रेम करना कभी नहीं छोडूंगा।''

3. *यीशु से आंखें मिलने पर पतरस ने अपने पाप को पूरे अधकार और पूरी त्रासदी में देखा।* यीशु की आंखों में देखते हुए पतरस के उस अंतर को देखने की कल्पना कौन कर सकता है! पापी पतरस निष्पाप यीशु के चेहरे को देख रहा था! इनकार की ताज़ा ताज़ा बदबू से थका दोषी व्यक्ति पतरस, परमेश्वर के पुत्र यीशु के चेहरे में देख रहा था, जो हर व्यक्ति के दोष को सहमें जा रहा था!

पतरस ने इस अंतर को पहले देखा था। लूका 5 में बहुत सी मछलियों के पकड़े जाने के चमत्कार के बाद, यीशु के परमेश्वर होने की सच्चाई ने उसे प्रभावित किया था। तैरकर किनारे पर आने के बाद, वह चिल्ला उठा था, ''हे प्रभु मेरे पास से जा क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं'' (लूका 5:8)। पाप के यीशु के पवित्र स्वभाव के सामने आने पर कुरूपता में स्पष्ट रूप से घिनौना, भ्रष्ट उद्देश्यों वाला और घातक परिणामों वाला दिखाई देता है।

निष्कर्ष: थोड़ा भी संवेदनशील व्यक्ति यीशु के चेहरे में देखकर पहले जैसा नहीं रह सकता। यीशु की निरोल, करुणा से भरी और सब कुछ जानने वाली आंखें हमें ढूंढ़कर, दोषी ठहराती हैं, चूर-चूर करती हैं और परमेश्वर के प्रेम की ओर खींचती हैं।

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 26:2-5 और लूका 22:1, 2 में हैं। [2]पुराने नियम में ''अखमीरी रोटी का पर्व'' इस पूरे काल को दिया गया नाम था (देखें निर्गमन 12:15-20; लैव्य. 23:4-8; गिनती 28:16-25; व्यव. 16:1-8)। [3]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस,* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1975), 554. [4]जोसेफ़स ने लिखा कि बलिदान 256,500 तक पहुंच जाते थे और मेमने लाने वाले लोगों की संख्या 27,00,200 हो जाती थी (जोसेफ़स *वार्स* 6.9.3 [424-25]; *एंटिक्विटीज़* 17.9.3 [214].) जोसेफ़स पर बढ़ा चढ़ाकर कहने का आरोप लगाया गया है, परन्तु कब और कितना यह साबित कर पाना कठिन है। [5]यरूशलेम से मोदीन की ओर कहीं से भी, चाहे वह किसी भी दिशा में हो, ''लम्बा सफ़र'' कहा जाता था (मिशना *पेसाहीम* 9.2; बेबीलोन ताल्मुड *पेसाचीम* 93ख)। [6]समानांतर विवरण मत्ती 26:6-13 और यूहन्ना 12:1-8 में दिए गए हैं। [7]ऐल्डर पलिनी ने कहा, ''सेंट में इत्र का सबसे अधिक महत्व है'' (पलिनी *नैचुरल हिस्टरी* 12.26 [42])। उसने यह भी कहा कि ''लेप [सेंट] को रखने की सबसे अच्छी जगह संगमरमर की डिब्बियां हैं'' (पलिनी *नैचुरल हिस्टरी* 13.3 [19]। [8]हैंड्रिक्सन, 558. [9]पलिनी ने कहा कि सेंट के साथ पांवों का अभिषेक करना भी अत्यधिक विलासिता का कार्य होगा। परन्तु मरियम ने यही किया (यूहन्ना 12:23)। (पलिनी *नैचुरल हिस्टरी* 13.4 [22].) [10]इसी प्रकार से, कइयों को मरियम मगदलीनी के यीशु को उसके जी उठने के बाद कब्र पर उसके लिपटने के कारण, यीशु के लिए मरियम मगदलीनी के प्रेम पर आश्चर्य होता है (देखें यूहन्ना 20:17)।

[11]दूसरों द्वारा दिए गए धन को सम्भालने में सावधानी के एक उदाहरण के लिए देखें 2 कुरिन्थियों 8:16-24. [12]जोसेफ़ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962), 70-71. [13]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द वियर्सबे बाइबल कॉमैंट्री: न्यू टैस्टामैंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 2007), 129. [14]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 342. जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मत्ती,* भाग 2, द लिविंग वर्ड कॉमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 142 में यही अनुमान दिया गया है। [15]आर. ए. कोल, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मरकुस: ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 209. [16]''सुसमाचार'' (εὐαγγέλιον, *euangelion*) शब्द सुसमाचार के दूसरे तीनों विवरणों में से किसी से भी अधिक मरकुस में मिलता है (देखें मरकुस 1:1, 14, 15; 8:35; 10:29; 13:10; 14:9; 16:15)। फिर भी चारों उस वचन को बताते हैं जो हमें उद्धार के साथ जोड़ता है, जो कि सुसमाचार संदेश का मुख्य विचार है। इस शब्द ''का अर्थ मूल में अच्छी ख़बर लाने का ईनाम और अंत में अच्छी ख़बर था। [नये नियम] में इस शब्द को मनुष्य के पाप क्षमा करके और उसे अपने साथ मिलाने की परमेश्वर की योजना के लिए इस्तेमाल होता है।'' (*द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963], 318 में मेरिल सी. टेनी ''गॉस्पल।'' पौलुस ने रोमियों में तथा कुरिन्थियों के नाम अपने पत्रों में इस शब्द का इस्तेमाल प्रमुखता से किया। [17]समानांतर विवरण मत्ती 26:14-16 और लूका 22:3-6 में दिए गए हैं। [18]भजन 69 LXX से लिया गया है; इब्रानी में थोड़ा अलग है परन्तु विचार वही है। [19]देखें मरकुस 7:21, 22; रोमियों 1:29; इफिसियों 5:3; कुलुस्सियों 3:5; इब्रानियों 13:4, 5. [20]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 643.

[21]समानांतर विवरण मत्ती 26:17-19 और लूका 22:7-13 में दिए गए हैं। [22]देखें निर्गमन 23:15; 34:18; व्यवस्थाविवरण 16:1. ''अबीब'' इस महीने का कनानी नाम था जबकि कि ''नीसान'' इसका बेबीलोनी नाम था। महीना हमारे कैलेंडर के मार्च/अप्रैल वाला है। (*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इंसाइलोपीडिया,* संशो. संस्क., सम्पा ज्योफ़री ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1979], 1:575-76 में डी. एफ़. मोर्गन, ''कैलेंडर।'') [23]देखें लूका 22:1. पर्व का उल्लेख जोसेफ़स *वार्स* 6.9.3 [421] में किया गया है। [24]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इंसाइक्लोपीडिया,* सम्पा. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं. 1939), 4:2258 में नाथान, आइज़क्स ''पासोवर।'' (आइज़क्स ने जर्मन विद्वान डेनियल चोलसन का हवाला दिया, *डास लेज़्ट पसहमल जेसु,* दूसरा संस्क. [सेंट पीटर्सबर्ग: एगर्स ऐंड कं., 1904], एन.पी.) को उद्धृत किया। [25]हैंड्रिक्सन, 568. [26]यहूदियों के फसह को मनाए जाने की यह जानकारी बार्कले, 349-50 से ली

गई। अधिक जानकारी के लिए देखें *अतिरिक्त अध्ययन के लिए: फसह का पर्व* page 46-48. [27]जे. डी. डग्लस, सम्पा, *द न्यू बाइबल डिक्शनरी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1962), 938 में आर. ए. स्टिवर्ट, ''पासोवर।'' [28]सामानांतर विवरण मत्ती 26:20-25; लूका 22:21-23; और यूहन्ना 13:21-26 में दिए गए हैं। [29]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिलीजेंट (मरकुस)*, न्यू टैस्टामैंट कॉमेंट्री (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 1987), 164. [30]वहीं।

[31]ऑस्कर कुलमैन, *द क्रिइस्टोलॉजी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट*, संशो. संस्क., सम्पा., अनु. शर्ली सी. गुथरी ऐंड चार्ल्स ए. एम. हॉल, द न्यू टैस्टामैंट लाइब्रेरी (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1963), 59. [32]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मत्ती-मरकुस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1955), 282. [33]समानांतर विवरण मत्ती 26:26-29 और लूका 22:15-20 में दिए गए हैं। [34]हैंड्रिक्सन, 574. [35]थेयर, 136. [36]बार्कले, 357. (महत्व नहीं दिया गया।) [37]वहीं। [38]समानांतर विवरण मत्ती 26:30-35; लूका 22:31-34, 39; और यूहन्ना 13:36-38; 18:1 में हैं। [39]देखें मत्ती 26:31; लूका 22:34; यूहन्ना 13:38. [40]तिमोथी केनरिक, *ऐन एक्सपोज़िशन आफ़ द हिस्टोरिकल राइटिंग्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट*, भाग 2 (बर्मिंघम: जे. बेल्चर ऐंड सन, 1807), 485.

[41]डोनल्ड जी. मिलर, *द लेमन'स बाइबल कॉमेंट्री*, भाग 18, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू लूका* (अटलांटा: जॉन नॉक्स प्रेस, 1959), 154. [42]समानांतर विवरण मत्ती 26:36-39 और लूका 22:40-44 में दिए गए हैं। [43]डूम ऑफ़ द रॉक मोरिय्याह पहाड़ पर स्थित यरूशलेम में इस्लामिक मस्जिद है, जहां किसी समय तीन यहूदी मन्दिर हुआ करते थे। [44]जोअन ई. टेलर, ''द गार्डन ऑफ गथसमनी: नॉट द प्लेस ऑफ़ जीज़स, अरेस्ट'' (बिब्लिकल आरक्योलोजिकल रिव्यू 21 जुलाई/अगस्त 1995): 31. [45]जोसेफ़स *वार्स* 5.12.4 [523]. [46]वहीं, 5.11.1 [451]. [47]विलियम बार्कले ने लिखा है कि यरूशलेम में बाग लगाने की अनुमति नहीं थी क्योंकि ''पवित्र नगर'' के दूषित हो जाने के डर के कारण, खाद डालने की अनुमति नहीं थी। (बार्कले, 360.) [48]एक्थेम्बियो (14:33) का मुख्य अर्थ ''आश्चर्य या आतंक में डालना'' है (थेयर, 195)। *अदेमोनियो* ''व्याकुल'' और ''मायूस'' दोनों अर्थात ''बेचैन होने'' का अर्थ देता है (थेयर, 11)। [49]14:34 में ''उदास'' के लिए शब्द *पेरिलुपोस* का अर्थ है *''बहुत उदास, अत्यधिक दुःखी''* (थेयर, 503)। [50]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 1230.

[51]यीशु के दुःख सहने के सार के रूप में नये नियम में यह शब्द केवल यही इस्तेमाल हुआ है। [52]थेयर, 10. [53]डॉ. विलियम स्ट्राउड के अनुसार, यीशु की मृत्यु ''मन की व्यथा के कारण दिल फट जाने'' से हुई (विलियम स्ट्राउड, *द फिज़िकल कॉज़ ऑफ़ द डेथ ऑफ़ क्राइस्ट, ऐंड इट्स रिलेशन टू द प्रिसिंप्लज़ ऐंड प्रेक्टिस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी* [न्यू यॉर्क: डी. एपलटन ऐंड कं., 1871], 85.) स्ट्राउड ने François Eudes de Mézeray, *Histoire De France*, अंक 3 से उद्धत किया (पैरिस: थिय्यरी. गिगनार्ड, Et Barbin, 1685), 306. [54]डॉ. स्नाइडर, ''ऑन सैंगुइनियस पर्सपिरेशन,'' *द लंदन मेडिकल गज़ट, ऑर जर्नल ऑफ़ प्रैक्टिकल मेडिसन,* एन.एस. अंक 7 (लंदन: लॉन्गमैन, ब्राउन, ग्रीन, ऐंड लॉन्गमैन्स, 1848): 953. [55]विलियम डी. एडवर्ड्स, वैस्ली जे. गेबेल, ऐंड फ्लोएड ई. होस्मर, ''ऑन द फिज़िकल डेथ ऑफ़ द क्राइस्ट,'' *जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन* 21 (मार्च 1986): 1456. [56]एंथनी ली ऐश, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू लूका*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कॉमेंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1973), 129. [57]जे. एस. लामार, *द न्यू टैस्टामैंट कॉमेंट्री*, अंक 2, *लूका* (एन.पी.: 1877; रिप्रिंट, डिलाईट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., एन.डी.), 261. [58]मैक्गर्वे ऐंड पैंडलटन, 686. [59]''अब्बा'' यीशु की मातृ भाषा अरामी का शब्द है, इस कारण स्पष्टता इसे हमारे स्वर्गीय ''पिता'' के लिए विशेष शब्द के रूप में यूनानी भाषा बोलने वाली कलीसिया द्वारा लिया गया। गलातियों 4:6 के शब्द के उपयोग में दिखाई गई निकटता के बजाय जोर हमारे ''पुत्र होने'' पर है। इसका अनुवाद ''डैडी'' इसके साथ न्याय नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं। (कोल, 219, एन. 1.) [60]बार्कले, 362. यदि हम परमेश्वर को ''पिता'' कह सकते हैं, तो सब कुछ सहा जा सकता है।

[61]रेमंड ई. ब्राउन, *द डेथ ऑफ़ द मसायाहः फ्रॉम गेथसमनी टू द ग्रेव*, अंक 1, द एंकर बाइबल रेफरेंस लाइब्रेरी (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1994), 173-74. [62]हैंड्रिक्सन, 588. [63]ऐलन ब्लैक, *मरकुस*, द कॉलेज प्रेस NIV कॉमेंट्री (जोपलिन, मिसोरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1995), 253. यह विचार इस दावे से अलग है कि ''अब्बा'' छोटे बच्चे द्वारा ''पिता'' को कहा जाने वाला शब्द था। [64]मैक्गर्वे ऐंड पैंडलटन, 687. [65]समानांतर विवरण मत्ती

26:40-46 ऐंड लूका 22:45, 46 में दिए गए हैं। [66]ब्लैक, 253. [67]हैंड्रिक्सन, 590. [68]''बिल चुका दिया गया'' अभिव्यक्ति में ''सामान्य जीवन में *apechei* के सबसे भप्रमाणित अर्थ को सुरक्षित रखा गया'' (ब्राउन, 209)। [69]यीशु का ''पापियों'' शब्द का इस्तेमाल (ἁμαρτωλός, *hamartōlos* से) यहां पर अविश्वासी अन्यजातियों के लिए सामान्य शब्द होगा। [70]देखें यूहन्ना 2:4; 7:30; 8:20; 12:23, 27; 13:1; 17:1.

[71]समानांतर विवरण मत्ती 26:47-56; लूका 22:47-53; और यूहन्ना 18:2-12. [72]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 690. [73]थेयर ने *xulon* का अर्थ ''लकड़ी के बने, शहतीर के रूप में जिससे किसी को भी लटकाया जाए सूली या क्रूस'' बताया है। (थेयर, 432.) [74]अनुवादों के ''रोमी'' शब्द डाल दिया (जैसा कि NASB में तिरछे किए गए शब्दों का पता चलता है - अनुवादक) (देखें मत्ती 27:27; मरकुस 15:16; यूहन्ना 18:3, 12)। [75]फोस्टर, 1237. [76]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 690. [77]एल. ए. स्टॉफ़र, *मरक़ुस,* ट्रुथ कॉमैंट्रीज़, गार्डियन ऑफ़ ट्रुथ फ़ाउंडेशन (बॉलिंग ग्रीन, कैंटकी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1999), 359. [78]बार्कले, 354. [79]NIV में इसका अनुवाद ''क्या में विद्रोह करवा रहा हूं?'' है (मत्ती 26:55; मरकुस 14:48; लूका 22:52), ब्लैक ने इसे ''अस्पष्ट अनुवाद'' कहा है क्योंकि सुसमाचार के विवरणों में यीशु द्वारा शब्द λῃστής (*lēstēs*) का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के हिंसक लोगों के लिए, किया गया है। (ब्लैक, 255-56.) [80]देखें मत्ती 21:26; 26:5; मरकुस 11:32; 12:12; 14:2; लूका 22:2.

[81]बार्कले, 364. [82]वहीं, 365. [83]कइयों ने सुझाव दिया है कि यीशु और प्रेरितों के अटारी वाले कमरे से निकलते ही मरकुस अपने घर से उनके पीछे-पीछे चला गया। यदि यहूदा वहां पर पहले से सिपाहियों को ले आया था तो मरकुस उनके पीछे-पीछे ही आ गया होगा। (वियर्सबे, *कॉमैंट्री,* 131; बार्कले, 365-66; मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 693.) [84]स्टॉफर, 361. [85]समानांतर विवरण मत्ती 26:57-61; लूका 22:54, 55, 66; और यूहन्ना 18:13-16 में हैं। [86]एक मकबरा जिसमें ''काइफ़ा'' का नाम था 1990 में मिला था। जब दक्षिण पूर्वी यरूशलेम में सड़क पर कर्मचारियों का एक दल काम कर रहा था। (जोसेफ एम. होल्डन ऐंड नॉरमन गिस्लर, द *पॉपुलर हैंडबुक ऑफ़ आर्कियोलोजी ऐंड द बाइबल* [यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 2013], 348-49.) [87]हैंड्रिक्सन, 604. [88]वहीं, 612. [89]ब्लैक, 258. [90]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 696.

[91]महासभा यहूदियों की सर्वोच्च अदालत थी। इसके सदस्यों में सदूकी (याजकीय वर्ग) फरीसी और शास्त्री (व्यवस्था के विशेषज्ञ) और दूसरे सम्मानित लोग होते थे, जिन्हें पुरनिये कहा जाता था। (बार्कले, 367.) [92]मिशना *सन्हेद्रिन* 4.1; 5.2; 6:1. [93]हैंड्रिक्सन, 607. [94]बार्कले, 368. [95]वियर्सबे, *कॉमैंट्री,* 131. [96]समानांतर विवरण मत्ती 26:62-64 में है। [97]ब्लैक, 68-69. [98]कॉल, 229. ये घटनाएं जोसेफ़स *एंटिक्विइटीज़* 14.4.3 [65-68]; *वार्स* 1.7.4 [148, 150] में दर्ज हैं। इब्रानियों 8:6, 13 में संकेत दिया गया है कि परमेश्वर ने बलिदान दिए जाने के यहूदी सिस्टम को पूरी तरह से बदल दिया। [99]समानांतर विवरण मत्ती 26:65-68 और लूका 22:63, 64, 71 मैं हैं। [100]समानांतर विवरण मत्ती 26:69-75; लूका 22:55-62; और यूहन्ना 18:17, 25-27 में हैं।

[101]कॉल, 231.[102]रोमी रात, सायं 6:00 बजे प्रात: 6:00 बजे चार घड़ियों में बांटा जाता था, जो सायं 9:00 बजे, आधी रात 12:00 बजे, प्रात: 3:00 बजे और प्रात: 6:00 को खत्म होती थी। हर पहरे के बदलने पर एक बिगुल बजता था। तीसरे पहर (प्रात: 3:00 बजे) के अंत में बजने वाले बिगुल *गलेसेनियुम* कहा जाता था जो कि ''मुर्गे की बांग'' के लिए लातीनी भाषा का शब्द है क्योंकि वास्तव में मुर्गा तभी बांग देना आरम्भ करता था। प्रात: 6:00 बिगुल के बजने को ''दूसरा मुर्गा'' कहा जाता था। (बार्कले, 371; केनरिक, 485-86.) [103]इन घटनाओं की हमारी जानकारी 200 ई. के लगभग लिखे गए दस्तावेज़ *मिशना* से मिलती है। इसमें *गेमारा* के साथ-साथ यहूदी परम्पराओं का संग्रह है जो ताल्मुड बन जाता है। चाहे यह पहली सदी से नहीं लिया गया परन्तु पहली सदी के निकट का ही है क्योंकि हमें बाइबल से बाहर के उपलब्ध स्रोतों से मिल सकता है। मिशना के एक भाग को ''पेसाहिम'' या ''फसह का पर्व'' कहा जाता है। मिशना में फसह के समारोह का वर्णन *पेसाहिम* 10.1-7 में दिया गया है और बार्कले में, बार्कले, 353-55 इसका अच्छा सार दिया गया है। [104]*क़िद्दुस* जिसे आम तौर पर फसह के भोज को मनाने के रब्बियों के आदेश माना जाता है, का अर्थ बेबीलोनियन ताल्मुड *पेसाचिम* 100क, एन. 5 में ''पवित्र किए जाने की प्रार्थना'' के रूप में दिया गया है। [105]बार्कले, 354. [106]वहीं। [107]मिशना *एबथ* के अनुसार तेरह वर्ष की आयु ''[आज्ञाओं को] पूरा करने'' के लिए ठहराया गया था, मिशना *एबोथ* 5.21. [108]*चरोसेथ* से, खजूर, अनार और अखरोट की बनी चटनी या सॉस है। यह उस मिट्टी को याद दिलाने के लिए था जिससे इस्राएली लोग मिस्र में ईंटे

बनाया करते थे। उस डंडी को दर्शाने के लिए जिससे ईंटे बनाई जाती थीं दालचीनी की डंडियों को *चरोसेथ* में रखा जाता था। [109]यीशु द्वारा की गई दु:ख सहने की भविष्यद्वाणियां मरकुस 8:31-33; 9:30-32; 10:32-34 में दिए गए हैं। समानांतर विवरणों के लिए देखें मत्ती 16:21; 17:22, 23; 20:17-19; लूका 9:22, 43, 44; 18:31-33. [110]देखें निर्गमन 12:18; लैव्यव्यवस्था 23:4, 5; गिनती 28:16; व्यवस्थाविवरण 16:1-6.

[111]''महासभा (Sanhedrin)'' यूनानी शब्द συνέδριον (*sunedrion*) के ताल्मुड की इब्रानी नकल है जिसका अर्थ ''सभा'' है। (*द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963], 751 में स्टिवन बरबास, ''सनहेड्रिम, सनहेड्रिन।'') [112]देखें यूहन्ना 11:49-53; 18:24; प्रेरितों 4:6. [113]जोसेफ़स *एंटिक्वुइटीज़* 18.2.2 [35]। [114]लूइस, 141. [115]देखें मत्ती 27:24; प्रेरितों 20:1; 21:34. जोसेफ़स ने लिखा है कि ''राजद्रोह'' होने के खतरे रहते थे और पर्व के समयों पर रोमियों और यहूदी सभा के द्वारा विशेष सावधानियां बरती जाती थीं। (जोसेफ़स *वार्स* 1.4.3 [88]; 2.12.2 [224]; *एंटिक्वुइटीज़* 17.9.3 [213-14].) [116]मैक्गार्वे ऐंड पैंडलटन, 643. [117]सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में संकेत मिलता है कि यीशु (1) ''बहुत अधीर'' (मरकुस 14:33; देखें मत्ती 26:37), (2) ''बहुत ... व्याकुल'' (मरकुस 14:33; देखें मत्ती 26:37), (3) ''बहुत उदास'' (मरकुस 14:34; देखें मत्ती 26:38), (4) ''यहां तक कि मरने पर'' था (मरकुस 14:34; देखें मत्ती 26:38), (5) ''व्याकुल होकर हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा'' (लूका 22:44), और (6) ''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बूंदों के समान पृथ्वी पर गिरा'' (लूका 22:44)। [118]जे. ओसवाल्ड सैंडर्स, *द इनकम्प्रेबल क्राइस्ट* (शिकागो: मूडी प्रेस, 1952), 144.